दक्ष®

10 मई 2022 को जारी नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर द्वारा आयोजित

A Complete Book for

No.1

ग्रेड-2nd शिक्षक भर्ती

(वरिष्ठ अध्यापक)

शिक्षा मनोविज्ञान

(Educational Psychology)

अनिवार्य प्रथम प्रश्न पत्र - Part-IV

डॉ. सुभाष यादव • डॉ. पंकज यादव • संतोष यादव

WWW.DAKSHBOOKS.COM

दक्ष®

100% Syllabus पर आधारित

Hin-Glish भाषा शैली

राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर द्वारा आयोजित

A Complete Book for

ग्रेड-2nd शिक्षक भर्ती

(वरिष्ठ अध्यापक)

शिक्षा मनोविज्ञान

(Educational Psychology)

अनिवार्य प्रथम प्रश्न पत्र - Part-IV

NCERT, RBSE एवं प्रमाणिक पुस्तकों पर आधारित

- ज्यादा से ज्यादा वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का समावेश
- विगत वर्षों की प्रतियोगी परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्नों का समावेश
- प्रत्येक यूनिट को सिलेबस अनुसार वर्गीकृत करके टॉपिक का विवरण
- राजस्थान एवं अन्य राज्यों में हुई प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रश्नों का यूनिटवार समावेश

विगत वर्षों के 'शिक्षा मनोविज्ञान' के प्रश्नोत्तर व्याख्या सहित

लेखकगण

डॉ. सुभाष यादव
Ph.D., NET/SET
सहायक आचार्य (मनोविज्ञान)

डॉ. पंकज यादव
विशेषज्ञ - मनोविज्ञान (M.A., Ph.D.)

संतोष यादव
वरिष्ठ अध्यापिका

दक्ष प्रकाशन
(A Unit of College Book Centre)
WWW.DAKSHBOOKS.COM

प्रकाशक :

परितोष वर्धन जैन

कॉलेज बुक सेन्टर

- A-19, सेठी कॉलोनी,
  जयपुर-302 004

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

सादर समर्पण

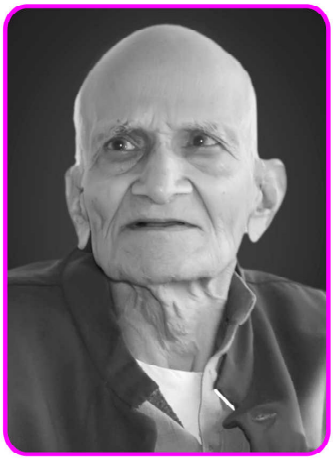

स्व. बनवारी स्वरूप जैन 'बाऊजी'
लेखक एवं प्रकाशक, जयपुर

लेजर टाईपसैटिंग :

पूजा एण्टरप्राईजेज़
जयपुर

मुद्रक :
के.डी. प्रिन्टर्स
जयपुर।

अमूल्य सुझावों के लिए मार्गदर्शकों का आभार

श्री एस.आर यादव (I.F.S.), श्री जगदीश प्रसाद यादव (पूर्व प्रधानाचार्य), श्री धर्मेन्द्र कुमार यादव (कम्प्यूटर विशेषज्ञ), श्री मनमोहन सिंह (RES), डॉ. सुरज्ञान सिंह (RAS), श्री कुलदीप यादव (Geography), श्री अशोक सैनी (शौर्य क्लासेज, उदयपुर), श्री रमेश जी, श्री रामलाल जी (अनुपम क्लासेज, रींगस), श्री संयोग जी भावरिया (श्री विनायक क्लासेज, श्रीमाधोपुर), श्री अनुज यादव (MGI), श्री आनन्द चौधरी (GK), श्री पी.सी. यादव (Geography), श्री मीठालाल जी (Reasoning), श्री नारायण यादव (प्रधानाध्यापक), श्री अमित कटारिया (J.En.), श्री सुरेन्द्र यादव (RES), श्री मुकेश कुमार (सॉलिड साइंस), श्री अरविंद कटारिया (KSG), डॉ. मुकेश जाँगिड (सहायक आचार्य), श्री नरसी यादव (गणित), श्री महेश बाडीगर (वरिष्ठ अध्यापक), श्री लक्ष्मीकांत त्रिवेदी (विज्ञान), श्री प्रदीप शर्मा (एक्सीलैंट क्लासेज), श्री बलवीर शेरावत, श्री बनवारी शेरावत (आदर्श कैरियर पाइंट), श्री राम यादव (CS), डॉ. राकेश कपूरिया (सहायक आचार्य), डॉ. चन्द्रदीप नन्दलाल (सहायक आचार्य), श्री बलबीर यादव (भूगोल), श्री भोजराज कपूरिया (RES), श्री बजरंग रोलानिया (फ्यूचर एकेडमी), श्री राजेन्द्र लाम्बा (कैमेस्ट्री), श्री महेन्द्र कुमार (इतिहास), श्री रोहिताश्व जाट (वरिष्ठ अध्यापक), श्री लोकेश बाडीगर (व्याख्याता)

Special Thanks to : Dharmendra Kumar Yadav
(Computer Expert)

Code No.: D-612

- प्रकाशक की अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी अंश का किसी भी प्रणाली के सहारे पुन:उत्पत्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनीकी तरीके (इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फॉटोकॉपी, रिकॉडिंग, डिजिटल, वेब) के माध्यम से अथवा इस पुस्तक का नाम, टाईटल, चित्र, रेखाचित्र, नक्शे, डिजाईन, कवर डिजाईन, सेंटिंग, शिक्षण-सामग्री, विषय-वस्तु पूर्ण या आंशिक रूप से किसी भी भाषा में हूबहू या तोड़-मरोड़ कर या अदल-बदल कर प्रकाशन या वितरण नहीं किया जा सकता है। इस पुस्तक के प्रतिलिप्याधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
- पुस्तक का कम्पोजिंग कार्य कम्प्यूटर द्वारा कराया गया है, पुस्तक के लेखन व प्रकाशन कार्य में लेखक, प्रूफ रीडर, कम्प्यूटर ऑपरेटर एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरतने के बावजूद भी अधूरी या पुरानी जानकारी का होना/कुछ ग़लतियों/कमियों का रह जाना सम्भव है, जिसके लिए पुस्तक प्रकाशन से जुड़े मुद्रक, लेखक एवं प्रकाशक उत्तरदायी नहीं होंगे। पाठकों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।
- सभी विवादों का न्यायक्षेत्र जयपुर (राज.) होगा।

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION, AJMER

SYLLABUS

for Examination for the post of

SR.TEACHER (GRADE-II)

SECONDARY EDUCATION DEPARTMENT

PAPER-I

Part-IV EDUCATIONAL PSYCHOLOGY (शिक्षा मनोविज्ञान)

- **Educational Psychology** – its meaning, scope and implications for teacher in classroom situations.
  शिक्षा मनोविज्ञान—अर्थ, क्षेत्र, एवं कक्षा-कक्ष परिस्थितियों में शिक्षक के लिए निहितार्थ (उपयोगिता)
- **Development of Learner** – concept of growth and development, physical, emotional, cognitive, moral and social development.
  अधिगमकर्ता का विकास—वृद्धि एवं विकास का संप्रत्यय, शारीरिक, संवेगात्मक, संज्ञानात्मक, नैतिक एवं सामाजिक विकास।
- **Learning** – its meaning and types, different theories of learning and implications for a teacher, transfer of learning, factors affecting learning, constructivist learning.
  अधिगम—अर्थ एवं प्रकार, अधिगम के विभिन्न सिद्धान्त एवं शिक्षक के लिए उपयोगिता, अधिगम का स्थानान्तरण, अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक, निर्मितावादी अधिगम।
- **Personality** – meaning, theories and measurement, adjustment and its mechanism, maladjustment.
  व्यक्तित्व—अर्थ, सिद्धान्त एवं मापन, समायोजन एवं इसकी युक्तियाँ, कुसमायोजन।
- **Intelligence and Creativity** – meaning, theories and measurement, role in learning, emotional intelligence- concept and practices.
  बुद्धि एवं सृजनात्मकता—अर्थ, सिद्धान्त एवं मापन, अधिगम में भूमिका, संवेगात्मक बुद्धि-संप्रत्यय एवं क्रियाविधि उपयोग।
- **Motivation** – meaning and role in the process of learning, achievement motivation.
  अभिप्रेरणा—अर्थ एवं अधिगम में भूमिका, उपलब्धि अभिप्रेरणा।
- **Individual Differences** – meaning and sources, education of children with special needs – Gifted, slow learners and delinquent.
  वैयक्तिक विभिन्नताएँ—अर्थ एवं स्त्रोत (आधार), विशेष आवश्यकता वाले बालकों की शिक्षा - प्रतिभाशाली बालक, धीमीगति से सीखने वाले एवं बाल अपराधी।
- **Concept and Implications in Education of** – Self concept, attitudes, interest & habits, aptitude and social skills.
  आत्म-संप्रत्यय, अभिवृत्ति, रुचि एवं आदतें, अभिक्षमता एवं सामाजिक कौशल – संप्रत्यय एवं शिक्षा में निहितार्थ (उपयोगिता)।

For the competitive examination for the post of Senior Teacher:-

1. The question paper-I will carry maximum 200 marks.
2. Duration of question paper will be **two hours.**
3. The question paper will carry 100 questions of multiple choices.
4. Paper shall include following subjects:-
   (i) Geographical, Historical, Cultural and General Knowledge of Rajasthan
   (ii) Current Affairs of Rajasthan
   (iii) General Knowledge of World and India
   (iv) Educational Psychology
5. Negative marking shall be applicable in the evaluation of answer. For every wrong answer one third of the marks prescribed for that particular question shall be deducted.

विगत परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्नों का अध्यायवार वर्गीकरण

अध्याय नं.	अध्याय का नाम	वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा (सं.शि.) 2019-ग्रुप-A	वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा (सं.शि.) 2019-ग्रुप-B	वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2018-ग्रुप-A	वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2018-ग्रुप-B	वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2017-ग्रुप-A	वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2017-ग्रुप-B
1	मनोविज्ञान से परिचय [Introduction to Psychology]	2	–	1	–	1	2
2	शिक्षा मनोविज्ञान [Educational Psychology]	1	–	2	–	1	1
3	अधिगमकर्ता का विकास [Development of Learner]	4	2	3	2	3	1
4	अधिगम/सीखना [Learning]	4	5	3	5	3	3
5	व्यक्तित्व [Personality]	2	3	2	2	2	2
6	बुद्धि [Intelligence]	3	2	3	4	2	4
7	सृजनात्मकता/सृजनशीलता [Creativity]	–	2	1	1	2	1
8	सांवेगिक/संवेगात्मक बुद्धि [Emotional Intelligence]	–	1	–	–	1	–
9	अभिप्रेरणा/प्रेरणा [Motivation]	2	1	2	2	1	1
10	मानसिक स्वास्थ्य, समायोजन एवं कुसमायोजन [Mental Health, Adjustment & Maladjustment]	1	1	1	1	1	2
11	वैयक्तिक विभिन्नताएँ [Individual Differences]	–	1	–	–	–	1
12	विशेष आवश्यकता वाले बालक [Children with Special Needs]	–	1	1	1	2	–
13	आत्म-सम्प्रत्यय, अभिवृत्ति, अभिरुचि, आदतें, सामाजिक-कौशल एवं अभिक्षमता [Self-Concept, Attitude, Interest, Habits, Social-Skills & Aptitude]	1	1	1	1	1	2
	कुल [Total]	20	20	20	20	20	20

अनुक्रमणिका

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

1 मनोविज्ञान से परिचय
[Introduction to Psychology] 1
- ❖ मनोविज्ञान का क्रमिक विकास (Successive Development of Psychology) 1
- ❖ मनोविज्ञान का आधुनिक स्वरूप तथा परिभाषाएँ (Modern Perspective & Definitions of Psychology) 2
- ❖ मनोविज्ञान के लक्ष्य (Goals of Psychology) 3
- ❖ मनोविज्ञान के सम्प्रदाय (Schools of Psychology) 3
- ❖ मनोविज्ञान की शाखाएँ (Branches of Psychology) 4
- ❖ महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर 5

2 शिक्षा मनोविज्ञान
[Educational Psychology] 7
- ❖ शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ एवं परिभाषाएँ (Meaning and Definitions of Educational Psychology) 7
- ❖ शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति (Nature of Educational Psychology) 8
- ❖ शिक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र (Scope of Educational Psychology) 8
- ❖ शिक्षा मनोविज्ञान की उपयोगिता एवं महत्त्व (Utility & Importance of Educational Psychology) 9
- ❖ अध्यापक के लिए शिक्षा मनोविज्ञान की उपयोगिता, महत्त्व एवं निहितार्थ (Utility, Importance & Implications of Educational Psychology for a Teacher) 10
- ❖ शिक्षा मनोविज्ञान की अध्ययन विधियाँ (Study Methods of Educational Psychology) 11
- ❖ प्रमुख विचारक, मनोवैज्ञानिक तथा उनका शिक्षा में योगदान (Prominent Thinkers, Psychologists & Their Contribution in Education) 13
- ❖ महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर 15

3 अधिगमकर्ता का विकास
[Development of Learner] 18
- ❖ विकास का अर्थ एवं परिभाषाएँ (Meaning and Definitions of Development) 18

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

❖ विकास की विशेषताएँ
(Characteristics of Development) 19
❖ वृद्धि एवं विकास में अंतर
(Difference between Growth and Development) 20
❖ परिपक्वता
(Maturation) 21
❖ विकास को प्रभावित करने वाले कारक
(Factors Influencing Development) 21
❖ प्रकृति एवं पोषण विवाद
(Nature and Nurture Debate) 25
❖ विकास के नियम/सिद्धांत
(Principles of Development) 25
❖ विकास के प्रकार एवं आयाम
(Types and Dimensions of Development) 28
I. शारीरिक विकास
(Physical Development) 28
II. संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development)
1. जीन पियाजे का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत
(Jean Piaget's theory of Cognitive Development) 31
2. जीरोम ब्रूनर का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत
(Jerome Bruner's Cognitive Development Theory) 36
3. लेव वाइगोत्सकी का संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत
(Cognitive Development Theory of Lev Vygotsky) . 37
✧ संप्रत्यय विकास (Concept Development) 38
III. भाषा विकास
(Language Development) 39
IV. सामाजिक विकास
(Social Development) 41
एरिक-एरिक्सन का मनोसामाजिक विकास सिद्धांत
(Psychosocial Development Theory of Erik Erikson) 42
कूले का आत्मदर्पण सिद्धांत
(Cooley's Looking Glass Self Theory) 44
जी.एच. मीड का सामाजीकरण सिद्धांत
(G.H. Mead's Theory of Socialization) 45
ब्रोनफेनब्रेनर का पारिस्थितिकी तंत्र सिद्धांत
(Ecological System Theory of Bronfen Brenner) 45
V. नैतिक विकास
(Moral Development) 46
जीन पियाजे का नैतिक विकास सिद्धान्त
(Moral Development Theory of Jean Piaget) 47
लोरेंस कोहलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धांत
(Lawrence Kohelberg's Theory of Moral Development) 48

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

VI. संवेगात्मक विकास
(Emotional Development) 49
विकासात्मक कार्य 51
(Developemental Task) 51
❖ विकास की अवस्थाएँ 51
(Stages of Development) 51
❖ महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर 55

4 अधिगम/सीखना
[Learning] 68
❖ अधिगम : अर्थ एवं परिभाषाएँ
(Learning : Meaning and Definition) 68
❖ अधिगम के अनुक्षेत्र
(Domains of Learning) 69
❖ अधिगम के प्रकार
(Types of learning) 70
❖ अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक
(Factors Affecting Learning) 71
❖ सीखने/अधिगम की विधियाँ
(Methods of learning) 72
❖ अधिगम के सिद्धांत
(Theories of learning) 72
✧ ई.एल. थॉर्नडाइक का अधिगम सिद्धांत
(E.L. Thorndikc's Learning Theory) 73
✧ आई.पी. पॉवलव का अधिगम सिद्धांत
(Learning theory of I.P. Pavlov) 74
✧ जे.बी. वॉटसन का अनुबंधन सम्बन्धी प्रयोग
(Conditioning Related Experiment of J.B. Watson) .. 77
✧ बी.एफ. स्कीनर का अधिगम सिद्धांत
(Learning Theory of B.F. Skinner) 77
✧ पुनर्बलन (Reinforcement) 78
✧ क्लार्क हल का अधिगम सिद्धांत (Clark Hull's Learning Theory) 81
✧ एडविन रे गुथरी का अधिगम सिद्धांत
(Learning Theory of Edwin Ray Guthrie) 82
✧ कोहलर का अधिगम सिद्धांत (Kohler's Learning Theory) 83
✧ लेविन का अधिगम सिद्धांत (Lewin's Theory of Learning) 84
✧ टॉलमैन का अधिगम सिद्धांत (Tolman's Learning Theory) 85
✧ अल्बर्ट बंडूरा का अधिगम सिद्धांत
(Learning Theory of Albert Bandura) 88
✧ जीरोम ब्रूनर का संज्ञानात्मक अधिगम सिद्धांत
(Bruner's Theory of Cognitive Learning) 89

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

✧ डेविड आसूबेल का संज्ञानात्मक अधिगम सिद्धांत
(David Ausubel's Theory of Cognitive Learning) 90
✧ अधिगम के सूचना प्रक्रमण/प्रसंस्करण सिद्धांत/प्रक्रियाकरण सिद्धांत
(Information Processing Theories of Learning) 91
✧ त्रिचरणीय सूचना प्रक्रमण सिद्धांत
(Three Stage Information Processing Theory) 92
✧ प्रसंस्करण/प्रक्रमण/प्रक्रियाकरण स्तर सिद्धांत
(Processing Level Theory) 92
✧ अधिगम के निर्मितवादी/रचनावादी/ज्ञान संरचनावादी सिद्धांत
(Constructivism Theories of Learning) 93
✧ अधिगम के मानवतावादी सिद्धांत
(Humanistic Theories of Learning) 94
I. अधिगम का आवश्यकता पदानुक्रमिकी सिद्धांत
(Need Hierarchy Theory of Learning) 95
II. अनुभवजन्य अधिगम सिद्धांत
(Experiential Learning Theory) 95
✧ अधिगम का पदानुक्रमिकी सिद्धांत
(Hierarchical Theory of Learning) 96

❖ अधिगम स्थानांतरण
(Transfer of Learning) 97
✧ अधिगम स्थानांतरण के सिद्धांत (Theories of Transfer of Learning) .99

❖ अधिगम वक्र
(Learning Curve) 100

❖ अधिगम में पठार
(Plateau in Learning) 101

❖ महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर 101

5 व्यक्तित्व
[Personality] 109

❖ व्यक्तित्व : अर्थ एवं परिभाषाएँ
(Personality : Meaning and Definitions) 109

❖ व्यक्तित्व की विशेषताएँ
(Characteristics of Personality) 110

❖ व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक
(Factors Affecting Personality) 110

❖ व्यक्तित्व अध्ययन के प्रमुख उपागम एवं सिद्धांत
(Important Approaches and Theories of Personality) 110

I. प्रारूप/प्रकार उपागम सिद्धांत
(Type Approach Theories) 111

1. हिप्पोक्रेटस का सिद्धान्त (Theory of Hippocrates) 111
2. शारीरिक गुणों के आधार पर (On the Basis of Physique) 111

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

3. मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर
(On the Basis of Psychological Characteristics) 112
(i) कार्ल युंग का सिद्धांत (Theory of Carl Jung) 112
(ii) स्प्रेंजर/स्प्रेंगर का सिद्धान्त (Theory of Spranger) 112
(iii) टाइप-A तथा टाइप-B सिद्धांत
(Theory of Type-A and Type-B) 112
(iv) विचार शक्ति के आधार पर थॉर्नडाइक का व्यक्तित्व सिद्धान्त
(Thorndike's Personality Theory on the Basis of Thoughts Potential) 113
4. भारतीय दृष्टिकोण के आधार पर व्यक्तित्व का वर्गीकरण
(Personality Classification on the Basis of Indian Values) 113

II. शीलगुण/विशेषक उपागम सिद्धान्त
(Trait Approach Theories) 113
1. ऑलपोर्ट का शीलगुण सिद्धांत (Allport's Trait Theory) 113
2. कैटल का सिद्धांत (Cattell's Theory) 114
3. व्यक्तित्व का वृहत पाँच कारक मॉडल
(Big Five Factor Model of Personality) 114
4. आइजेंक का सिद्धांत (Eysenck's Theory) 115

III. व्यक्तित्व का मनोविश्लेषण/मनोगतिक सिद्धांत
(Psychoanalytic/Psychodynamic Theory of Personality)115

❖ नव फ्रॉयडवादी/पश्च फ्रायडवादी
(Neo-Freudian/Post-Freudian) 117
❖ व्यक्तित्व का मापन/मूल्यांकन
(Measurement/Evaluation of Personality) 118
❖ महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर 122

6 बुद्धि
[Intelligence] 127
❖ बुद्धि : अर्थ एवं परिभाषाएँ
(Intelligence : Meaning and Definitions) 127
✧ बुद्धि की विशेषताएँ (Characteristics of Intelligence) 128
❖ बुद्धि के प्रकार
(Types of Intelligence) 128
✧ थॉर्नडाइक के अनुसार बुद्धि के प्रकार
(Types of Intelligence According to Thorndike) 128
✧ वर्नन के अनुसार बुद्धि के प्रकार
(Types of Intelligence According to Vernon) 128
✧ गैरट के अनुसार बुद्धि के प्रकार
(Types of Intelligence According to Garret) 129
✧ फ्रीमैन के अनुसार बुद्धि के प्रकार
(Types of Intelligence According to Freeman) 129
❖ बुद्धि के सिद्धांत
(Theories of Intelligence) 129

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

I. बुद्धि के कारकीय सिद्धांत (Factorial Theories of Intelligence) ... 129
1. शक्ति मनोविज्ञान सिद्धांत (Power Psychology Theory) 130
2. बुद्धि का एक कारकीय सिद्धांत (Uni-factor Theory of Intelligence) 130
3. बुद्धि का द्विकारक सिद्धांत/द्वितत्व सिद्धांत (Two factor theory of Intelligence) 130
4. बुद्धि का बहुकारक सिद्धांत (Multi Factor Theory of Intelligence) 131
5. बुद्धि संरचना सिद्धांत/बुद्धि का त्रिविमीय सिद्धांत (Structure of Intellect Theory/Three Dimensional Theory) 131
6. बुद्धि का समूह कारक/प्राथमिक मानसिक योग्यताओं का सिद्धांत (Group Factor/Primary Mental Abilities (PMA) Theory of Intelligence) 132
7. बहुबुद्धि सिद्धांत (Multiple Intelligence Theory) 133
8. तरल बुद्धि एवं ठोस बुद्धि का सिद्धांत (Theory of fluid Intelligence & Crystallised Intelligence) 135
9. बुद्धि का प्रतिदर्श सिद्धांत/सैम्पलिंग सिद्धांत (Sampling Theory of Intelligence) 135
10. बुद्धि का पदानुक्रमिक सिद्धांत (Hierachical Theory of Intelligence) 136

II. बुद्धि के प्रक्रिया-प्रधान सिद्धांत (Process Oriented Theories of Intelligence) 136
1. बुद्धि का त्रिचापीय/त्रितंत्र सिद्धांत (Triarchic Theory of Intelligence) 136
2. आर्थर जेंसन का बुद्धि सिद्धांत (Arther Jensen's theory of Intelligence) 137
3. बुद्धि का PASS मॉडल 137

❖ बुद्धि का मापन (Measurement of Intelligence) 138
❖ बुद्धिलब्धि (Intelligence Quotient-I.Q.) 139
❖ बुद्धि परीक्षण (Intelligence Test) 139
❖ प्रमुख भारतीय बुद्धि परीक्षण (Major Indian Intelligence Test) 142
❖ महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर 143

7 सृजनात्मकता/सृजनशीलता [Creativity] 147
❖ सृजनात्मकता : अर्थ एवं परिभाषाएँ (Creativity : Meaning and Definitions) 147

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

- ❖ सृजनात्मकता के तत्त्व (Components of Creativity) 147
- ❖ सृजनात्मकता/सृजनात्मक चिंतन की अवस्थाएँ (Stage of Creativity/Creativity Thinking) 148
- ❖ सृजनात्मकता एवं बुद्धि (Creativity and Intelligence) 149
- ❖ सृजनात्मकता को बढ़ाने के उपाय (Methods of Enhancing Creativity) 150
- ❖ सृजनात्मकता/सृजनशीलता का मापन (Measurement of Creativity) 150
- ❖ सृजनात्मकता मापन के भारतीय परीक्षण (Indian Test to Measure Creativity) 151
- ❖ महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर 152

8 सांवेगिक/संवेगात्मक बुद्धि [Emotional Intelligence] 154

- ❖ सांवेगिक बुद्धि : अर्थ एवं परिभाषाए (Emotional Intelligence : Meaning and Definitions) 154
- ❖ संवेगात्मक बुद्धि के प्रतिरूप/मॉडल (Models of Emotional Intelligence) 154
- ❖ संवेगात्मक/सांवेगिक बुद्धि के तत्त्व (Components of Emotional Intelligence) 156
- ❖ संवेगात्मक बुद्धि की उपयोगिता एवं महत्त्व (Utility and Importance of Emotional Intelligence) 156
- ❖ संवेगात्मक बुद्धि को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Influencing Emotional Intelligence) 157
- ❖ संवेगात्मक बुद्धि का मापन (Measurement of Emotional Intelligence) 157
- ❖ महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर 157

9 अभिप्रेरणा/प्रेरणा [Motivation] 159

- ❖ अभिप्रेरणा : अर्थ एवं परिभाषाएँ (Motivation : Meaning and Definitions) 159
- ❖ अभिप्रेरणात्मक चक्र (Motivational Cycle) 159
- ❖ अभिप्रेरक (Motives) 161
- ❖ अभिप्रेरणा के सिद्धांत (Theories of Motivation) 162
  1. मूल प्रवृत्ति सिद्धांत (Instinct Theory) 162
  2. प्रणोद सिद्धांत/दाब सिद्धांत (Drive Theory/Push Theory) 162

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

3. प्रोत्साहन सिद्धांत/प्रत्याशा सिद्धांत/खिंचाव सिद्धांत (Expectancy Theory/Pull Theory) 163
4. आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत (Need-Hierarchey Theory) 163
5. विरोधी प्रक्रिया सिद्धांत (Opponent-Process Theory) 164
6. आदर्श स्तर सिद्धांत/उत्तेजना सिद्धांत (Optimal Level Theory) 164
7. कार्य-प्रेरणा का द्वितत्व सिद्धांत/अभिप्रेरणा स्वास्थ्य विचारधारा (Two Factor Theory of Work Motivation) 164
8. वेक्टर-कर्षण शक्ति सिद्धांत (Vector-Valence Theory) 164
9. लक्ष्य-निर्धारण सिद्धांत (Goal Setting Theory) 164
10. आचारशास्त्रीय सिद्धांत (Ethological Theory) 165
11. मनोविश्लेषणवादी सिद्धांत (Psychoanalytic Theory) 165
12. उपलब्धि-अभिप्रेरणा के सिद्धांत (Theoris of Achievement Motivation) 165

❖ अभिप्रेरणा का मापन (Measurment of Motivation) 166
❖ अधिगम में अभिप्रेरणा की भूमिका (Role of Motivation in the Learning) 166
❖ कक्षा परिस्थितियों में अभिप्रेरित करने के उपाय (Techniques of Motivation to the Class Room Situation) ... 166
❖ महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर 167

10 मानसिक स्वास्थ्य, समायोजन एवं कुसमायोजन [Mental Health, Adjustment & Maladjustment] 171

❖ मानसिक स्वास्थ्य : अर्थ एवं परिभाषाएँ (Mental Health : Meaning and Definitions) 171
❖ मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Mental Health) 172
❖ समायोजन (Adjustment) 172
❖ कुसमायोजन (Maladjustment) 173
❖ समायोजन से सम्बन्धित समस्याए (Problems Related to Adjustment) 173
1. कुंठा (Frustration) 173
2. मानसिक संघर्ष/अंत: द्वंद्व/अन्तर्द्वंद्व (Conflicts) 173
3. दुश्चिंता (Anxiety) 174
4. तनाव (Tension) 174
5. दबाव/प्रतिबल (Stress) 174

❖ कुसमायोजन से बचने के उपाय (Strategies to Avoid Maladjustment) 174

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

❖ समायोजन प्रक्रिया में अध्यापकों का योगदान समायोजन स्थापित करने में अध्यापकों का योगदान 176
❖ मानसिक स्वास्थ्य का संवर्द्धन (Mental Health Improvement) 176
❖ महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर 177

11 वैयक्तिक विभिन्नताएँ [Individual Differences] 181

❖ वैयक्तिक विभिन्नताएँ : अर्थ एवं परिभाषाएँ (Individual Differences : Meaning and Definitions) 181
❖ वैयक्तिक विभिन्नता के प्रकार (Types of Individual Differences) 181
❖ वैयक्तिक विभिन्नता के कारण (Causes of Individual Differences) 182
❖ वैयक्तिक विभिन्नताओं के अध्ययन/मापन की विधिया (Measurement of Individual Differences) 183
❖ वैयक्तिक विभिन्नता के अध्ययन का शिक्षा में महत्त्व (Educational Implications of Individual Differences) 183
❖ महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर 183

12 विशेष आवश्यकता वाले बालक [Children with Special Needs] 185

❖ अर्थ एवं परिभाषाएँ (Meaning and Definitions) 185
❖ विशेष आवश्यकता वाले बालकों/विशिष्ट बालकों की विशेषताए (Characteristics of Special Need Children/ Exceptional Children) 185
❖ विशेष आवश्यकता वाले/विशिष्ट बालकों के प्रकार (Types of Children with Special Needs/Exceptional Children) 186

I. बौद्धिक एवं शैक्षिक दृष्टि से विशिष्ट बालक (Exceptional Children on the Basis of Intelligence and Education) 186
1. प्रतिभाशाली बालक (Gifted Children) 186
2. सृजनात्मक बालक (Creative Children) 187
3. पिछड़े बालक (Backward Children) 187
4. मंद बुद्धि बालक/मानसिक रूप से विमंदित बालक (Mentally Retarded Children) 188
5. अधिगम असमर्थता से ग्रसित बालक (Children with Learning Disabilities) 191

II. शारीरिक दृष्टि से विशिष्ट बालक (Exceptional Children on the Basis of Physique) 192

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

1. दृष्टि दोषों से युक्त बालक
(Visually Impaired Children) 193
2. श्रवण दोषों से युक्त बालक
(Hearing Impaired Children) 193
3. अस्थि दोषों से युक्त बालक
(Orthopaedically Handicapped Children) 193
4. वाक्/वाणी दोषों से युक्त बालक
(Children with Speech Defects) 194
5. प्रत्यक्षण क्षमता से सम्बन्धित दोषों से युक्त बालक
(Children with Perceptual Defects) 194

III. समस्यात्मक बालक
(Problematic Children) 194
1. सामाजिक दृष्टि से कुसमायोजित बालक
(Socially Maladjusted Children) 195
2. संवेगात्मक रूप से असंतुलित बालक
(Emotionally Imbalanced Children) 195
3. अपराधी बालक/बाल अपराधी
(Delinquency) 195

❖ महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर 195

13 आत्म-सम्प्रत्यय, अभिवृत्ति, अभिरुचि, आदतें, सामाजिक-कौशल एवं अभिक्षमता
[Self-Concept, Attitude, Interest, Habits, Social-Skills & Aptitude] 201

❖ आत्म-सम्प्रत्यय
(Self-Concept) 201
❖ आत्म-सम्प्रत्यय के प्रकार
(Types of Self-Concept) 201
❖ अभिवृत्ति/मनोवृत्ति
(Attitude) 202
❖ अभिवृत्ति/मनोवृत्ति का मापन
(Measurement of Attitudes) 205
❖ रुचि का मापन/अभिरुचि
(Measurement of Interest) 208
❖ अच्छी आदतों का निर्माण
(Formations of Good Habits) 210
❖ अभिक्षमता/अभियोग्यता
(Aptitude) 211
❖ अभिक्षमता का मापन
(Measurement of Aptitude) 211
❖ महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर 213

विज्ञप्ति 2018

परीक्षा 19 फरवरी, 2019 को आयोजित

1. रमन एवं अनमोल की एक ही बुद्धिलब्धि है जो 120 है । रमन अनमोल से दो वर्ष छोटा है । यदि अनमोल 12 वर्ष का है तो रमन की मानसिक आयु क्या है?

(A) 9 वर्ष (B) 10 वर्ष
(C) 12 वर्ष (D) 14 वर्ष **[C]**

व्याख्या— बुद्धिलब्धि $= \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times 100$

$$= \frac{7}{5} \times 100$$

$$120 = \frac{x}{10} \times 100$$

$$x = \frac{120 \times 10}{100}$$

$$x = 12$$

अतः रमन की मानसिक आयु 12 वर्ष होगी।

2. वह प्रथम मनोवैज्ञानिक जिसने मानव व्यक्तित्व के अवचेतन भाग की व्यवस्थित रूप में छानबीन का प्रयास किया वह है?

(A) अल्बर्ट बण्डूरा (B) ई.एल. थार्नडाइक
(C) मैक्स वर्दीमर (D) सिग्मंड फ्रॉयड **[D]**

व्याख्या—**सिगमंड फ्रायड** प्रथम मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने व्यक्तित्व के अवचेतन भाग की व्यवस्थित रूप से छानबीन की थी। फ्रायड ने व्यक्तित्व का मनोविश्लेषणवाद का सिद्धांत दिया था जिसमें व्यक्ति के मन के तीन भाग बताए गए हैं – **अचेतन, अवचेतन, चेतन।**

फ्रायड के अनुसार व्यक्ति के व्यक्तित्व पर उसके अवचेतन मन एवं दमित इच्छाओं आदि का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।

3. निम्नलिखित में से कौन–सा कथन अधिगम के बारे में सर्वाधिक उपयुक्त है?

(A) यह प्रक्रिया है उत्पाद नहीं।
(B) यह अप्रकट प्रक्रिया है।
(C) यह अनायास होता है।
(D) यह व्यवहार में अस्थायी परिवर्तन है। **[A]**

व्याख्या—**अधिगम की विशेषताएँ –**

(1) अधिगम व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन होता है।
(2) सीखना एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है।
(3) सीखने की प्रक्रिया आजीवन चलती है।
(4) सीखना एक प्रकट प्रक्रिया है।
(5) सीखना विकास की प्रक्रिया है।
(6) अधिगम व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है।
(7) सीखना समायोजन में सहायक है।
(8) सीखना उद्देश्यपूर्ण होता है।
(9) अधिगम खोज की प्रक्रिया है।
(10) अधिगम नई परिस्थितियों में अनुकूल है।

4. एक विचार अथवा अवधारणा के निर्माण में उपयुक्त वैचारिक प्रक्रिया जो नई, मौलिक तथा उपयोगी है क्या कहलाती है?

(A) सृजनात्मकता (B) उपलब्धि
(C) बुद्धि (D) व्यक्तित्व **[A]**

व्याख्या—सृजनात्मकता से तात्पर्य उस विशेषता से है जो किसी नवीन व वांछित वस्तु के उत्पादन की ओर प्रवृत्त करती है। यह नवीन वस्तु सम्पूर्ण समाज के लिए नवीन हो सकती है अथवा उस व्यक्ति के लिए नवीन हो सकती है जिसने उसे प्रस्तुत किया है।

सृजनात्मकता की प्रक्रिया नवीन, मौलिक एवं उपयोगी होती है।

सृजनात्मकता के मुख्य चार तत्व होते हैं–

(1) प्रवाह **(2) विविधता**
(3) मौलिकता **(4) विस्तारण**

5. निम्नलिखित में से कौन सा सिद्धान्त अधिगम के व्यवहारवादी सिद्धान्तों में सम्मिलित नहीं है?

(A) त्रुटि और प्रयास का सिद्धान्त
(B) शास्त्रीय अनुबन्धन का सिद्धान्त
(C) क्षेत्र सिद्धान्त
(D) क्रिया प्रसूत अनुक्रिया अनुबंधन का सिद्धान्त **[C]**

व्याख्या—अधिगम के सिद्धांतों को दो भागों में बाँटा जाता है–

	व्यवहारवादी (संबंधवादी सिद्धांत)	संज्ञानात्मक सिद्धांत
1.	थॉर्नडाइक का त्रुटि एवं प्रयास का सिद्धांत	अन्तर्दृष्टि सिद्धांत कोहलर
2.	स्किनर का क्रियाप्रसूत सिद्धांत	टॉलमैन का सिद्धांत
3.	पॉवलाव का शास्त्रीय अनुबंधन सिद्धांत	लेविन का क्षेत्र सिद्धांत
4.	गुथरी का समीपता का सिद्धांत	बन्डुरा का सामाजिक अधिगम का सिद्धांत
5.	हल का प्रबलन सिद्धांत	मास्लो का मानवतावादी सिद्धांत

व्याख्या—समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में संतुलन रखता है तथा समस्या का समाधान कर लक्ष्य प्राप्त करता है। जब समायोजन नहीं कर पाता है तो व्यक्ति तनाव, संघर्ष, चिंता की स्थिति में रहता है।

16. सृजनात्मकता की विशेषता होती है—

(A) मौलिकता (B) प्रवाहशीलता

(C) लचीलापन (D) दिए गए सभी विकल्प **[D]**

व्याख्या—सृजनात्मकता व्यक्ति की ऐसी क्षमता होती है जिसके माध्यम से वह मौलिक तथा उचित कार्य या अनुक्रिया करता है। सृजनात्मकता की कई विशेषताएँ होती हैं जैसे—प्रवाहशीलता, लचीलापन, मौलिकता का विस्तार, समस्याओं को फिर से परिभाषित करने की क्षमता।

17. एक शिक्षक के लिए शिक्षा मनोविज्ञान की उपादेयता है—

(A) (अ) : स्वयं के ज्ञान एवं तैयारी के बारे में जानकारी के लिए।

(B) (ब) : बालकों की आवश्यकता की जानकारी के लिए।

(C) (अ) तथा (ब) दोनों सही हैं।

(D) (अ) तथा (ब) दोनों गलत हैं। **[C]**

व्याख्या—एक शिक्षक के लिए शिक्षा मनोविज्ञान स्वयं मूल्यांकन, स्वयं के ज्ञान तथा बालक के विकास की जानकारी, वैयक्तिक विभिन्नताओं की जानकारी, पाठ्यक्रम निर्माण, शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति की दृष्टि से अति उपयोगी है।

18. अधिगम बाधित/असमर्थ बच्चे अधिकतम ..... होते हैं—

(A) आक्रामक (B) संगठित

(C) संगत (D) निम्न उपलब्धि वाले **[D]**

व्याख्या—ऐसे बालक जो किसी विषय-वस्तु को सीखने में असमर्थ होते हैं जिन्हें अधिगम बाधित बालक कहा जाता है उनका उपलब्धि स्तर निम्न होता है।

19. मनोविज्ञान ने शिक्षा को बना दिया है—

(A) पाठ्यचर्या केन्द्रित (B) शिक्षक केन्द्रित

(C) बाल केन्द्रित (D) विषय केन्द्रित **[C]**

व्याख्या—मनोविज्ञान ने शिक्षा को बाल केन्द्रित बना दिया है। शिक्षा मनोविज्ञान का केन्द्रबिन्दु बालक का व्यवहार होता है।

20. गिलफोर्ड द्वारा प्रतिपादित बौद्धिक संरचना के मॉडल में प्रारम्भ में कितने तत्त्वों को सम्मिलित किया गया है?

(A) 100 (B) 120

(C) 200 (D) 150 **[B]**

व्याख्या—गिलफोर्ड ने बुद्धि का त्रि-आयामी सिद्धांत दिया था। कारक विश्लेषण से बुद्धि की ये तीनों विमाएँ भिन्न होती हैं जिसे कुल 120 तत्वों में वर्गीकृत किया गया है।

1 मनोविज्ञान से परिचय [Introduction to Psychology]

- मनोविज्ञान का अध्ययन प्रारंभ में दर्शनशास्त्र की एक शाखा के रूप में किया जाता था।
- आरंभिक काल में मनोविज्ञान का अध्ययन इसके ग्रीक (Greek) अर्थ के अनुसार ही किया जाता था, यथा–मनोविज्ञान अंग्रेजी शब्द **'साइकोलॉजी'** (Psychology) का हिंदी रूपांतरण है तथा **'साइकोलॉजी'** (Psychology) शब्द दो ग्रीक शब्दों **'साइकी'** (Psyche) एवं **'लॉगोस'** (Logos) से मिलकर बना है, जिसमें साइकी (Psyche) का अर्थ आत्मा और लॉगोस (Logos) का अर्थ अध्ययन या विज्ञान है।
- इस प्रकार प्रारम्भ में मनोविज्ञान का आत्मा के विज्ञान के रूप में अध्ययन किया जाता था, लेकिन वर्तमान समय में मनोविज्ञान का यह अर्थ प्रासंगिक नहीं है।

मनोविज्ञान का क्रमिक विकास
(Successive Development of Psychology)

- वर्तमान में मनोविज्ञान का जो स्वरूप हमारे सामने है वह लंबे समय के क्रमिक विकास का परिणाम है। समय के साथ-साथ मनोविज्ञान के क्षेत्र व स्वरूप में गुणात्मक तथा विकासात्मक परिवर्तन आए। मनोविज्ञान के स्वरूप में परिवर्तन आने के साथ-साथ इसकी विषय-वस्तु में भी परिवर्तन आए तथा विषय-वस्तु के आधार पर मनोविज्ञान की परिभाषाओं में भी परिवर्तन आया।

मनोविज्ञान (Psychology) के परिवर्तित स्वरूप को निम्नलिखित चार अवस्थाओं/चरणों के माध्यम से समझा जा सकता है—

1. प्रथम अवस्था-आत्मा के अध्ययन के रूप में मनोविज्ञान (First Stage-Psychology as the Study of Soul)

- 16वीं शताब्दी तक दार्शनिक मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान मानते थे, तब मनोविज्ञान का उद्देश्य आत्मा की खोज करना और इसकी व्याख्या करना था।
- इस मत के प्रमुख समर्थक **देकार्त, प्लेटो** एवं **अरस्तू** थे।
- 16वीं शताब्दी के अंत में इस मत को अस्वीकृत कर दिया गया क्योंकि ना तो आत्मा का स्वरूप स्पष्ट है, ना ही इसके अस्तित्व के कोई ठोस सबूत हैं और ना ही इसके अध्ययन के कोई निर्धारित मानक (Norms) हैं।

2. द्वितीय अवस्था-मन के अध्ययन के रूप में मनोविज्ञान (Second Stage-Psychology as the study of Mind)

- 17वीं शताब्दी तथा 18वीं शताब्दी के अंत तक मनोविज्ञान को मन के विज्ञान के रूप में पढ़ा गया।
- इस मत के प्रमुख समर्थक — **काँट, पम्पोनॉजी, हॉब्स, लॉक** आदि थे।
- 18वीं शताब्दी के अंत तक इस मत को भी अस्वीकृत कर दिया गया क्योंकि मन का न तो स्पष्ट अर्थ एवं स्वरूप है और ना ही इसके अध्ययन का कोई स्पष्ट तरीका।

3. तृतीय अवस्था-चेतना के अध्ययन के रूप में मनोविज्ञान (Third Stage-Psychology as the study of Consciousness)

- 19वीं शताब्दी में मनोविज्ञान को चेतना के विज्ञान (Science of Consciousness) के रूप में पढ़ा जाने लगा।
- इसी अवस्था में मनोविज्ञान की एक स्वतंत्र विषय के रूप में उत्पत्ति हुई जब 1879 ई. में **विलियम वुंट** ने जर्मनी के लिपजिंग विश्वविद्यालय में मनोविज्ञान की प्रथम औपचारिक प्रयोगशाला की स्थापना की।
- विलियम वुंट के अलावा इस मत के प्रमुख समर्थकों में प्रसिद्ध अमेरिकन मनोवैज्ञानिक **विलियम जेम्स** थे जिन्होंने 1890 ई. में मनोविज्ञान की प्रसिद्ध पुस्तक **'प्रिंसिपल्स ऑफ साइकोलॉजी'**

स्मरणीय तथ्य (Memorable Facts)

❖	द ग्रुप माइंड (बुक)	विलियम मैकडूगल	❖	मनोविज्ञान में 'S-O-R' (उद्दीपक-प्राणी-अनुक्रिया)	वुडवर्थ
❖	एसेंसियल्स ऑफ साइकोलॉजी (बुक)	पिल्सबरी	❖	मनोविज्ञान का प्रथम बल (First Force)	मनोविश्लेषणवाद
❖	व्यवहारवाद (बुक)	जे.बी. वॉटसन	❖	मनोविज्ञान का द्वितीय बल (Second Force)	व्यवहारवाद
❖	टॉक टू टीचर्स (बुक)	विलियम जेम्स	❖	मनोविज्ञान का तृतीय बल (Third Force)	मानवतावादी मनोविज्ञान
❖	मनोविज्ञान की प्रकृति (Nature)	विज्ञानमयी (Scientific)	❖	आउटलाईन ऑफ साइकोलोजी (बुक)	विलियम मैकडूगल
❖	द एमाइल/ऑन एजूकेशन (बुक)	रूसो	❖	एंपीरिसिज्म (बुक)	जॉन लॉक

महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. किसने लिपजिंग विश्वविद्यालय जर्मनी में पहली मनोविज्ञान की प्रयोगशाला स्थापित की? [वरिष्ठ अध्यापक संस्कृत शिक्षा-2019]

(A) जे.बी. वाटसन (B) फ्रांसिस गाल्टन
(C) विल्हेल्म वुंट (D) जैम्स ड्रेवर **[C]**

2. वह प्रथम मनोवैज्ञानिक जिसने मानव व्यक्तित्व के अचेतन (Unconscious) भाग की व्यवस्थित रूप से छानबीन का प्रयास किया वह है— [वरिष्ठ अध्यापक संस्कृत शिक्षा-2019]

(A) अल्बर्ट बंडुरा (B) ई.एल. थॉर्नडाइक
(C) मैक्स वर्दीमर (D) सिग्मंड फ्रॉयड **[D]**

3. निम्नलिखित में से कौनसे मनोवैज्ञानिक प्रकार्यवाद से संबंधित नहीं हैं? [वरिष्ठ अध्यापक संस्कृत शिक्षा-2019]

(A) विलियम जैम्स (B) जॉन डिवी
(C) जैम्स आर एंजिल (D) ई.बी. टिचेनर **[D]**

4. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए—

मनोविज्ञान के स्कूल	मनोवैज्ञानिकों के नाम
1. मनोविश्लेषण	i. सी.एल. हल
2. व्यवहारवाद	ii. लेव विगोटस्की
3. गेस्टाल्ट (समग्रता)	iii. सिग्मंड फ्रायड
4. निर्मितवाद	iv. मेक्स वर्दीमर

[वरिष्ठ अध्यापक सस्कृत शिक्षा-2018]

कूट-	1	2	3	4	
(A)	ii	iii	i	iv	
(B)	iv	iii	ii	i	
(C)	iii	i	iv	ii	
(D)	iii	iv	ii	i	**[C]**

5. मनोविज्ञान की निम्न शाखाओं में से अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान कौनसा है? [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2017]

(A) असामान्य मनोविज्ञान (B) प्रयोगात्मक मनोविज्ञान
(C) तुलनात्मक मनोविज्ञान (D) शिक्षा मनोविज्ञान **[D]**

6. ''सर्वप्रथम मनोविज्ञान ने अपनी आत्मा का परित्याग किया, फिर उसने मन का त्याग किया। उसके बाद उसने चेतना का त्याग किया। अब वह व्यवहार की विधि को स्वीकार करता है।'' यह कथन दिया है— [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2017]

(A) मन (B) जे.बी. वाटसन
(C) वुडवर्थ (D) मैकडूगल **[C]**

7. पहली मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला की स्थापना किसके द्वारा की गई? [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2017]

(A) गाल्टन (B) कैटेल
(C) पेस्टालॉजी (D) वुंट **[D]**

8. जे.बी. वाटसन के अनुसार मनोविज्ञान अध्ययन है— [आर.पी.एस.सी. स्कूल व्याख्याता 2016]

(A) मानसिक अवस्था का (B) व्यवहार का
(C) चेतना का (D) मन का **[B]**

9. 'प्रिंसिपल्स ऑफ साइकोलॉजी' नामक पुस्तक के लेखक हैं— [स्कूल व्याख्याता 2016]

(A) जॉन डिवी (B) विलियम जेम्स
(C) एबिंगहॉस (D) वुंट **[B]**

10. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए— [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2013]

सूची-1	सूची-2
1. जॉन डिवी	i. गेस्टाल्ट
2. टिचनर	ii. संरचनावाद
3. कोफ्का	iii. कृत्यवाद
4. वाटसन	iv. व्यवहारवाद

कूट-	1	2	3	4	
(A)	iv	ii	i	iii	
(B)	ii	i	iii	iv	
(C)	iv	iii	i	ii	
(D)	iii	ii	i	iv	**[D]**

11. समग्रता (Gestalt) के सिद्धांत के प्रवर्तक हैं— [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2011]

(A) आर.एम. गैने (B) वर्दीमर एवं अन्य
(C) बी.एस.ब्लूम (D) बी.एफ. स्कीनर **[B]**

2 शिक्षा मनोविज्ञान [Educational Psychology]

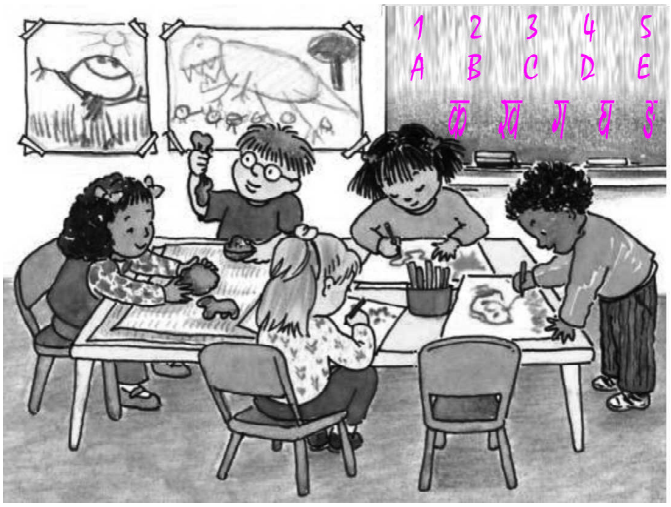

- शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक एडवर्ड ली थॉर्नडाइक (E.L. Thorndike) के प्रयासों के फलस्वरूप 1900 ई. से मानी जाती है।
- ई.एल थॉर्नडाइक, जुड, टर्मन, स्टेनले हॉल इत्यादि मनोवैज्ञानिकों के अनवरत प्रयासों के फलस्वरूप शिक्षा मनोविज्ञान ने 1920 ई. में स्पष्ट और निश्चित स्वरूप धारण किया अर्थात् शिक्षा मनोविज्ञान ने मनोविज्ञान की एक स्वतंत्र शाखा के रूप में अपने आप को स्थापित किया।
- ई.एल. थॉर्नडाइक को प्रथम शैक्षिक मनोवैज्ञानिक कहा जाता है।
- थॉर्नडाइक की शिक्षा से संबंधित महत्त्वपूर्ण पुस्तक **'शिक्षा मनोविज्ञान'** (Educational Psychology) है, जिसका प्रकाशन 1903 ई. में हुआ।

शिक्षा (Education)

- शिक्षा शब्द अंग्रेजी भाषा के एड्यूकेशन (Education) का हिंदी रूपांतरण है।
- एड्यूकेशन Education लैटिन भाषा के 'ई' (E) एवं 'ड्यूको' (DUCO) से मिलकर बना है। 'ई' (E) का अर्थ अंदर से तथा 'ड्यूको' (DUCO) का अर्थ बाहर निकालना है। इस संदर्भ में शिक्षा का अर्थ व्यक्ति या बालक के अंदर निहित क्षमताओं एवं योग्यताओं को बाहर निकालकर व्यक्तित्व में धनात्मक परिवर्तन करने से है।
- लैटिन भाषा के 'ई' (E) एवं 'ड्यूको' (DUCO) से भी दो शब्द बने हैं—
  - (i) 'एड्यूकेयर' (Educare) जिसका अर्थ है – बाहर निकालना या गठन करना (To Mold or Train)
  - (ii) 'एड्यूसियर' (Educere) जिसका अर्थ है – नेतृत्व करना (To Lead Out);

  अत: उपर्युक्त आधार पर हम कह सकते हैं कि शिक्षा (Education) एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्ति में अंतर्निहित समस्त गुणों को बाहर लाने का प्रयास करती है तथा बालक/व्यक्ति के विकास में प्रभावकारी भूमिका निभाती है।
- **महात्मा गाँधी** ने कहा है कि, ''शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक तथा मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्तम विकास से है।''
- **सुकरात** के अनुसार, ''शिक्षा का अर्थ उन सर्वमान्य विचारों को विकसित करना है जो प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्क में विलुप्त है।''
- **जॉन डिवी** के अनुसार, ''शिक्षा व्यक्ति की उन समस्त क्षमताओं का विकास करना है जो उसे अपने वातावरण को नियंत्रित करने तथा अपनी संभावनाओं को पूरा करने योग्य बनाएगी।''

शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ एवं परिभाषाएँ
(Meaning and Definitions of Educational Psychology)

- शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक ऐसी अनुप्रयुक्त (Applied) एवं व्यवहारात्मक (Behavioural) शाखा है जिसमें मनोविज्ञान के नियम, सिद्धांत, विषय-वस्तु एवं क्रियाविधि इत्यादि का शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग किया जाता है तथा विद्यार्थी के व्यवहार का शैक्षिक वातावरण के संदर्भ में अध्ययन किया जाता है। इसके साथ-साथ शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा से संबद्ध समस्याओं का विवेचन, विश्लेषण एवं वैज्ञानिक समाधान भी प्रस्तुत करती है।

- **बी.एफ. स्किनर** के अनुसार, ''शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो शिक्षण व अधिगम से संबंधित है।''
- **जेम्स ड्रेवर** के अनुसार, ''शिक्षा मनोविज्ञान प्रयुक्त मनोविज्ञान (Applied Psychology) की एक ऐसी शाखा है जो शिक्षा में मनावैज्ञानिक नियमों एवं परिणामों के उपयोग से तथा समस्याओं के वैज्ञानिक अध्ययन से संबद्ध होती है।''
- **पील** के अनुसार ''शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा का विज्ञान है।''
- **क्रो** एवं **क्रो** के अनुसार ''शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के जन्म से

को निश्चित किया है।

- पेस्टॉलोजी ने बताया कि जिस प्रकार एक वृक्ष के बीज में पूर्ण वृक्ष निहित होता है, उसी प्रकार एक शिशु में पूर्ण मनुष्य निहित होता है, शिक्षा का कार्य इस शिशु को मनुष्य रूप में विकसित होने में सहायता भर करना है।
- पेस्टॉलोजी के अनुसार "शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, समरस और प्रगतिशील विकास है।"
- पेस्टॉलोजी रूसो के विचारों से काफी प्रभावित थे।

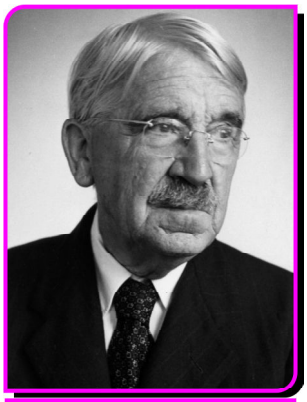

जॉन डिवी

जॉन डिवी (John Dewey)

- जॉन डिवी एक महान अमेरिकन दार्शनिक, शिक्षाविद तथा विचारक हैं।
- जॉन डिवी की शिक्षा की अवधारणा व्यवहारवादी दर्शन पर आधारित है।
- जॉन डिवी का मानना था कि ज्ञान कर्म/कार्य का परिणाम होता है।
- जॉन डिवी ने **करके सीखने (Learning by Doing)** पर बल दिया।
- जॉन डिवी ने शिक्षा को एक त्रिमुखी प्रक्रिया माना है तथा इसमें वह **1. शिक्षक, 2. शिक्षार्थी (विद्यार्थी)** तथा **3. पाठ्यक्रम** को सम्मिलित करता है।

फ्रोबेल (Frobel)

- फ्रोबेल एक जर्मन शिक्षाशास्त्री थे जिन्होंने **'किंडर गार्डन शिक्षा पद्धति'** का प्रतिपादन किया।
- फ्रोबेल ने खेल द्वारा शिक्षा तथा स्व क्रिया द्वारा शिक्षा प्राप्त करने पर बल दिया।

नोट—अन्य प्रमुख मनोवैज्ञानिक का परिचय पुस्तक में आगे उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों के साथ वर्णित है।

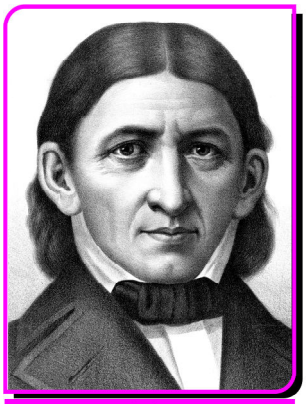

फ्रोबेल

महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. किसने कहा कि "शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो शिक्षण व अधिगम से संबंधित है।"?
[वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा संस्कृत शिक्षा 2019]
(A) बी.एफ. स्कीनर (B) जेम्स ड्रेवर
(C) ई.एल. थॉर्नडाइक (D) क्रो एवं क्रो **[A]**

2. शिक्षा मनोविज्ञान का संबंध है— [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2013]
(1) शिक्षक से (2) शिक्षण से
(3) कक्षा-कक्ष वातावरण से (4) विद्यार्थी से
निम्न में से कौनसा सबसे अच्छा विकल्प है?
(A) सिर्फ 4 (B) 1 और 4
(C) 2, 3 और 4 (D) उपर्युक्त सभी **[D]**

3. किसके अनुसार शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक सीखने संबंधी अनुभवों का वर्णन और व्याख्या करती है? [स्कूल व्याख्याता परीक्षा 2016]
(A) स्कीनर (B) क्रो और क्रो
(C) पील (D) पिल्सबर्ग **[B]**

4. किसके अनुसार शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा का विज्ञान है? [स्कूल व्याख्याता परीक्षा 2020]
(A) स्कीनर (B) पील
(C) पिल्सबर्ग (D) ब्रूनर **[B]**

5. शिक्षा मनोविज्ञान है? [स्कूल व्याख्याता 2016]
(A) मानक विज्ञान
(B) अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान
(C) विशुद्ध विज्ञान
(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं **[B]**

6. शिक्षा मनोविज्ञान अध्ययन करता है– [ग्रेड द्वितीय पी.टी.आई. परीक्षा 2012]
(A) आत्मा का धार्मिक परिस्थितियों में
(B) मानव व्यवहार का शैक्षिक परिस्थितियों में
(C) चेतन्यता का असीमित परिस्थितियों में
(D) मस्तिष्क का बौद्धिक परिस्थितियों में **[B]**

7. "शिक्षा मनोविज्ञान के अंतर्गत शिक्षा से संबंधित संपूर्ण व्यवहार और व्यक्तित्व आ जाता है।" यह परिभाषा किसके द्वारा दी गई? [स्कूल व्याख्याता परीक्षा 2016]
(A) स्कीनर (B) क्रो एवं क्रो
(C) कॉलसनिक (D) थॉर्नडाइक **[A]**

8. शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति का वर्ष कौनसा माना जाता है? [DSSSB PRT]
(A) 1947 (B) 1920
(C) 1940 (D) 1900 **[D]**

9. "मनोविज्ञान के सिद्धांतों तथा उपलब्धियों का शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग ही शिक्षा मनोविज्ञान है।" यह कथन किसका है?
(A) जुड (B) स्टीफन
(C) पील (D) कॉलसनिक **[D]**

10. "शिक्षा मनोविज्ञान, वैज्ञानिक विधि से प्राप्त किए जाने वाले मानव प्रतिक्रियाओं के उन सिद्धांतों के प्रयोग को प्रस्तुत करता है जो शिक्षण और अधिगम को प्रभावित करते हैं।" कथन है— [स्कूल व्याख्याता 2020]
(A) सार्वे एंड टेलफोर्ड (B) स्कीनर
(C) एलिस क्रो (D) क्रो एंड क्रो **[C]**

(C) A और B दोनों
(D) इनमें से कोई नहीं [C]

28. उस विधि का नाम बताइये जो भविष्यवाणियों के अतिरिक्त कथन कारण सिद्धांत पर आधारित है– [स्कूल व्याख्याता, 2020]
(A) वर्णनात्मक विधि (B) सह संबंध विधि
(C) अवलोकन विधि (D) प्रयोगात्मक विधि [D]

29. एक प्रभावी शिक्षक वह है जो— [स्कूल व्याख्याता, 2020]
(A) कक्षा को नियंत्रित कर सकता है।
(B) कम समय में अधिक सूचना प्रदान कर सकता है।
(C) विद्यार्थियों को अधिगम हेतु अभिप्रेरित कर सकता है।
(D) दत्तकार्य का ध्यानपूर्वक मूल्यांकन कर सकता है। [C]

30. करके सीखना का विचार दिया— (REET 2013)
(A) जॉन डिवी ने (B) स्कीनर ने
(C) मैसलो ने (D) लेविन ने [A]

31. शिक्षा मनोविज्ञान का संबंध है—
(1) शिक्षक से (2) शिक्षण से
(3) कक्षा-कक्ष वातावरण से (4) विद्यार्थी से
निम्न में से कौनसा सबसे अच्छा विकल्प है—
(A) सिर्फ 4 (B) 1 और 4
(C) 2, 3 और 4 (D) उपर्युक्त सभी [D]

32. बाल केंद्रित शिक्षण विधि का अर्थ है— (REET 2021)
(A) बच्चों को शिक्षक का अनुसरण और अनुकरण करने के लिए कहना
(B) बच्चों को पूर्ण रूप से स्वतंत्रता देना
(C) बच्चों को नैतिक शिक्षा देना
(D) बच्चों की अभिव्यक्ति और उनकी सक्रिय भागीदारी को महत्त्व देना [D]

33. शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन अध्यापक को इसलिए करना चाहिए क्योंकि—
(A) इससे शिक्षक को आत्म संतुष्टि मिल सके
(B) इससे वह दूसरों को प्रभावित कर सके
(C) इससे वह अपनी परीक्षाओं में प्रथम आ सके
(D) इसकी सहायता से अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली बना सके [D]

34. प्रयोगात्मक विधि को सर्वप्रथम किसने प्रस्तावित किया?
(A) जुड ने (B) राइस एवं कार्नमैन ने
(C) विलियम वुंट ने (D) कोलिंस व ड्रेवर ने [C]

35. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए—

सूची-1	सूची-2
1. अवलोकन विधि	i. विलियम वुंट
2. प्रयोगात्मक विधि	ii. जे.एल. मोरेनो
3. प्रश्नावली विधि	iii. सुकरात
4. समाजमिति विधि	iv. जे.बी. वाटसन

कूट-	1	2	3	4
(A)	ii	iii	iv	i
(B)	iv	i	iii	ii
(C)	iii	iv	ii	i
(D)	ii	iii	i	iv

[B]

36. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए—

सूची-1	सूची-2
1. एक ही समूह का भिन्न-भिन्न समयों पर अध्ययन	i. प्रक्षेपी/प्रक्षेपण विधि
2. अलग-अलग समूहों का एक समय में एक साथ अध्ययन	ii. अनुप्रस्थ काट विधि
3. व्यक्ति के व्यवहार को समझने के लिए उसके जीवन की सभी तरह की घटनाओं का अध्ययन	iii. व्यक्ति अध्ययन विधि
4. व्यक्तित्व का अप्रत्यक्ष/परोक्ष रूप से मापन	iv. कालानुक्रमिक/अनुदैर्ध्य विधि

कूट-	1	2	3	4
(A)	iv	ii	iii	i
(B)	i	ii	iii	iv
(C)	iv	iii	ii	i
(D)	iii	iv	ii	i

[A]

37. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए—

सूची-1	सूची-2
1. निगमनात्मक विधि	i. जॉन लॉक
2. आगमनात्मक विधि	ii. प्लेटो
3. किंडर गार्डन विधि	iii. अरस्तू
4. टेबूला रासा	iv. फ्रोबेल

कूट-	1	2	3	4
(A)	ii	i	iv	iii
(B)	i	ii	iii	iv
(C)	iv	iii	ii	i
(D)	ii	iii	iv	i

[D]

38. शिक्षा में मनोवैज्ञानिक प्रकृति को प्रारंभ करने का श्रेय किस विद्वान को दिया जाता है?
(A) जॉन डिवी (B) जॉन लॉक
(C) फ्रोबेल (D) रूसो [D]

39. यह कथन है "जिस प्रकार एक वृक्ष के बीज में पूर्ण वृक्ष निहित होता है, उसी प्रकार एक शिशु में पूर्ण मनुष्य निहित होता है, शिक्षा का कार्य इस शिशु के मनुष्य रूप में विकसित होने में सहायता भर करना है।"
(A) रूसो (B) पेस्टॉलोजी
(C) वाटसन (D) थॉर्नडाइक [B]

40. टेबूला रासा (Tabula Rasa) से तात्पर्य है—
(A) खाली स्लेट (B) खाली टेबल
(C) रस (D) टेबल [A]

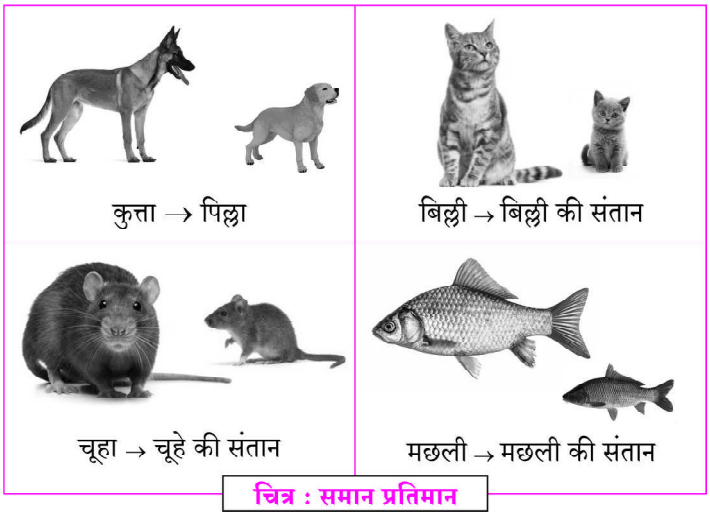

चित्र : समान प्रतिमान

उदाहरणार्थ—संसार में प्रत्येक मानव जाति के शिशुओं के विकास का प्रतिमान एक ही है और उसमें किसी प्रकार का अंतर होना संभव नहीं है।

17. विकास की दिशा का सिद्धांत (Principle of Developmental Direction)

- इस सिद्धांत के अनुसार विकास की प्रक्रिया पूर्व निश्चित दिशा में आगे बढ़ती है।
- कुप्पुस्वामी ने इसकी व्याख्या करते हुए लिखा कि "विकास सिफेलो-कॉडल (Cephalo–Caudal) और प्रॉक्सिमो-डिस्टल (Proximo–Distal) क्रम में होता है।"

18. परिमार्जन/परिमार्जितता का सिद्धांत (Principle of Modifiability)

- विकास की परिमार्जितता का सिद्धांत यह बताता है कि विकास की गति तथा दिशा में परिमार्जन संभव होता है। सही एवं उचित ढंग से किए गए प्रयासों के द्वारा वृद्धि तथा विकास की गति को वांछित दिशा में तथा तीव्र गति की ओर उन्मुख किया जा सकता है।
- विकास का यह सिद्धांत शैक्षिक दृष्टि से अत्यंत उपयोगी माना गया है क्योंकि शिक्षा प्रक्रिया के द्वारा बालक के विकास को वांछित दिशा में तीव्र गति से अग्रसर करने का प्रयास किया जा सकता है।

विकास के प्रकार एवं आयाम
(Types and Dimensions of Development)

जैसा कि पूर्व में अध्ययन कर चुके हैं कि विकास एक बहुत ही विस्तृत एवं व्यापक सम्प्रत्यय है जिसके अंतर्गत मानव व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों यथा—शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक, सांवेगिक एवं भाषायी पक्षों को मुख्यत: सम्मिलित किया जाता है।

इन्ही आधारों पर **विकास को विभिन्न प्रकारों में बाँटा गया है, जिनमें प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं**—

I. शारीरिक विकास (Physical Development)
II. संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development)
III. भाषायी विकास (Linguistic Development)
IV. सामाजिक विकास (Social Development)
V. नैतिक विकास (Moral Development)
VI. सांवेगिक विकास (Emotional Development)

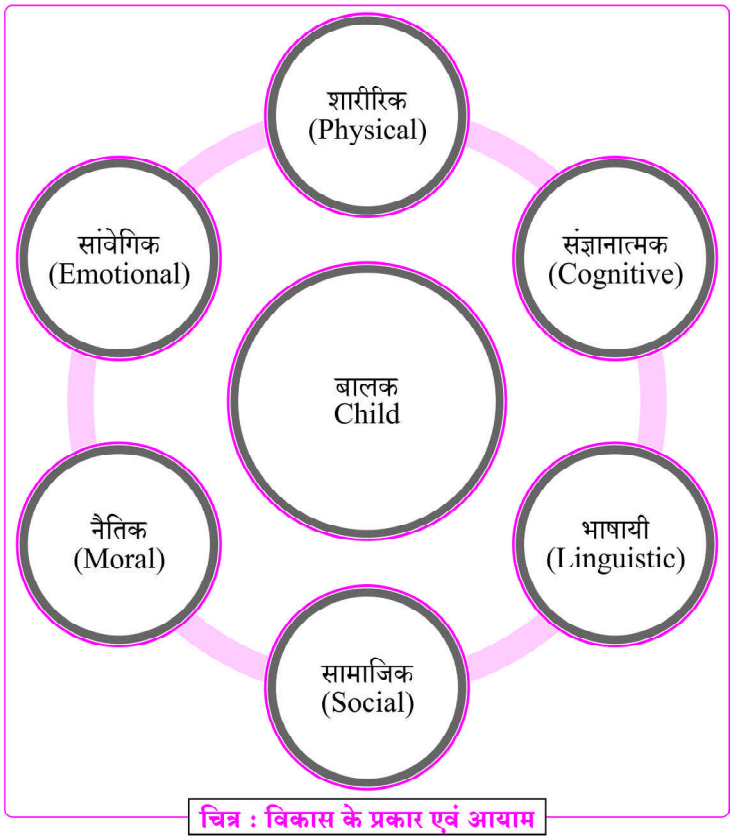

चित्र : विकास के प्रकार एवं आयाम

I. शारीरिक विकास (Physical Development)

- बालक के विकास का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष उसका शारीरिक विकास है। हमारे शरीर के आंतरिक तथा बाह्य अवयवों में जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ ना कुछ परिवर्तन होते रहते हैं, परिवर्तनों की इस प्रक्रिया को ही शारीरिक विकास का नाम दिया जाता है।
- शारीरिक विकास के अंतर्गत शरीर की संरचना, मांसपेशीय वृद्धि, गामक तंत्र (Motor system), अंत:स्त्रावी ग्रंथियाँ तथा अन्य शारीरिक परिवर्तन मुख्य रूप से आते हैं।
- बालक के शारीरिक विकास के अंतर्गत मुख्यत: निम्नलिखित परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है–

(1) तंत्रिका तंत्र का विकास (Development of Nervous System)

तंत्रिका तंत्र का विकास गर्भकालीन अवस्था से ही प्रारंभ हो जाता है, 6 माह के गर्भ में लगभग 1 अरब से अधिक तंत्रिका कोश (Nerve Cell) होते हैं। इन्ही तंत्रिका कोशों के आपस में मिलने से तंत्रिका तंत्र का निर्माण होता है।

(2) मस्तिष्क का विकास (Development of Brain)

जन्म के समय नवजात शिशु के मस्तिष्क का भार लगभग 350

तर्क, समस्या-समाधान जैसी मानसिक प्रक्रियाएँ/संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ परस्पर संगठित होकर कार्य करती है, जो मानसिक प्रक्रियाओं के व्यवस्थित संगठन को प्रदर्शित करती है, इससे मानसिक प्रक्रियाओं एवं कार्यों का उचित संपादन संभव हो पाता है।

❖ उदाहरण के लिए जब कोई बालक वातावरण में उपस्थित उद्दीपकों एवं परिस्थितियों का सामना करता है तो उस समय उसकी समस्त मानसिक प्रक्रियाएँ अलग-अलग कार्य न करके एक साथ संगठित (Organized) होकर कार्य करती है जिसके फलस्वरूप बालक के संज्ञानात्मक ज्ञान भंडार में वृद्धि होती है तथा उसे समस्याओं एवं परिस्थितियों का सामना करने एवं उनका उचित समाधान करने में सहायता प्राप्त होती है।

4. संरक्षण (Conservation)

❖ पियाजे के सिद्धांत में संरक्षण से तात्पर्य वातावरण में उपस्थित तत्त्वों में परिवर्तनशील तथा स्थिर तत्त्वों की पहचान करना, उन्हें समझना तथा किसी वस्तु के रंग-रूप में परिवर्तन को उस तत्त्व के अस्तित्व में परिवर्तन से अलग करने की क्षमता एवं योग्यता से होता है।

❖ सरल शब्दों में कहे तो संरक्षण से तात्पर्य किसी उद्दीपक या अन्य किसी तत्त्व के मूलभूत गुणों की पहचान करने से होता है जिसके अंतर्गत अगर उन उद्दीपकों या तत्त्वों के अंदर कोई क्षणिक परिवर्तन भी होते हैं तो वे व्यक्ति उन क्षणिक परिवर्तनों को उनके मूलभूत गुणों से अलग करने की क्षमता रखते हैं तथा उन क्षणिक परिवर्तनों के आधार पर ही उद्दीपक या तत्त्वों के अस्तित्व को निर्धारित न करके उसके मूलभूत गुणों के आधार पर उसके अस्तित्व को निर्धारित करते है।

5. संज्ञानात्मक संरचना (Cognitive Structure)

❖ किसी व्यक्ति या बालक के मानसिक संगठन या मानसिक क्षमताओं के समुच्चय को **'संज्ञानात्मक संरचना'** कहा जाता है।

❖ **रिली, लेविस** तथा **टेनर** ने बताया कि "किसी बालक के मानसिक संगठन या क्षमताओं को ही संज्ञानात्मक संरचना कहा जाता है।"

❖ संज्ञानात्मक संरचना के आधार पर ही एक 6-7 साल के बालक को 3 साल के बालक से भिन्न समझा जाता है।

6. मानसिक संक्रियाएँ (Mental Operations)

❖ बालक या व्यक्ति किसी समस्या के समाधान के लिए जिन मानसिक प्रक्रियाओं तथा चिंतन गतिविधियों का प्रयोग करता है उन्हें मानसिक संक्रियाएँ/प्रक्रियाएँ कहा जाता है।

7. स्कीमा (Schema)

❖ स्कीमा से तात्पर्य ऐसी मानसिक संरचनाओं से है जो व्यक्ति के मस्तिष्क में ज्ञान एवं सूचनाओं को संगठित करती है, इनकी व्याख्या करती है तथा विभिन्न प्रकार की मानसिक प्रक्रियाओं एवं व्यवहार को संचालित करने के लिए हमेशा उपस्थित रहती है।

❖ व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं के अनुसार स्कीमा में संशोधन भी करता रहता है। स्कीमा में संशोधन या परिवर्तन करना आत्मसातीकरण (Assimilation) तथा समंजन (Adaptation) कहलाता है।

❖ पियाजे ने स्कीमा को संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं की एक मूल इकाई भी माना है तथा जटिलता के आधार पर इसको दो भागों में बांटा है—
(i) साधारण स्कीमा (ii) जटिल स्कीमा

8. विकेंद्रण (Decentralisation)

❖ पियाजे के अनुसार विकेंद्रण से तात्पर्य किसी वस्तु या चीज के बारे में वस्तुनिष्ठ तथा वास्तविक ढंग से सोचने की क्षमता एवं उसके सभी आयामों को ध्यान में रखकर निर्णय करने की योग्यता से है।

नोट (Note)

✧ पियाजे ने अपने सिद्धांत में संज्ञानात्मक विकास के अध्ययन के लिए जिस विधि का उपयोग किया उसे **नैदानिक साक्षात्कार (Clinic Interview)** नाम दिया।

✧ पियाजे के सिद्धांत में संक्रिया (Operation) से तात्पर्य मानसिक/संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं से है।

✧ सामान्यत: संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को ही मानसिक प्रक्रियाएँ कहा जाता है।

पियाजे के संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाएँ (Stages of Piagets Cognitive Development)

❖ जीन पियाजे ने बालकों के चिंतन तथा संज्ञानात्मक विकास की व्याख्या करने के लिए संज्ञानात्मक विकास की 4 महत्त्वपूर्ण अवस्थाएँ बतायी है-

अवस्था (Stage)	सन्निकट आयु (Age Range)	विशेषताएँ (Characteristics)
संवेदी-प्रेरक	जन्म से-2 वर्ष	शिशु संवेदी अनुभवों का शारीरिक क्रियाओं के साथ समन्वय करते हुए संसार का अन्वेषण करता है
पूर्व-संक्रियात्मक	2-7 वर्ष	प्रतीकात्मक विचार विकसित होते हैं; वस्तु स्थायित्व उत्पन्न होता है; बच्चा वस्तु के विभिन्न भौतिक गुणों को समन्वित नहीं कर पाता है
मूर्त-संक्रियात्मक	7-11 वर्ष	बच्चा मूर्त घटनाओं के संबंध में युक्तिसंगत तर्कना कर सकता है और वस्तुओं को विभिन्न समूहों में वर्गीकृत कर सकता है। वस्तुओं की प्रतिमाओं (Images) पर प्रतिवर्तनीय मानसिक संक्रियाएँ करने में सक्षम होता है।
औपचारिक संक्रियात्मक	11-15 वर्ष	किशोर तर्क का अनुप्रयोग अधिक अमूर्त रूप से कर सकते हैं; परिकल्पनात्मक चिंतन विकसित होते हैं

चित्र : पियाजे द्वारा प्रतिपादित संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाएँ

(स्रोत: NCERT)

1. संवेदी पेशीय अवस्था (Sensory-Motor Stage)
2. प्राक्/पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (Pre-Operational Stage)
3. मूर्त/ठोस-संक्रियात्मक अवस्था (Concrete Operational Stage)
4. औपचारिक/अमूर्त-संक्रियात्मक अवस्था (Formal Operational Stage)

लोरेंस कोहलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धांत
(Lawrence Kohelberg's Theory of Moral Development)

लोरेंस कोहलबर्ग

- लोरेंस कोहलबर्ग ने पियाजे के संज्ञानात्मक विकास सिद्धांत को संशोधित एवं परिष्कृत कर अपना नैतिक विकास का सिद्धांत प्रस्तुत किया।
- लोरेंस कोहलबर्ग के अनुसार "बच्चे जिस प्रकार संज्ञानात्मक विकास की विभिन्न अवस्थाओं से गुजरते हैं उसी प्रकार वे नैतिक विकास (Moral Development) की विभिन्न अवस्थाओं से गुजरते हैं।"
- लोरेंस कोहलबर्ग ने 10 से 16 वर्ष की आयु के बच्चों का साक्षात्कार किया जिसमें उन्हे ऐसी कहानियाँ सुनाई जिनके पात्र नैतिक दुविधा का सामना कर रहे थे जैसे—हैंज नामक व्यक्ति की पत्नी अत्यधिक गंभीर बीमारी **'केंसर'** से ग्रसित है और उस व्यक्ति के पास पैसे नहीं है तथा दवाई विक्रेता उसे पैसे के बिना दवाई देने से मना कर देता है। इसके बाद वह व्यक्ति दवाई की दुकान से चोरी कर लेता है तो यह नैतिक दृष्टि से सही है या गलत? ऐसे प्रश्न किए जाते हैं।
- दुविधा की स्थितियों को कहानियों के माध्यम से बताकर बच्चों से पूछा गया कि उस दुविधा में पात्रों को या जिस व्यक्ति के साथ दुविधा उत्पन्न हुई है उसको क्या करना चाहिए और ऐसा क्यों करना चाहिए, इसी आधार पर लारेंस कोहलबर्ग ने अपने नैतिकता से सम्बन्धित अध्ययन किये।
- अपने अध्ययनों के आधार पर कोहलबर्ग ने नैतिक विकास के 3 स्तर (3 Levels) बताये एवं प्रत्येक स्तर (Level) की 2 अवस्थाएँ (2 Stages) बताई हैं।
- इस तरह से लोरेंस कोहलबर्ग के सिद्धांत में कुल तीन स्तर तथा 6 अवस्थाएँ हैं।
- कोहलबर्ग ने इन स्तरों तथा अवस्थाओं का एक निश्चित क्रम बताया है अर्थात् एक क्रम के बाद ही दूसरा क्रम अथवा अवस्था आती है परंतु यह आवश्यक नहीं है कि सभी लोगों में एक समान उम्र/निश्चित समय में यह अवस्थाएँ/स्तर आए।
- अलग-अलग व्यक्तियों में नैतिकता के स्तर एवं अवस्थाओं की अवधि अलग-अलग हो सकती है।
- कोहलबर्ग के अनुसार कोई भी व्यक्ति किसी एक अवस्था को छोड़कर आगे की अवस्था में नहीं बढ़ सकता।
- कोहलबर्ग ने अपने सिद्धांत में यह भी बताया कि अनेक लोग ऐसे होते हैं जो नैतिक निर्णय (Moral Judgement) के उच्चतम स्तर पर (Highest Level) कभी नहीं पहुंच पाते हैं और कुछ लोग नैतिक निर्णय के अपरिपक्व स्तर पर ही हमेशा पुरस्कार पाने तथा दंड से छुटकारा पाने तक ही अपने को सीमित रख लेते हैं।

- कोहलबर्ग के नैतिक विकास के स्तर (Level) तथा अवस्थाएँ (Stages) निम्नलिखित वर्गीकरण से स्पष्ट है—

स्तर-1 (Level-1)

पूर्व पारम्परिक नैतिकता का स्तर
(Level of Pre-Conventional Morality) (4 साल से 10 साल तक)

I अवस्था

दंड एवं आज्ञाकारिता उन्मुखता (Punishment and Obedience Orientation)

बालक दण्ड के डर से आज्ञा का पालन या नैतिक व्यवहार करता है

II अवस्था

साधनात्मक सापेक्षवादी उन्मुखता (Instrumental Relativistic Orientation)

बालक पुरस्कार प्राप्ति के लिए नैतिक व्यवहार करता है

स्तर-2 (Level-2)

पारम्परिक नैतिकता का स्तर
(Level of Conventional Morality) (10 साल से 13 साल तक)

III अवस्था

अच्छा लड़का-लड़की की उन्मुखता (Good Boy - Nice Girl Orientation)

बालक सामाजिक स्वीकृति के लिए नैतिक व्यवहार करता है

IV अवस्था

प्राधिकार एवं सामाजिक नियम उत्केन्द्रण (Law and Order Orientaion)

बालक सामाजिक व्यवस्था के लिए नैतिक व्यवहार करता है

स्तर-3 (Level-3)

उत्तर पारम्परिक नैतिकता का स्तर
(Level of Post Conventional Morality) (सबसे उच्च स्तर)

V अवस्था

सामाजिक अनुबंध उन्मुखता (Social Contract Orientation)

इस अवस्था में बच्चे या किशोर उन वैयक्तिक अधिकार तथा नियमों का आदर करते हैं जो लोकतांत्रिक रूप से मान्य हो

VI अवस्था

सार्वभौमिक नीतिपरक सिद्धांत उन्मुखता (Universal Ethical Principle Orientation)

इस अवस्था में अपने नैतिक नियमों को प्रोत्साहित करने तथा आत्म निंदा से बचने का अभिप्रेरण तीव्र होता है। यह उच्चतम सामाजिक-स्तर होता है जहाँ किशोरों में सार्वत्रिक (Universal) नैतिक नियमों की नैतिकता रहती है।

- आत्मसम्मान व स्वाभिमान में वृद्धि।
- अधिक भावुक प्रवृत्ति।

किशोरावस्था में सामाजिक विकास

- व्यापक सामाजिक दायरा।
- विपरीत समूह के प्रति आकर्षण एवं मित्रता।
- सामाजिक उत्तरदायित्वों को जानना।
- मित्रता प्रवृत्ति।
- स्वतंत्रता की भावना।
- माता-पिता के प्रति विद्रोह।
- मित्रों का परामर्श अधिक प्रिय।
- अनावश्यक अंकुश के कारण कुसमायोजन।

किशोरावस्था के विकासात्मक कार्य

- शारीरिक व मानसिक कार्यों का उचित संपादन।
- यौन व्यवहार में परिपक्वता अर्जित करना।
- अधिक आत्म निर्भरता की ओर बढ़ाना।
- समुदाय, सामाजिक समूह, संस्कृतियों के प्रति त्याग की भावना।
- मानसिक, संवेगात्मक व सामाजिक परिपक्वता।
- संज्ञानात्मक योग्यताओं का विकास।
- स्थूल या सूक्ष्म सभी कार्य हेतु सक्षम।
- नवीन संबंध स्थापित करना सीखना।
- अलग पहचान की ओर बढ़ना।
- आत्म निर्भरता की प्रवृत्ति।

महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. बालक के विकास के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौनसा कथन सत्य है? [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2019]

(A) विकास केवल आनुवंशिकी का परिणाम है।
(B) विकास सतत् प्रक्रिया नहीं है।
(C) विकास की गति बालक और बालिकाओं में एक समान होती है।
(D) विकास सामान्य से विशिष्ट की ओर अग्रसर होता है। **[D]**

2. किशोरों के शारीरिक विकास के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौनसा कथन असत्य है? [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2019]

(A) द्वितीयक लैंगिक लक्षणों (विशेषताओं) का विकास
(B) शारीरिक क्रियाओं और योग्यताओं में वृद्धि
(C) मांसपेशीय ताकत में वृद्धि
(D) शरीर के अनुपात में कोई परिवर्तन न होना। **[D]**

3. विकास की कौनसी अवस्था में नार्सिज्म (स्वप्रेम की भावना) का गुण अत्यंत प्रबल होता है? [वरिष्ठ अध्यापक संस्कृत शिक्षा परीक्षा 2019]

(A) शैशवावस्था (B) बाल्यावस्था
(C) आरंभिक वयस्कावस्था (D) उत्तर किशोरावस्था **[A]**

4. किशोरावस्था को तनाव एवं तूफान की अवस्था किसने कहा? [वरिष्ठ अध्यापक संस्कृत शिक्षा परीक्षा 2019]

(A) रॉव (B) वेलेंटाइन
(C) स्टैनले हॉल (D) बिग्गी तथा हंट **[C]**

5. किशोरावस्था के अंत तक माँसपेशियों का भार शरीर के कुल भार का कितने प्रतिशत हो जाता है? [वरिष्ठ अध्यापक संस्कृत शिक्षा परीक्षा 2019]

(A) 33 प्रतिशत (B) 45 प्रतिशत
(C) 40 प्रतिशत (D) 21 प्रतिशत **[B]**

6. निम्नलिखित में से कौनसी जीन पियाजे द्वारा प्रदत्त मूर्त संक्रियात्मक अवस्था की विशेषता नहीं है? [वरिष्ठ अध्यापक संस्कृत शिक्षा परीक्षा 2019]

(A) विचारों की विलोमीयता
(B) संरक्षण
(C) क्रमबद्धता व पूर्ण अंश प्रत्ययों का उपयोग
(D) संकेतात्मक कार्यों का प्रादुर्भाव **[D]**

7. किस मनोवैज्ञानिक ने सामाओ के द्वीप पर अनुदैर्ध्य अध्ययन किये थे? [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2017]

(A) हॉलिगवर्थ (B) मार्गरेट मीड
(C) स्टैनले हाल (D) फ्रायड **[B]**

8. मानव विकास के संबंध में कौनसा कथन गलत है? [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2017]

(A) विकास रेखीय होता है।
(B) विकास पूर्वानुमेय होता है।
(C) विकास निरंतर होने वाली प्रक्रिया है।
(D) विकास सामान्य से विशिष्ट की ओर चलता है। **[A]**

9. निम्नलिखित में से कौनसा कथन बालक और प्रौढ़ के संवेगों के बारे में सही नहीं है? [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2017]

(A) बालक प्रौढ़ से अधिक स्वैच्छिक रूप से संवेगों को प्रदर्शित करता है।
(B) बालक के संवेग प्रौढ़ों की तुलना में कम होते हैं।
(C) बालक प्रौढ़ की तुलना में क्षीण उद्दीपन के प्रति भी संवेगात्मक व्यवहार करता है।
(D) प्रौढ़ के संवेग बालक की तुलना में तुरंत (जल्दी) परिवर्तित होते हैं। **[D]**

10. निम्नलिखित में से कौनसी अवस्था में शारीरिक विकास की दर सबसे धीमी गति से होती है? [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2017]

(A) किशोरावस्था (B) बाल्यावस्था
(C) शैशवावस्था (D) भ्रूणावस्था **[B]**

11. निम्नलिखित में से कौनसा कथन एक बालक का एक व्यक्ति के रूप में विकास के बारे में सही है? [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2018]

4 अधिगम/सीखना [Learning]

अधिगम : अर्थ एवं परिभाषाएँ
(Learning : Meaning and Definition)

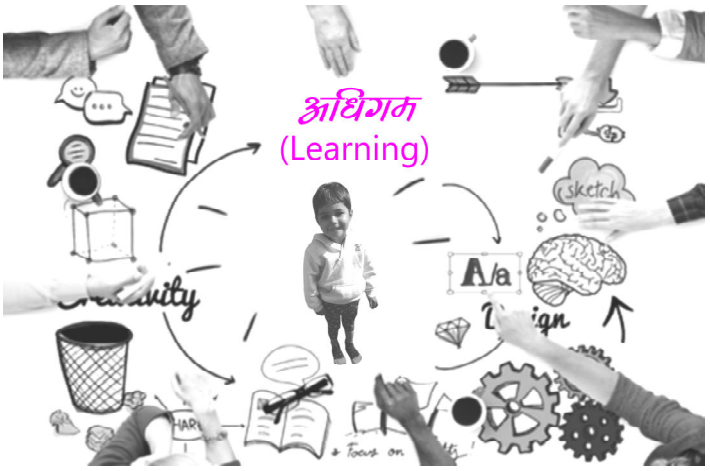

- जीवन सतत परिवर्तनशील एवं गतिमान है। एक नवजात शिशु कुछ स्वचालित सहज क्रियाओं के साथ पैदा होता है लेकिन वयस्क होते-होते वह कई जटिल व्यवहारों को करने में समर्थ हो जाता है, यह सीखने से ही संभव हो पाता है।
- सीखना या अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जिसे व्यक्ति उचित तरीके से तथा पूर्ण मनोयोग से संपादित करें तो व्यक्ति वह बन सकता है जो वह बनना चाहता है। अधिगम की प्रक्रिया के कारण ही डॉ. होमी जहाँगीर भाभा, विक्रम साराभाई, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जैसे वैज्ञानिक; महात्मा गाँधी, डॉ. भीमराव अम्बेडकर, नेताजी सुभाष चंद्र बोस जैसे राष्ट्रीय नेता; अभिनव बिंद्रा, नीरज चौपड़ा, सचिन तेंदुलकर जैसे खिलाड़ियों के महान व्यक्तित्व का निर्माण हुआ।
- सामान्य अर्थ में अधिगम व्यवहार में परिवर्तन को कहा जाता है लेकिन सभी तरह से व्यवहार में हुए परिवर्तनों को सीखना नहीं कहा जाता है। व्यवहार में परिवर्तन थकान, परिपक्वता, दवा को खाने, बीमारी, अभिप्रेरणात्मक स्थिति में उतार-चढ़ाव आदि से भी होते हैं, परंतु ऐसे परिवर्तनों को अधिगम नहीं कहा जाता इसके साथ-साथ व्यवहार में होने वाले अस्थाई एवं क्षणिक परिवर्तनों को भी अधिगम में सम्मिलित नहीं किया जाता।
- मनोविज्ञान में अधिगम से तात्पर्य व्यवहार में होने वाले उन्हीं परिवर्तनों से हैं जो अभ्यास अनुभव एवं प्रशिक्षण के फलस्वरूप होते हैं।

अत: उपर्युक्त विवरण के आधार पर हम कह सकते हैं कि—

अभ्यास, अनुभव एवं प्रशिक्षण के फलस्वरूप व्यवहार में सापेक्ष (Relative) एवं अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन को अधिगम कहते हैं।

- **गिलफोर्ड** के अनुसार, "सीखना व्यवहार के फलस्वरूप व्यवहार में कोई भी परिवर्तन है।"
- **गेट्स** एवं अन्य के अनुसार, "अनुभव एवं प्रशिक्षण के द्वारा व्यवहार में परिवर्तन को सीखना कहते हैं।"
- **सारटेन, नॉर्थ, स्ट्रेंज** तथा **चैपमैन** के अनुसार, "सीखना एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा अनुभूति या अभ्यास के फलस्वरूप व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थाई परिवर्तन होता है।"
- **गार्डनर मरफी** के अनुसार, "सीखना या अधिगम शब्द में वातावरण संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यवहार में होने वाले सभी प्रकार के परिवर्तन सम्मिलित है।"
- **वुडवर्थ** के अनुसार, "किसी भी ऐसी क्रिया को जो व्यक्ति के विकास में सहायक होती है, उसे सीखने की संज्ञा दी जा सकती है।"
- **किंगस्ले** एवं **गैरी** के अनुसार, "अभ्यास अथवा प्रशिक्षण के फलस्वरूप नवीन तरीके से व्यवहार करने अथवा व्यवहार में परिवर्तन लाने की प्रक्रिया को सीखना कहते हैं।"
- **स्कीनर** के अनुसार, "अधिगम व्यवहार में क्रमिक सामंजस्य की प्रक्रिया है।"
- **क्रो व क्रो** के अनुसार, "सीखना आदतों, ज्ञान और अभिवृत्तियों का अर्जन है।"
- **थॉर्नडाइक** के अनुसार, "उपयुक्त अनुक्रिया के चयन तथा उसे उत्तेजना से जोड़ने को अधिगम कहते हैं।"
- **हिलगार्ड** के अनुसार, "सीखना या अधिगम वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई क्रिया आरंभ होती है अथवा परिस्थिति से सामना होने पर प्रक्रिया द्वारा परिवर्तित की जाती है बशर्ते क्रिया में होने वाले परिवर्तन की विशेषताओं को मूल प्रवृत्तियों, परिपक्वता या प्राणी की अस्थाई अवस्थाओं के आधार पर नहीं समझाया जा सके।"

सीखने/अधिगम की विधियाँ
(Methods of learning)

❖ किसी भी विषय, पाठ या कौशल को सीखने के लिए जिन विधियों का सहारा लिया जाता है, उन्हें सीखने की विधियाँ कहा जाता है। सीखने की अनेक विधियाँ हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख का वर्णन अग्रलिखित है—

1. पूर्ण विधि तथा अंश विधि (Whole Method and Part Method)

जब अधिगमकर्ता या छात्र किसी विषय या पाठ को प्रारंभ से अंत तक एक साथ पढ़कर सीखता है तो इसे पूर्ण विधि कहा जाता है और जब वह उस पाठ या विषय को अनेक अंशों/भागों में बांटकर एक-दूसरे के बाद सीखता है तो इसे अंश विधि कहा जाता है।

2. साभिप्राय सीखना तथा प्रासंगिक सीखना (Intentional Learning and Incidental Learning)

जब व्यक्ति अपनी इच्छा तथा एक निश्चित उद्देश्य के साथ किसी कार्य या पाठ को सीखता है तो उसे साभिप्राय सीखना कहा जाता है। जब व्यक्ति किसी विषय या पाठ को निश्चित उद्देश्य तथा इच्छा के बिना ही अपने आप सीख लेता है तो इसे प्रासंगिक सीखना कहा जाता है।

2. विराम विधि तथा अविराम विधि (Intermittent Method and Continuous Methods)

विराम विधि में छात्र थोड़ा विश्राम दे-देकर किसी कार्य या पाठ को सीखते हैं, जबकि अविराम विधि में इस तरह का विश्राम नहीं दिया जाता है और सीखने के लिए जो निर्धारित समय होता है, छात्र उसमें लगातार कार्य करके पाठ या विषय को सीखता है।

हॉवलैंड तथा गिलफोर्ड ने इन दोनों विधियों का तुलनात्मक अध्ययन कर यह बतलाया कि जब सीखा जाने वाला पाठ या विषय काफी लंबा तथा कठिन होता है जिसमें सूझ तथा समझ की अधिक जरूरत पड़ती है तो ऐसी परिस्थिति में विराम विधि अविराम विधि से श्रेष्ठ होती है, लेकिन जब सीखा जाने वाला विषय या पाठ छोटा तथा रटने वाला हो तो वैसी स्थिति में अविराम विधि श्रेष्ठ होती है।

4. अनुकरण/प्रेक्षण विधि (Observational Method)

इस विधि के अंतर्गत बालक दूसरों के क्रियाकलापों एवं व्यवहारों से प्रभावित होकर अनुकरण या नकल करके सीखता है।

5. क्रिया विधि (Action Method)

यह विधि करके सीखना सिद्धांत पर आधारित है। बालक इसमें किसी कार्य को स्वयं करते हैं और उस कार्य को सीख लेते हैं।

अधिगम के सिद्धांत
(Theories of learning)

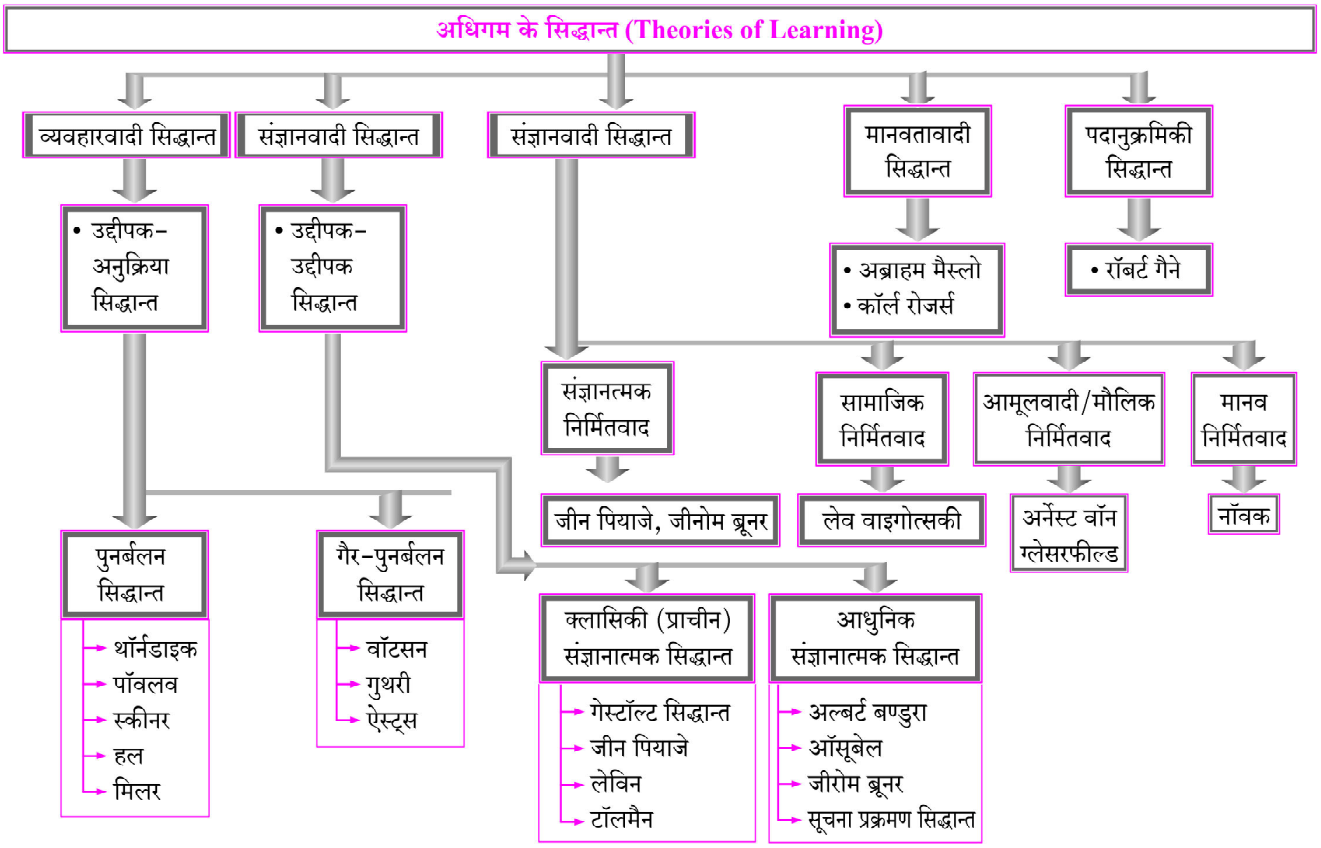

अधिगम के निर्मितवादी/रचनावादी/ज्ञान संरचनावादी सिद्धान्त (Constructivist theories of learning)

संज्ञानात्मक निर्मितवाद (Cognitive constructivism)	सामाजिक निर्मितवाद (Social constructivism)	आमूलवादी/मौलिक निर्मितवाद (Radical constructivism)	मानव निर्मितवाद (Human constructivism)
• जीन पियाजे • जीरोम-ब्रूनर	• लेव वाइगोत्सकी	• अर्नेस्ट वॉन ग्लेसर फील्ड	• नॉवक

अधिगम के निर्मितवादी सिद्धांतों को मुख्यत: चार भागों में बांटकर अध्ययन किया जाता है।

(1) संज्ञानात्मक निर्मितवाद
(2) सामाजिक निर्मितवाद
(3) आमूलवादी/मौलिक निर्मितवाद
(4) मानव निर्मितवाद

1. संज्ञानात्मक निर्मितवाद (Cognitive Constructivism)

संज्ञानात्मक निर्मितवाद में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान **जीन पियाजे** का माना जाता है। इसके साथ-साथ **जीरोम ब्रूनर** के निर्मितवादी सिद्धांत को संज्ञानात्मक निर्मितवाद की श्रेणी में ही रखा जाता है।

- संज्ञानात्मक निर्मितवाद/रचनावाद में इस बात पर बल दिया जाता है कि अधिगमकर्ता व्यक्तिगत रूप से बौद्धिक संरचनाओं या मानसिक संरचनाओं को किस प्रकार से स्वीकार करते हैं तथा इन बौद्धिक संरचनाओं और मानसिक संरचनाओं को स्वीकार करके किस प्रकार ज्ञान को सृजन/निर्माण में करते हैं।
- संज्ञानात्मक निर्मितवाद ज्ञान के सृजन/निर्माण में मानसिक प्रक्रियाओं/बौद्धिक प्रक्रियाओं के महत्त्व को अधिक स्वीकार करते हैं।
- संज्ञानात्मक निर्मितवाद में शिक्षक छात्रों को कठिनाई प्रस्तुत करते हैं तथा छात्र स्वयं संज्ञानात्मक परिवर्तन तथा मानसिक प्रक्रियाओं में जोड़-तोड़ करके समस्याओं का हल निकालते हैं।

2. सामाजिक निर्मितवाद (Social Constructivism)

- सामाजिक निर्मितवाद में सर्वाधिक योगदान **'वाइगोत्सकी'** का है तथा वाइगोत्सकी को ही सामाजिक निर्मितवाद का प्रतिपादक माना जाता है।
- सामाजिक निर्मितवाद में इस बात को स्वीकार किया गया है कि ज्ञान (Knowledge) के व्यक्ति एवं समाज दो भाग होते हैं एवं इन्हें अलग-अलग नहीं किया जा सकता। 'व्यक्ति' पर्यावरण एवं सामाजिक मध्यस्थता के कारण ही ज्ञान की संरचना करता है तथा नवीन ज्ञान का सृजन कर पाता है अर्थात् सामाजिक निर्मितवाद में ज्ञान के अर्जन, सृजन एवं संरचना के लिए समाज को महत्त्व दिया गया है, समाज के बिना व्यक्ति किसी भी प्रकार के ज्ञान का निर्माण नहीं कर सकता ऐसा सामाजिक निर्मितवादियों का मानना है।

3. आमूलवादी/मौलिक निर्मितवाद (Radical Constructivism)

- मौलिक रचनावाद का प्रतिपादक **'अर्नेस्ट वॉन ग्लेसरफील्ड'** को माना जाता है।
- इनके अनुसार ज्ञान व्यक्तिगत रूप से सृजित होता है जो व्यक्ति के अनन्य अनुभव पर आधारित होता है तथा यह ज्ञान एक वास्तविकता पर आधारित न होकर अनेक वास्तविकताओं पर आधारित होता है।

4. मानव निर्मितवाद (Human Constructivism)

- प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक **'नॉवक'** ने भी रचनावाद के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए इनके निर्मितवाद/रचनावाद को 'मानव रचनावाद' कहा जाता है। नॉवक के अनुसार सीखना एक क्रमिक युग्म होता है तथा मानव इस दौरान अपने पूर्व ज्ञान तथा नवीन ज्ञान के मध्य संबंध स्थापित करता है।

अधिगम के मानवतावादी सिद्धांत
Humanistic Theories of Learning)

- मानवतावादी विचारधारा में विश्वास रखने वाले मनोवैज्ञानिकों द्वारा मानवतावादी अधिगम सिद्धांतों को प्रतिपादित किया गया। मनोविज्ञान में इस विचारधारा के प्रमुख समर्थकों में **अब्राहम मैस्लो, कॉर्ल रोजर्स, जोहन हाल्ट** तथा **मेकॉम नॉवल्स** जैसे मनोवैज्ञानिकों को रखा जाता है।
- अब्राहम मैस्लो ऐसे पहले मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने मनोविज्ञान के विकास में पहली बार मानवतावादी विचारधारा को अहम स्थान दिया तथा इसे मनोविज्ञान की तीसरी शक्ति (Third Force) के रूप में संबोधित किया।
- मानवतावाद एक तरह से यांत्रिकतावाद तथा अमानवीय विचारधाराओं के प्रति प्रतिक्रिया के स्वरूप में अस्तित्त्व में आया। इस विचारधारा का मानना है कि मनुष्य के साथ वस्तुओं या मशीनों की तरह व्यवहार नहीं किया जा सकता, मानव को समझने के लिए मानवीय ढंग से पेश आना चाहिए तथा मानव की वैयक्तिकता एवं आत्म को ध्यान में रखा जाना चाहिए अर्थात् मानवतावादी दृष्टिकोण मनोविज्ञान में मानव को महत्त्वपूर्ण एवं विशिष्ट स्थान दिए जाने का पक्षधर है तथा इसका मानना है कि मानव के व्यवहार का अध्ययन मानवीय स्वरूप में होना चाहिए ना कि यांत्रिकता या पशुओं के व्यवहार को आधार बनाकर।
- मानवतावादी अधिगम सिद्धांतों में मुख्यत: दो सिद्धांतों को सम्मिलित किया गया है—

5. आदर्शों एवं मूल्यों का सिद्धांत (Theory of Ideals and Values)

इस सिद्धांत का प्रतिपादन डब्ल्यू.सी. बेगले द्वारा किया गया। इनके अनुसार स्थानांतरण के मूल में आदर्श एवं मूल्य होते हैं। इन आदर्शों एवं मूल्यों का एक परिस्थिति से दूसरी परिस्थिति में स्थानांतरण होता है। अत: बच्चों में आदर्शों एवं मूल्यों के स्थानांतरण के समुचित प्रयास करने चाहिए। एक बार आदर्शों की नीवं पड़ने पर स्थानांतरण जीवन के हर क्षेत्र में होता रहता है। जैसे–अगर कोई बालक किसी कार्य को नैतिकतापूर्वक सीख लेता है तो वह जिस कार्य को भी करेगा उसमें नैतिकता का हमेशा ध्यान रखेगा।

अधिगम असहायता/निस्सहायता (Learning Helplessness)

सैलिगमैन तथा मायर (Saligman & Maier) ने सर्वप्रथम अधिगम असहायता की परिघटना को कुत्तों पर किये गये अध्ययन में पाया । उन्होने कुत्तों के एक समूह को प्राचीन अनुबंधन विधि से ध्वनि तथा विद्युत आघात दिया, जिसमें ये कुत्ते किसी भी तरह से आघात से नहीं बच सकते थे। इसके बाद उन्होने इन कुत्तों को ऐसी परिस्थिति में रखा जिसमें कुत्ते ध्वनि के पश्चात पिंजरे के दूसरी ओर कूद कर विद्युत आघात से बच सकते थे।

सैलिगमैन तथा उनके साथियों ने पाया कि इस समूह के कुत्तों ने विद्युत आघात से बचने का कोई प्रयास नही किया और इन्होने आघात सहन किया। दूसरे समूह के कुत्ते जिन्हें प्रथम परिस्थिति में नहीं रखा गया था वे ध्वनि की आवाज के बाद कूद कर आघात से बचने लगे।

यह परिघटना मनुष्यों में भी पाई जाती है। लगातार अफलता के बाद व्यक्ति कार्य के प्रति अपने प्रयासों को छोड़ देता है। अध्ययनों से प्रमाणित हुआ है कि अवसाद (Depression) का एक कारण अधिगम असहायतापन है। (स्रोत : RBSE)

अधिगम वक्र (Learning Curve)

- अधिगम की प्रगति या अवनति को दिखाने वाली वक्र रेखा को अधिगम वक्र कहा जाता है।
- यह वक्र सीखने की मात्रा तथा अभ्यास/प्रयास के बीच एक खास संबंध को बताता है।

अधिगम वक्र के चार प्रमुख प्रकार होते हैं—

1. समान निष्पादन वक्र (Curve of Equal Returns)

इसे रेखीय त्वरण वक्र भी कहा जाता है। इस वक्र का आकार एक सीधी रेखा के समान होता है। इस वक्र से यह स्पष्ट रूप से पता चलता है कि प्रत्येक प्रयास में सीखने की मात्रा या निष्पादन समान गति से बढ़ रहा है।

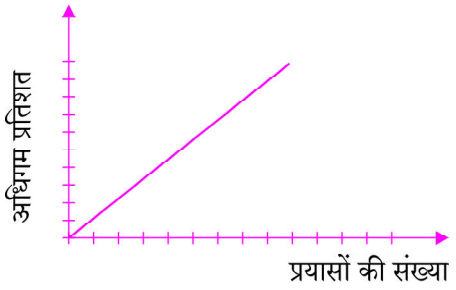

चित्र : समान निष्पादन वक्र

2. वर्धमान अधिगम या धनात्मक त्वरण वक्र (Curve of Increasing Returns or Positive Acceleration Curve)

यह वक्र तब बनता है जब प्रारंभ के प्रयासों में सीखने की गति धीमी होती है और बाद के प्रयासों में यह गति तीव्र हो जाती है, जिसके फलस्वरूप अधिगम वक्र तेजी से ऊपर उठता है।

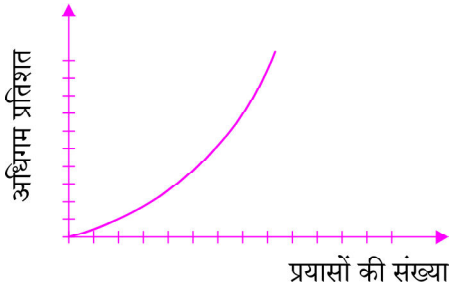

चित्र : वर्धमान अधिगम

इस तरह का अधिगम वक्र वैसी स्थिति में बनता है जब अधिगमकर्ता को कोई कठिन कार्य सीखने के लिए दिया जाता है, स्वभावत: कार्य कठिन होने पर प्रारंभ में सीखने की गति धीमी होती है तथा कुछ अभ्यास हो जाने के बाद उसकी गति तीव्र हो जाती है।

3. ह्रास निष्पादन वक्र या ऋणात्मक त्वरण वक्र (Curve of Decreasing Returns or Negative Acceleration Curve)

इस वक्र से यह पता चलता है कि प्रारंभ के प्रयासों में सीखने की गति तीव्र होती है परंतु बाद के प्रयासों में यह गति धीमी हो जाती है क्योंकि प्रयोज्य निष्पादन के उच्चतम शिखर के करीब आ जाता है। यदि एक सीमा के बाद भी अभ्यास किया जाता है तो वैसी परिस्थिति में प्रत्येक प्रयास के बाद निष्पादन में कोई वृद्धि नहीं होती है और कभी–कभी थकान, अनिच्छा आदि के कारण निष्पादन में ह्रास होना भी प्रारंभ हो जाता है।

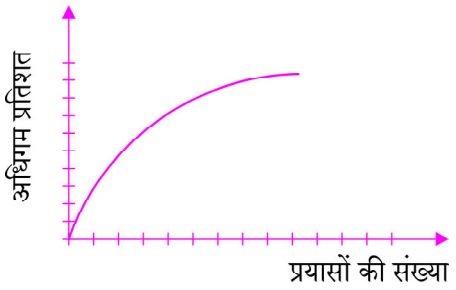

चित्र : ह्रास निष्पादन वक्र

4. बी.एफ. स्कीनर का अधिगम सिद्धांत मुख्यत: प्रयोगशाला प्रयोगों पर आधारित था, जबकि हल का सिद्धांत किस पर आधारित था? [वरिष्ठ अध्यापक संस्कृत शिक्षा परीक्षा 2019]

(A) परिकल्पनाओं पर
(B) गणितीय गणनाओं पर
(C) प्रयोगशाला से बाहर किए गए प्रयोग पर
(D) सामाजिक अधिगम पर **[B]**

5. निम्नलिखित में से कौनसा अधिगम का निर्मितवादी विचार नहीं है? [वरिष्ठ अध्यापक संस्कृत शिक्षा परीक्षा 2019]

(A) अधिगम वैसा का वैसा (हूबहू) संप्रत्यात्मक स्कीमा है।
(B) अधिगम एक सक्रिय अर्थ निर्माण प्रक्रिया है।
(C) नया अधिगम अधिगमकर्ता के पूर्व अधिगम पर आधारित होता है।
(D) अधिगम सामाजिक अंत:क्रिया द्वारा सुगम होता है। **[A]**

6. गैने के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन से आठ में से चार अधिगम प्रकारों का सही पदानुक्रमिक क्रम है? [वरिष्ठ अध्यापक संस्कृत शिक्षा परीक्षा 2019]

(A) संप्रत्यय-सिद्धांत-बहुविभेदीकरण-समस्या समाधान
(B) सिद्धांत-बहुविभेदीकरण-संप्रत्यय-समस्या समाधान
(C) समस्या समाधान-संप्रत्यय-सिद्धांत-बहुविभेदीकरण
(D) बहुविभेदीकरण-संप्रत्यय-सिद्धांत-समस्या समाधान **[D]**

7. निम्नलिखित में से कौनसा कथन अधिगम के बारे में सर्वाधिक उपयुक्त है? [वरिष्ठ अध्यापक संस्कृत शिक्षा परीक्षा 2019]

(A) यह प्रक्रिया है उत्पाद नहीं।
(B) यह अप्रकट प्रक्रिया है।
(C) यह अनायास होता है।
(D) यह व्यवहार में अस्थायी परिवर्तन है। **[A]**

8. निम्नलिखित में से कौनसी अधिगम की सही विशेषता नहीं है? [वरिष्ठ अध्यापक संस्कृत शिक्षा परीक्षा 2019]

(A) अधिगम कोई परिणाम न होकर एक प्रक्रिया है।
(B) अधिगम प्रक्रिया सदैव ही उद्देश्यपूर्ण होती है।
(C) अधिगम अभ्यास, प्रशिक्षण तथा अनुभव पर आधारित होता है।
(D) मूल प्रवृत्ति तथा प्रतिक्षेपी क्रिया की वजह से व्यवहार में आया परिवर्तन अधिगम है। **[D]**

9. सीखने की प्रक्रिया एवं सूझ की दृष्टि से निम्नलिखित में से कौनसी विशेषता गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों द्वारा निर्धारित नहीं की गई है? [वरिष्ठ अध्यापक संस्कृत शिक्षा परीक्षा 2019]

(A) अधिगम की प्रकृति संज्ञानात्मक होती है।
(B) अधिगम प्रक्रिया यंत्रवत होती है।
(C) अधिगम की प्रकृति लगभग स्थाई होती है।
(D) सूझ के लिए समस्यात्मक परिस्थिति का होना आवश्यक है। **[B]**

10. एक अध्यापक ने कक्षा में पढ़ाया कि हाउस का बहुवचन हाउसेस तो इसी अधिगम से विद्यार्थी ने माउस का बहुवचन माउसेस कर दिया। यह उदाहरण किस प्रकार के अधिगम स्थानांतरण का उदाहरण है? [वरिष्ठ अध्यापक संस्कृत शिक्षा परीक्षा 2019]

(A) धनात्मक स्थानांतरण (B) ऋणात्मक स्थानांतरण
(C) शून्य स्थानांतरण (D) द्विपार्श्विक स्थानांतरण **[B]**

11. निम्नलिखित में से कौनसा घटक क्लासीकल अनुबंधन सिद्धांत से संबंधित नहीं है? [वरिष्ठ अध्यापक संस्कृत शिक्षा परीक्षा 2019]

(A) ढालना (B) उत्तेजन
(C) विलोपन (D) स्वत: पुनर्लाभ **[A]**

12. निम्न में से गलत युग्म कौनसा है? [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2018]

(A) अधिगम का साइन सिद्धांत-टॉलमैन
(B) अधिगम का क्षेत्रीय सिद्धांत-लेविन
(C) सामाजिक अधिगम सिद्धांत-ब्रूनर
(D) प्रयत्न त्रुटि अधिगम सिद्धांत-थॉर्नडाइक **[C]**

13. निम्नांकित में थॉर्नडाइक के अनुसार अधिगम का प्राथमिक नियम है? [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2018]

(A) सादृश्य का नियम (B) अभ्यास का नियम
(C) आत्मीकरण का नियम (D) मनोवृत्ति का नियम **[B]**

14. अधिगम बाधित/असमर्थ बच्चे अधिगम.....होते हैं। [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2017]

(A) आक्रामक (B) संगठित
(C) संगत (D) निम्न उपलब्धि वाले **[D]**

15. ''सीखना विकास की प्रक्रिया है।'' कथन किसके द्वारा कहा गया? [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2017]

(A) वुडवर्थ (B) योकम
(C) सिंपसन (D) डॉ. मैफे **[A]**

16. निम्नलिखित में से कौन एस.आर. अधिगम सिद्धांत से संबद्ध नहीं है? [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2017]

(A) थॉर्नडाइक (B) स्किनर
(C) पावलॉव (D) ब्रूनर **[D]**

17. अल्बर्ट बण्डूरा द्वारा दिए गए अधिगम सिद्धांत को .... से भी जाना जाता है। [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2017]

(A) अंत: दृष्टि अधिगम सिद्धांत
(B) अवलोकनात्मक अधिगम सिद्धांत
(C) चिह्न अधिगम सिद्धांत
(D) मौखिक अधिगम सिद्धांत **[B]**

18. ''ज्ञान एवं अभिवृत्ति की प्राप्ति अधिगम है'', अधिगम की उपर्युक्त परिभाषा दी है- [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2013]

(A) क्रो एवं क्रो ने (B) किग्सले एवं गेरी ने
(C) हिलगार्ड ने (D) वुडवर्थ ने **[A]**

5 व्यक्तित्व [Personality]

व्यक्तित्व : अर्थ एवं परिभाषाएँ
(Personality : Meaning and Definitions)

- व्यक्तित्व अंग्रेजी शब्द 'पर्सनलटी' (Personality) का हिंदी रूपांतरण है एवं पर्सनलटी शब्द लैटिन भाषा के शब्द पर्सोना (Persona) से बना है जिसका अर्थ मुखौटा/नकाब (Mask) होता है, जिसे नायक/अभिनेता नाटक करते समय पहनते हैं।
- इस प्रकार शाब्दिक दृष्टि से व्यक्तित्व का अर्थ बाहरी वेशभूषा तथा दिखावे से है, लेकिन शाब्दिक दृष्टि से व्यक्तित्व की सम्पूर्ण व्याख्या नहीं होती है।
- वर्तमान समय में व्यक्तित्व के अंतर्गत व्यक्ति के बाह्य व्यक्तित्व एवं आंतरिक व्यक्तित्व दोनों को सम्मिलित किया जाता है।
- व्यक्तित्व के अंतर्गत व्यक्ति के बाह्य दिखावे अर्थात शारीरिक गठन एवं आंतरिक गुणों एवं योग्यताओं को सम्मिलित किया जाता है।
- मनोवैज्ञानिक शब्दों में व्यक्तित्व से तात्पर्य उन विशिष्ट तरीकों से है जिनके माध्यम से व्यक्ति अन्य व्यक्तियों और स्थितियों के प्रति अनुक्रिया करता है।
- व्यक्तित्व के अध्ययन की सहायता से लोग सरलता से इस बात का वर्णन कर सकते हैं कि व्यक्ति किस तरह से विभिन्न स्थितियों के प्रति अनुक्रिया करते हैं।
- कुछ शब्द जैसे—शर्मीला, संवेदनशील, शांत, गंभीर, स्फूर्तिवान इत्यादि का प्रयोग सामान्यत: व्यक्तित्व का वर्णन करने के लिए किया जाता है। ये शब्द व्यक्तित्व के विभिन्न घटकों को इंगित करते हैं, इस अर्थ में व्यक्तित्व से तात्पर्य उन अनन्य एवं सापेक्षित रूप से स्थिर गुणों से है जो एक समयावधि में विभिन्न स्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार को विशिष्टता प्रदान करते हैं।
- **ऑलपोर्ट** के अनुसार, ''व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोशारीरिक तंत्रों का गतिशील या गत्यात्मक संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करता है।''
- **आइजेंक** के अनुसार, ''व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र, चित्त-प्रकृति, ज्ञान-शक्ति तथा शरीर गठन का करीब-करीब एक स्थाई एवं टिकाऊ संगठन है जो वातावरण में उसके अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है।''
- **आर.बी. कैटल** के अनुसार, ''व्यक्तित्व वह है जिसके द्वारा हम यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि कोई व्यक्ति किस परिस्थिति में क्या करेगा?''
- **वॉटसन** के अनुसार, ''विश्वसनीय सूचना प्राप्त करने के दृष्टिकोण से काफी लंबे समय तक वास्तविक निरीक्षण या अवलोकन करने के पश्चात् व्यक्ति में जो भी क्रियाएँ अथवा व्यवहार का जो भी रूप पाया जाता है उसे उसका व्यक्तित्व कहा जाता है।''
- **चाइल्ड** के अनुसार, ''व्यक्तित्व से तात्पर्य स्थायी आंतरिक कारकों से होता है जो व्यक्ति के व्यवहार को एक समय से दूसरे समय में संगत बनाता है तथा तुल्य परिस्थितियों में अन्य लोगों के व्यवहार से अलग करता है।''
- **वुडवर्थ** के अनुसार, ''व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहार की एक समग्र विशेषता है।''
- **गिलफोर्ड** के अनुसार, ''व्यक्तित्व गुणों का समन्वित रूप है।''
- **जेम्स ड्रेवर** के अनुसार, ''व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और सामाजिक गुणों के उस एकीकृत तथा गत्यात्मक संगठन के लिए किया जाता है जिसे व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के साथ अपने सामाजिक जीवन के आदान-प्रदान में व्यक्त करता है।''
- **बिग** तथा **हंट** के अनुसार ''व्यक्तित्व किसी व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यवहार प्रतिमान तथा इसकी समस्त विशेषताओं के योग को व्यक्त करता है।''

व्यक्तित्व से संबंधित शब्द

- **स्वभाव**—जैविक रूप से आधारित प्रतिक्रिया करने का विशिष्ट तरीका।
- **विशेषक या शीलगुण**—व्यवहार करने का स्थिर, सतत एवं विशिष्ट तरीका।
- **स्ववृत्ति**—किसी स्थिति विशेष में विशिष्ट तरीके से प्रतिक्रिया करने की व्यक्ति की प्रवृत्ति।
- **चरित्र**—नियमित रूप से घटित होने वाले व्यवहार का समग्र प्रतिरूप।
- **आदत**—व्यवहार करने का अत्यधिगत ढंग।
- **मूल्य**—लक्ष्य और आदर्श जो महत्वपूर्ण और उपलब्धि के योग्य माने जाते हैं। (स्रोत : **NCERT**)

I. प्रारूप/प्रकार उपागम सिद्धांत (Type Approach Theories)

प्रमुख **प्रारूप/प्रकार उपागम (Type Approach)** सिद्धांत अग्रलिखित हैं—

1. हिप्पोक्रेटस का सिद्धान्त (Theory of Hippocrates)

❖ सबसे पहले ग्रीक चिकित्सक हिप्पोक्रेटस ने व्यक्तित्व का एक प्रारूप विज्ञान प्रस्तावित किया जो शरीर द्रवों पर आधारित था। इन्होंने शरीर द्रवों के आधार पर व्यक्तित्व के 4 प्रकार बताए हैं।

❖ हिप्पोक्रेटस के अनुसार व्यक्ति के शरीर में चार मुख्य द्रव पाए जाते हैं–

(i) **पीला पित्त (Yellow Bile)**—जिस व्यक्ति में पीले पित्त की प्रधानता होती है, उस व्यक्ति का स्वभाव चिड़चिड़ा होता है और वह प्रायः बैचेन दिखाई देता है। इस तरह के प्रकार को हिप्पोक्रेटस ने गुस्सैल (Choleric) कहा है।

(ii) **काला पित्त (Black Bile)**—जब व्यक्ति में काले पित्त की प्रधानता होती है तो वह प्राय उदास तथा मंदित नजर आता है, इस तरह के प्रकार को विषादी या निराशावादी (Melancholic) कहा गया है।

(iii) **रक्त (Blood)**—जिस व्यक्ति में अन्य द्रवों की अपेक्षा रक्त की प्रधानता होती है वह प्रसन्न तथा खुशमिजाज होता है। इस तरह के व्यक्तित्व के प्रकार को उत्साही या आशावादी (Sanguine) कहा गया है।

(iv) **कफ या श्लेष्मा (Phlegm)**—जिस व्यक्ति में कफ या श्लेष्मा जैसे द्रव की प्रधानता होती है वह शांत स्वभाव का होता है तथा उसमें निष्क्रियता अधिक पाई जाती है। इस तरह के प्रकार को विरक्त (Phlegmatic) कहा गया है।

प्रत्येक व्यक्ति में इन चारों द्रवों में से कोई एक द्रव अधिक प्रधान होता है और व्यक्ति का स्वभाव इसी की प्रधानता से निर्धारित होता है–

2. शारीरिक गुणों के आधार पर (On the Basis of Physique)

❖ शारीरिक गुणों के आधार पर प्रतिपादित सिद्धांत को शरीर गठन सिद्धांत कहा गया है। शारीरिक गुणों के आधार पर दो मनोवैज्ञानिकों—(i) क्रेश्मर तथा (ii) शेल्डन द्वारा किया गया वर्गीकरण महत्त्वपूर्ण है।

(i) क्रेश्मर का सिद्धांत (Theory of Kretschmer)

❖ अर्नेस्ट क्रेश्मर ने अपनी पुस्तक 'फिजिक एण्ड कैरेक्टर' (Physique and Character) में शारीरिक गुणों के आधार पर व्यक्तित्व के 4 प्रकार बताए हैं, जो निम्नलिखित हैं—

(i) **स्थूलकाय प्रकार (Pyknic Type)**—ऐसे व्यक्ति का कद छोटा होता है तथा शरीर भारी एवं गोलाकार होता है। इस तरह के व्यक्ति सामाजिक होते हैं, खाने-पीने तथा सोने में काफी मजा लेते हैं एवं खुशमिजाज होते हैं।

(ii) **कृशकाय प्रकार (Asthenic Type)**—इस तरह के व्यक्ति का कद लंबा होता है परंतु वे दुबले-पतले शरीर के होते हैं। ऐसे लोगों का स्वभाव कुछ चिड़चिड़ा होता है इनमें सामाजिक उत्तरदायित्व से दूर रहने की प्रवृत्ति अधिक देखी जाती है तथा ये काल्पनिक दुनिया में खोए रहते हैं।

(iii) **पुष्टकाय प्रकार (Atheletic Type)**—इस प्रकार के व्यक्ति के शरीर की मांसपेशियाँ काफी विकसित एवं गठी हुई होती हैं। इनका पूरा शरीर सुडौल एवं संतुलित होता है।
ऐसे व्यक्ति के स्वभाव में न तो अधिक चंचलता और न ही अधिक मंदन होता है। ये बदलती हुई परिस्थिति के साथ आसानी से समायोजन कर लेते हैं।

(iv) **मिश्रितकाय/विशालकाय प्रकार (Dysplastic Type)**—इस श्रेणी में उन व्यक्तियों को रखा जाता है जिनमें उपर्युक्त तीन प्रकार में से किसी भी एक प्रकार का स्पष्ट गुण नहीं मिलता है बल्कि इन तीनों के मिले-जुले गुण होते हैं।

(ii) शेल्डन का सिद्धांत (Theory of Sheldon)

❖ शेल्डन ने शरीर गठन के आधार पर व्यक्तित्व का एक सिद्धांत बनाया जिसे सोमेटो टाइप (Somatotype) सिद्धांत कहा गया। शेल्डन ने बताया कि व्यक्तित्व को मूलत: 3 प्रकारों में विभक्त किया जा सकता है–

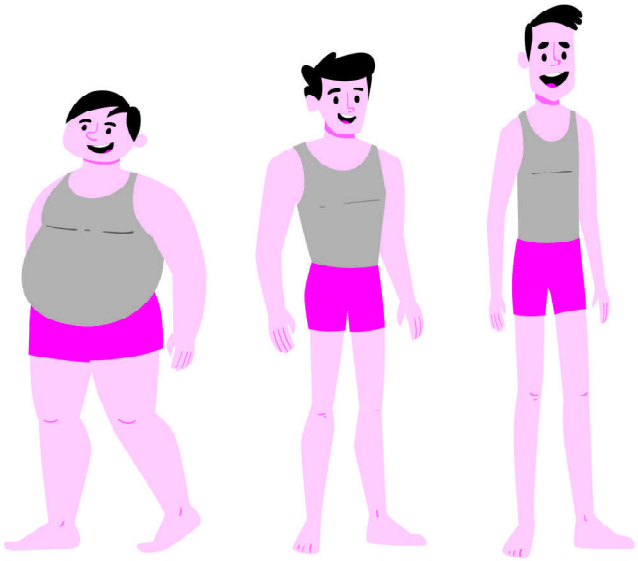

गोलाकार (Endomorphic) आयताकार (Mesomorphic) लंबाकार (Ectomorphic)

चित्र : शेल्डन का सोमेटो टाइप सिद्धांत

(i) **गोलाकार/एंडोमॉर्फिक (Endomorphic)**—इस प्रकार के व्यक्ति मोटे एवं नाटे होते हैं और इनका शरीर गोलाकार

1. **इदम् (ID)**—यह व्यक्तित्व का जैविक तत्त्व है जो मूल प्रवृत्तिक ऊर्जा का स्रोत है। इसका संबंध व्यक्ति की आदिम आवश्यकताओं, काम इच्छाओं और आक्रामक आवेगों की तात्कालिक संतुष्टि से होता है।
- ❖ यह आनंद सिद्धांत/सुखेप्सा सिद्धांत (Pleasure Principle) पर कार्य करता है जिसका अभिग्रह यह है कि लोग सुख की तलाश करते हैं और कष्ट का परिहार करते हैं।
- ❖ फ्रॉयड के अनुसार इदम् (ID) पूर्णत: अचेतन होता है, अत: इसका संबंध वास्तविकता से नहीं होता है।

2. **अहम् (Ego)**—अहम् व्यक्ति की मूल प्रवृत्तिक आवश्यकताओं की संतुष्टि वास्तविकता के धरातल पर करता है।
- ❖ व्यक्तित्व की यह संरचना वास्तविकता के सिद्धांत से संचालित होती है।
- ❖ अहम् को व्यक्तित्व का निर्णय लेने वाला या कार्यपालक शाखा माना गया है।
- ❖ अहम् अंशत: चेतन, अंशत: पूर्व चेतन तथा अंशत: अचेतन होता है, इसलिए अहम् द्वारा इन तीनों स्तर पर ही निर्णय लिया जाता है।

3. **पराहं/परा अहम् (Super Ego)**—इसे व्यक्तित्व की नैतिक शाखा माना गया है।
- ❖ यह आदर्शवादी सिद्धांत द्वारा निर्देशित एवं नियंत्रित होता है।
- ❖ पराहं, इदम् और अहम् को बताता है कि किसी विशेष अवसर पर इच्छा विशेष की संतुष्टि नैतिक है अथवा नहीं।

नोट—

इदम्, अहम् और पराहं की सापेक्ष शक्ति व्यक्तित्व की स्थिरता/संतुलन का निर्धारण करती है।

C. व्यक्तित्व/मनोलैंगिक विकास की अवस्थाएँ
(Stages of Personality/Psychosexual Development)

- ❖ फ्रायड ने व्यक्तित्व विकास का एक पंच अवस्था सिद्धांत प्रस्तावित किया जिसे मनोलैंगिक विकास (Psychosexual Development) के नाम से भी जाना जाता है।
- ❖ फ्रायड द्वारा प्रतिपादित मनोलैंगिक विकास की पाँच अवस्थाएँ निम्नांकित हैं–

1. **मुखावस्था/मौखिक अवस्था (Oral Stage)**–यह मनोलैंगिक विकास की पहली अवस्था है जो जन्म से लेकर करीब 1 साल तक की होती है।

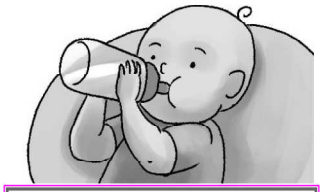

1. मुखावस्था (Oral Stage)

- ❖ इस अवस्था में नवजात शिशु की मूल प्रवृत्तियाँ मुख पर केंद्रित होती हैं यह शिशु का प्राथमिक सुख प्राप्ति केंद्र होता है। बच्चा मुँह द्वारा की जाने वाली सभी क्रियाओं जैसे–चूसना, निगलना, जबड़े से कोई चीज दबाना आदि से लैंगिक सुख (Sexual Pleasure) प्राप्त करता है।

2. **गुदावस्था (Anal Stage)**—यह अवस्था 2 से 3 साल की आयु के बीच होती है।
- ❖ इस अवस्था में कामुकता क्षेत्र मुँह से हटकर शरीर के गुदा (Anus) क्षेत्र में आ जाती है।

2. गुदावस्था (Anal Stage)

- ❖ अधिकांश बच्चे इस आयु में मूत्र त्याग एवं मल त्याग जैसी शारीरिक क्रियाओं को करने में आनंद का अनुभव करते हैं।

3. **लैंगिक अवस्था (Phallic Stage)**—यह अवस्था 4 से 5 साल के दौरान की अवस्था है।

3. लैंगिक अवस्था (Phallic Stage)

- ❖ इस अवस्था का कामुकता क्षेत्र जनेन्द्रिय (Genitals) होते हैं। इस अवस्था में लड़कों में ऑडिपस मनोग्रंथि (Oedipus Complex–माँ से प्रेम होना) तथा लड़कियों में इलेक्ट्रा मनोग्रंथि (Electra Complex–पिता से प्रेम होना) अनुभव होता है।

4. **काम प्रसुप्ति अवस्था/अव्यक्तावस्था (Latency Stage)**—यह अवस्था 6-7 साल की उम्र से प्रारंभ होकर लगभग 12 वर्ष तक रहती है।

4. काम प्रसुप्ति अवस्था (Catency Stage)

- ❖ इस अवस्था में बच्चों में कोई नया कामुकता क्षेत्र विकसित नहीं होता है, साथ ही साथ लैंगिक इच्छाएँ भी सुषुप्त हो जाती हैं।

है कि कोई व्यक्ति व्यक्तित्व सम्बन्धी गुणों के हिसाब से कैसा है। प्राय: इस तकनीक के माध्यम से हम किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व सम्बन्धी गुणों के बारे में किसी दूसरे व्यक्ति की सहायता से कुछ महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करते हैं। जो कुछ भी प्रभाव वह व्यक्ति, मूल्य आंकने वाले (Rater) के ऊपर छोड़ता है उसके अनुसार ही उसे श्रेणी विशेष में रखा जाता है अर्थात् रेटिंग दी जाती है।

4. **निष्पादन परीक्षण (Performance Test)**—मापनकर्ता इस विधि में बालक या व्यक्ति को कुछ कार्य करने को देता है तथा उस कार्य को संपन्न करने में अभिव्यक्त गुणों एवं क्षमताओं का पता लगाता है।
यह विधि किसी कार्य विशेष के लिए चयन करने में प्रयुक्त होती है।

(iii) मनोविश्लेषणात्मक विधियाँ

प्रवर्तक–सिगमण्ड फ्रॉयड

1. **स्वप्न विश्लेषण विधि (Dream Analysis Method)**—इस विधि में व्यक्ति को अपने स्वप्नों का वर्णन करने के लिए कहा जाता है। स्वप्न विश्लेषण के आधार पर अतृप्त इच्छाओं अथवा इच्छापूर्ति में बाधक तत्त्वों का पता लगाकर उसका निराकरण किया जाता है। मनोविश्लेषणवादियों के अनुसार स्वप्न अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति के प्रतीक होते हैं।
2. **मुक्त साहचर्य परीक्षण (Free Association Test)**—इस विधि का प्रयोग मुख्यत: मानसिक रोगियों हेतु किया जाता है। मुक्त साहचर्य की प्रक्रिया में व्यक्ति/प्रयोज्य (Subject) को मनोवैज्ञानिक या मनोचिकित्सक द्वारा सम्मोहित कर अवचेतन अवस्था में लाया जाता है, फिर उससे प्रश्न पूछे जाते हैं जिनसे अंतर्मन में छिपी इच्छाएँ व भावनाएँ प्रकट होती हैं अथवा व्यक्ति को कुछ शब्दों की प्रतिक्रिया स्वरूप शब्द बालने को कहा जाता है, जिनके साहचर्य के आधार पर मनोरोगों का पता लगाया जाता है।

नोट—कई वर्गीकरणों में मनोविश्लेषणात्मक विधियों को वस्तुनिष्ठ विधियों के अन्तर्गत ही सम्मिलित किया जाता है।

महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

1. रोर्शा इंक ब्लॉट परीक्षण में शामिल है— [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2018]
(A) पाँच काले तथा पाँच रंगीन कार्ड
(B) दस काले तथा दस सफेद कार्ड
(C) पाँच काले व सफेद तथा पाँच बहुरंगी कार्ड
(D) दस बहुरंगी कार्ड **[C]**

नोट—रोर्शा इंक ब्लॉट परीक्षण में कुल 10 कार्ड होते हैं जिनमें 5 काले एवं सफेद, 2 काले एवं लाल तथा 3 कार्ड बहुरंगी होती हैं। यहाँ विकल्पों में सबसे सही विकल्प (C) ही है।

2. एच. शेल्डन ने सभी मनुष्यों के शारीरिक आयामों को गोलकाय, मध्यकाय और लंबकाय श्रेणियों में विभक्त किया है। व्यक्तित्व का यह सिद्धांत कहलाता है— [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2018]
(A) प्रारूप सिद्धांत (B) शीलगुण सिद्धांत
(C) मनोविश्लेषण सिद्धांत
(D) घटना क्रिया विज्ञान सिद्धांत **[A]**

3. व्यक्तित्व का अंतर्मुखता तथा बहिर्मुखता के रूप में वर्गीकरण दिया गया है— [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2017]
(A) स्प्रेन्गर (B) क्रेश्मर
(C) युंग (D) शेल्डन **[C]**

4. निम्न में से कौनसा स्प्रेन्जर के द्वारा दिया गया वर्गीकरण (व्यक्तित्व) नहीं है— [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2017]
(A) सुडौलकाय (B) सामाजिक
(C) सैद्धांतिक (D) कलात्मक **[A]**

5. प्रासंगिक अंतर्बोध परीक्षण किसके द्वारा दिया गया? [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2017]
(A) मार्गन एवं मुर्रे (B) होल्ट्जमैन
(C) लियोपॉर्ड बैलक (D) हरमन रोर्शा **[A]**

6. एकांत में विश्वास रखने वाला व्यक्ति कहलाता है— [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2011]
(A) अंतर्मुखी (B) बहिर्मुखी
(C) उभयमुखी (D) शून्यमुखी **[A]**

7. टी.ए.टी. परीक्षण में कार्ड की संख्या होती है— [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2011]
(A) 10 (B) 20
(C) 30 (D) 40 **[C]**

8. वह प्रथम मनोवैज्ञानिक जिसने मानव व्यक्तित्व के अवचेतन भाग की व्यवस्थित रूप से छानबीन का प्रयास किया, वह है— [वरिष्ठ अध्यापक संस्कृत परीक्षा 2019]
(A) अल्बर्ट बंडूरा (B) ई.एल. थार्नडाईक
(C) मैक्स वर्दीमर (D) सिगमंड फ्रायड **[D]**

9. भारतीय चिकित्सकों के अनुसार व्यक्तित्व के तीन अवयव पित्त (बाईल), वात (वायु) और कफ (म्यूकस) हैं। व्यक्तित्व का यह वर्गीकरण कहलाता है— [वरिष्ठ अध्यापक संस्कृत परीक्षा 2019]
(A) मनोविश्लेषण सिद्धांत (B) घटना क्रियाशास्त्र सिद्धांत
(C) प्रकार सिद्धांत (D) शीलगुण सिद्धांत **[C]**

10. निम्न में से कौनसी व्यक्तित्व आंकलन की प्रक्षेपी तकनीक नहीं है? [वरिष्ठ अध्यापक संस्कृत परीक्षा 2019]

(1) शाब्दिक अर्थ क्षमता/वाचिक बोध (Verbal Meaning Ability/ Verbal Comprehension—V)
शाब्दिक अर्थक्षमता/वाचिक बोध से तात्पर्य शब्दों, संप्रत्ययों तथा विचारों के अर्थ को समझने की क्षमता से है।

(2) शब्द प्रवाह क्षमता (Word Fluency Ability—W)
शब्दों का प्रवाह (Flow) तथा नम्यता (Flexibility) के साथ उपयोग करने की क्षमता को शब्द प्रवाह क्षमता कहते हैं।

(3) स्थानिक/दैशिक क्षमता (Spatial Ability—S)
किसी दिए हुए स्थान (Space) या जगह में काल्पनिक रूप से वस्तुओं के परिचालन करने की क्षमता को स्थानिक/देशिक क्षमता कहा जाता है।

(4) संख्यात्मक/आंकिक क्षमता (Numerical Ability—N)
संख्यात्मक तथा गणना (Calculation) से सम्बन्धित कार्यों को गति एवं परिशुद्धता के साथ करने की क्षमता को संख्यात्मक या आंकिक क्षमता कहा जाता है।

(5) तर्क क्षमता (Reasoning Ability—R)
दिए गए तथ्यों, आँकड़ों तथा संप्रत्ययों में से सामान्य नियमों की पहचान करना तथा निष्कर्ष निकालने की योग्यता/क्षमता को तर्क क्षमता कहा जाता है।

(6) स्मृति क्षमता (Memory Ability—M)
किसी कौशल, अध्याय, विषय या घटना को शीघ्र याद करने की क्षमता को स्मृति क्षमता कहा जाता है।

(7) प्रत्यक्षणात्मक गति क्षमता (Pereptual Speed Ability—P)
किसी वस्तु या घटना की व्यापकता तथा गहनता का तेजी से प्रत्यक्षण करने की क्षमता को प्रत्यक्षणात्मक गति क्षमता कहा जाता है।

7. बहुबुद्धि सिद्धांत
(Multiple Intelligence Theory)

❖ बहुबुद्धि सिद्धांत का प्रतिपादन प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक **हॉवर्ड गार्डनर** ने किया। हॉवर्ड गार्डनर ने अपनी दो प्रसिद्ध पुस्तकों **'फ्रेम्स ऑफ माइंड'** (Frames of Mind) तथा **'इंटलीजेंस रीफ्रेमड'** (Intelligence Reframed) में अपने बहुबुद्धि से सम्बन्धित संप्रत्ययों को प्रस्तुत किया।

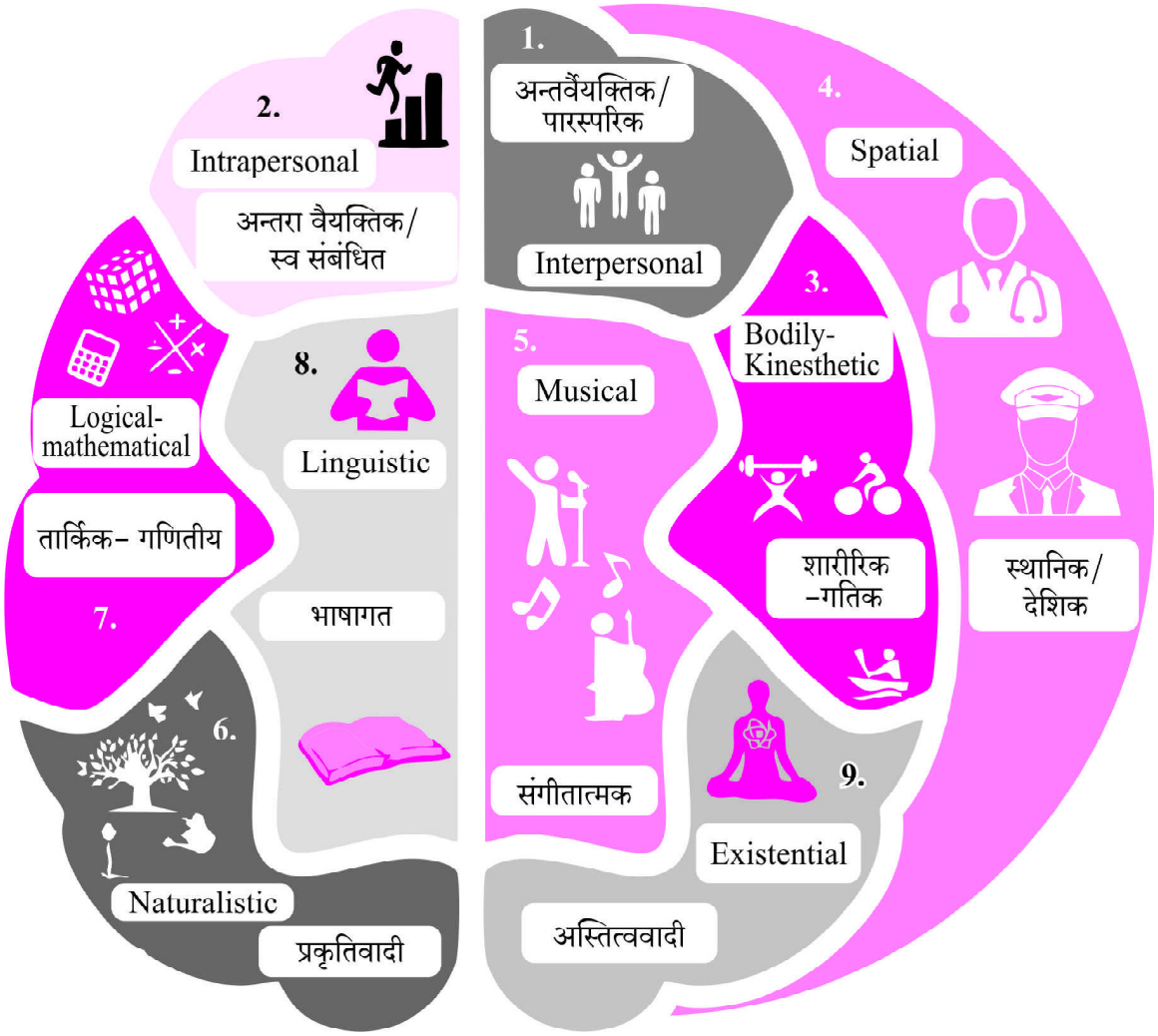

चित्र : बहुबुद्धि सिद्धांत (हॉवर्ड गार्डनर)

10. बुद्धि का पदानुक्रमिक सिद्धांत (Hierachical Theory of Intelligence)

- इस सिद्धांत का प्रतिपादन **बर्ट, वर्नन तथा हम्फ्रेज** के द्वारा किया गया।
- बर्ट, वर्नन तथा हम्फ्रेज ने स्पीयरमैन के सिद्धांत के तत्त्वों, थर्स्टन के समूह कारक सिद्धांत के तत्त्वों को एक साथ मिलाकर बुद्धि के एक नए सिद्धांत का प्रतिपादन किया जिसे पदानुक्रमिक सिद्धांत कहा जाता है।
- पदानुक्रमिक सिद्धांत की तुलना एक **पिरामिड** से की गई है जिसमें बुद्धि के भिन्न-भिन्न तत्त्वों या कारकों को एक पदानुक्रम के रूप में व्यक्त किया गया है।
- ये पदानुक्रम निम्नलिखित चित्र की सहायता से स्पष्ट हैं—

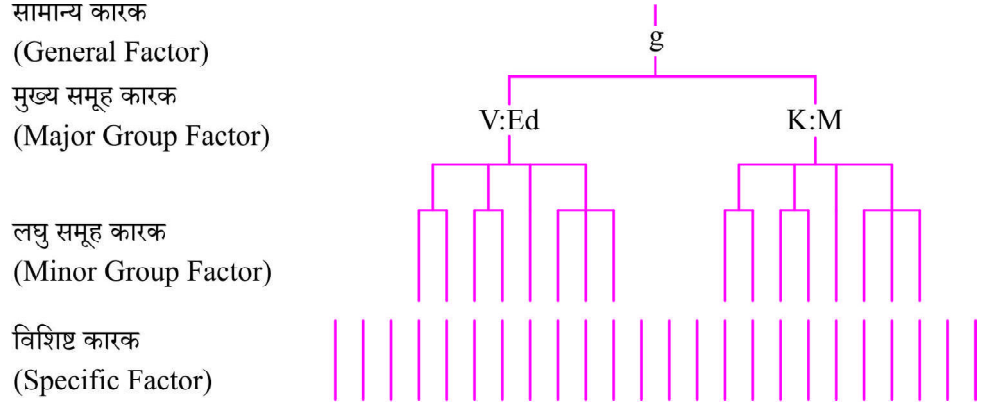

चित्र : बुद्धि का पदानुक्रमिक सिद्धांत

- इस पदानुक्रम में स्पीयरमैन के सामान्य कारक (g-कारक) को सबसे ऊपरी स्तर पर रखा गया है। पदानुक्रम के दूसरे स्तर पर थर्स्टन के समूह कारक के समान दो विस्तृत समूह कारक एक शाब्दिक शैक्षिक समूह कारक (Verbal Education Factor-V:ED) तथा दूसरा व्यावहारिक यांत्रिक कारक (Practical Mechnical Factor-K:M) है। पदानुक्रम के निम्नतम स्तर पर स्पीयरमैन का S कारक होता है।

II. बुद्धि के प्रक्रिया-प्रधान सिद्धांत (Process Oriented Theories of Intelligence)

- बुद्धि के प्रक्रिया प्रधान सिद्धांत जिन्हें सामान्यत: बुद्धि के प्रक्रिया सिद्धांत (Process Theory) भी कहा जाता है।
- इसकी मुख्य विशेषता यह है कि इन सिद्धांतों में बुद्धि के स्वरूप की व्याख्या उसके भिन्न-भिन्न कारकों या तत्त्वों के रूप में न करके बौद्धिक प्रक्रियाओं (Intellectual/Mental Processes) के रूप में की गई है जिन्हे व्यक्ति किसी समस्या का समाधान करने या सोच-विचार करने के दौरान प्रयोग में लेता है।
- इन सिद्धांतवादियों द्वारा बुद्धि के लिए संज्ञान (Cognition) तथा संज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ (Cognitive Processes) शब्द का प्रयोग अधिक किया गया है, इन विद्वानों का मानना है कि बुद्धि के अंतर्गत संज्ञानात्मक/मानसिक प्रक्रियाओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है।
- बुद्धि के प्रक्रिया प्रधान सिद्धांत के अंतर्गत अनेक मनोवैज्ञानिकों के सिद्धांतों को रखा गया है जिनमें **जीन पियाजे, जीरोम ब्रूनर, स्टर्नबर्ग, जैंसन तथा जे.पी. दास** के सिद्धांत प्रमुख हैं।
- अत: अन्य प्रमुख सिद्धांतों का वर्णन अग्रलिखित है—

1. बुद्धि का त्रिचापीय/त्रितंत्र सिद्धांत (Triarchic Theory of Intelligence)

- इस सिद्धांत का प्रतिपादन **विलियम स्टर्नबर्ग** ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **'बियांड आई क्यू'** (Beyond IQ) में किया।
- बुद्धि के त्रिचापीय या त्रितंत्रीय सिद्धांत को एक महत्त्वपूर्ण सूचना संसाधन सिद्धांत (Information Processing Theory) माना जाता है।
- स्टर्नबर्ग के अनुसार मूल रूप से बुद्धि तीन प्रकार की होती है—

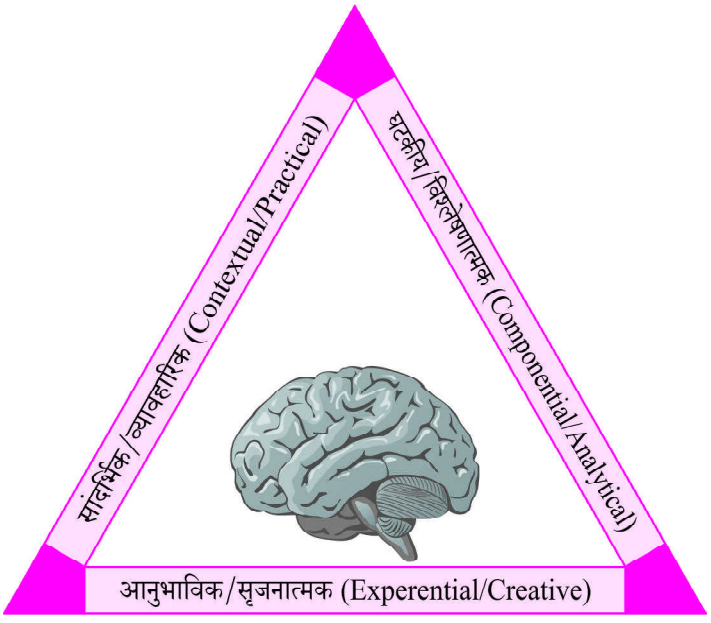

चित्र : बुद्धि का त्रिचापीय/त्रितंत्र सिद्धांत (विलियम स्टर्नबर्ग)

(C) समान गलतियों को किसी कार्य के पश्चात् पृष्ठपोषण का अवसर मिलने पर दोबारा नहीं करना।
(D) उच्च श्रेणी प्राप्तांक प्राप्त करना। **[C]**

6. कैटल का संस्कृति-मुक्त परीक्षण बुद्धि का एक प्रकार का परीक्षण है— [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2018]
(A) व्यक्तिगत शाब्दिक परीक्षण
(B) सामूहिक शाब्दिक परीक्षण
(C) अशाब्दिक परीक्षण
(D) शाब्दिक और अशाब्दिक दोनों परीक्षण **[C]**

7. बुद्धि के त्रितंत्रीय (ट्राई आर्किक) सिद्धांत के अनुसार ''बुद्धि विश्लेषण, सर्जनशील और व्यावहारिक रूप के अंतर्गत आती है।'' बुद्धि के इस सिद्धांत का विकास किया है— [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2018]
(A) हॉवर्ड गार्डनर (B) रॉबर्ट जे. स्टेनबर्ग
(C) एल.एल. थर्स्टन (D) ई.एल. थार्नडाइक **[B]**

8. बेसल आयु किसके मापन से सम्बन्धित है? [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2018]
(A) व्यक्तित्व (B) अभिवृत्ति
(C) बुद्धि (D) अभिक्षमता **[C]**

9. बुद्धिलब्धि (आई.क्यू) के परिकलन का सूत्र है— [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2018]
(A) $\frac{\text{सी.ए}}{\text{एम.ए}} \times 100$ (B) $\frac{\text{एम.ए}}{\text{सी.ए}} \times 100$
(C) $\frac{\text{सी.ए}}{100} \times \text{एम.ए}$ (D) $\frac{100}{\text{एम.ए}} \times \text{सी.ए}$ **[B]**

10. 25 वर्षीय लड़का जिसकी मानसिक आयु 16 है, का आई.क्यू. होगा— [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2018]
(A) 64 (B) 75
(C) 80 (D) 100 **[A]**

11. गिलफोर्ड द्वारा प्रतिपादित बौद्धिक संरचना के मॉडल में प्रारंभ में कितने तत्त्वों को सम्मिलित किया गया है? [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2018]
(A) 100 (B) 120
(C) 200 (D) 150 **[B]**

12. टरमन के अनुसार अत्युत्कृष्ट (Very Superior) रखते हैं— [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2017, REET]
(A) 140 से अधिक बुद्धिलब्धि
(B) 120-125 बुद्धिलब्धि
(C) 110-115 बुद्धिलब्धि
(D) 110 से नीचे बुद्धिलब्धि **[B]**

13. बुद्धि का द्विकारक सिद्धांत किसके द्वारा दिया गया? [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2017]
(A) साइमन (B) स्पीयरमैन
(C) गिलफोर्ड (D) टरमन **[B]**

14. बुद्धि परीक्षण निर्माण के जन्मदाता हैं— [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2017, REET]
(A) फ्रांसिस गाल्टन (B) अल्फ्रेड बिने
(C) लेवेटर (D) विलियम स्टर्न **[B]**

15. बुद्धि के संबंध में निम्न में से कौनसा कथन सही नहीं है? [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2013]
(A) बुद्धि वंश क्रम और पर्यावरण की देन है।
(B) बुद्धि की लम्बवत वृद्धि जीवनपर्यंत होती है।
(C) बुद्धि लिंग भेद नहीं करती।
(D) बुद्धि पर किसी समूह या जाति का जन्म सिद्ध अधिकार नहीं है। **[B]**

16. बुद्धि के समूह कारक (Group Factor Theory) सिद्धांत के प्रणेता (प्रवर्तक) हैं— [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2011]
(A) थॉर्नडाइक (Thorndike)
(B) थर्स्टन (Thurston)
(C) स्पीयरमैन (Spearman)
(D) थामसन (Thomson) **[B]**

17. निम्नलिखित में से कौनसा गिलफर्ड के त्रिविमीय बुद्धि सिद्धांत के विषयवस्तु आयाम का घटक नहीं है? [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2017]
(A) प्रणाली (B) प्रतीकात्मक
(C) शाब्दिक (D) व्यावहारिक **[A]**

18. मानसिक आयु की अवधारणा को विकसित किया था— [वरिष्ठ अध्यापक परीक्षा 2017]
(A) बिने (B) स्टर्न
(C) टरमन (D) कैटेल **[A]**

19. निम्नलिखित में से कौनसी बुद्धि की विमा (आयाम) जे.पी. गिलफोर्ड द्वारा नहीं दी गई है? [स्कूल व्याख्याता रसायन विज्ञान 2018]
(A) संक्रियाएँ (B) प्रणाली
(C) विषयवस्तु (D) उत्पाद **[B]**

20. निम्नलिखित में से किस मनोवैज्ञानिक ने बहुबुद्धि सिद्धांत दिया है? [स्कूल व्याख्याता रसायन विज्ञान 2018]
(A) कैटल (B) बर्ट
(C) पियर्सन (D) गार्डनर **[D]**

21. यह विश्वास कि बुद्धि एक सामान्य मानसिक योग्यता है, निम्नलिखित में से किस मनोवैज्ञानिक के कार्य का परिणाम है? [स्कूल व्याख्याता रसायन विज्ञान 2018]
(A) बिने (B) स्पीयरमैन
(C) गार्डनर (D) स्टैनबर्ग **[A]**

7 सृजनात्मकता/सृजनशीलता [Creativity]

सृजनात्मकता : अर्थ एवं परिभाषाएँ
(Creativity : Meaning and Definitions)

- सृजनात्मकता व्यक्ति की वह योग्यता है जिसके द्वारा वह किसी नई वस्तु का या नये विचारों का निर्माण करता है एवं नई वस्तुओं की खोज करता है।
- सृजनात्मकता के अंतर्गत व्यक्ति किसी विचार, वस्तु, कौशल, आविष्कार इत्यादि का सृजन करता है या किसी नई चीज का निर्माण करता है।
- **क्रो एवं क्रो** के अनुसार ''सृजनशीलता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की एक मानसिक प्रक्रिया है।
- **कॉल एवं ब्रुस** के अनुसार सृजनशीलता मौलिक उत्पाद (Original Product) के रूप में मानव मस्तिष्क को समझने, व्यक्त करने तथा सराहना करने की योग्यता व क्रिया है।''
- **ड्रेव हल** के अनुसार ''सृजनशीलता वह मानवीय योग्यता है जिसके द्वारा वह किसी नवीन रचना या विचारों को प्रस्तुत करता है।''
- **डिहॉन व हेविंगहर्स्ट** के अनुसार ''सृजनशीलता वह विशेषता है जो किसी नवीन व वांछित वस्तु के उत्पादन की ओर प्रवृत्त करती है। यह नवीन वस्तु सम्पूर्ण समाज के लिए नवीन हो सकती है अथवा उस व्यक्ति के लिए नवीन हो सकती है जिसने उसे प्रस्तुत किया है।''
- **स्कीनर** के अनुसार सृजनात्मक चिंतन का अर्थ है कि व्यक्ति की भविष्यवाणियाँ या निष्कर्ष नवीन, मौलिक, अन्वेषणात्मक तथा असाधारण हों। सृजनात्मक चिंतक वह है जो नये क्षेत्र की खोज करता है, नये निरीक्षण करता है, नई भविष्यवाणियाँ करता है और नये निष्कर्ष निकालता है।
- **थर्स्टन** के अनुसार ''कोई भी वह क्रिया सृजनात्मकता है जिसका तत्काल समाधान प्राप्त हो जाये क्योंकि इस प्रकार का हल विचारक के लिए सदैव नवीनता लिए होता है।''
- **बैरन** के अनुसार ''सृजनात्मकता का सार है पहले से विद्यमान वस्तुओं तथा तत्त्वों को मिलाकर नये योग बनाना।''
- **स्टीन** के अनुसार ''यदि किसी प्रक्रिया के परिणामस्वरूप कोई नवीन कार्य सम्पन्न होता है तथा किसी अमुक समय के लिए व किसी समूह विशेष द्वारा संतोषप्रिय उपयोगी एवं लाभकारी समझकर स्वीकार कर लिया जाता है तो वह प्रक्रिया अवश्य ही सृजनात्मक होगी।''
- **स्टेगनर एवं कार्वोस्की** के अनुसार ''किसी नई वस्तु का पूर्ण या आंशिक उत्पादन सृजनात्मकता है।''
- **विल्सन गिलफोर्ड एवं क्रिस्टेनसेन** के अनुसार ''सृजनात्मक प्रक्रिया एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई नवीन उत्पत्ति हो। यह नवीन उत्पत्ति किसी समस्या के समाधान में सहयोगी होनी चाहिए।''
- **जेम्स ड्रेवर** के अनुसार ''सृजनात्मकता मुख्यतया नवीन रचना या उत्पादन में निहित होती है''

सृजनात्मकता के तत्त्व
(Components of Creativity)

- विभिन्न मनोवैज्ञानिकों जैसे—गिलफोर्ड, टोरेंस, मेडनिक तथा वर्नन ने अपने मनोवैज्ञानिक अध्ययनों के दौरान सृजनात्मकता के मुख्यतया निम्नलिखित तत्त्व बताये हैं—

(Transformations) तथा पुन: परिभाषीकरण (Redefinition) की योग्यताएँ सम्मिलित होती हैं।

इन्होंने कॉलेज छात्रों की सृजनशीलता का मापन करने के लिए एक परीक्षण का निर्माण किया जिसमें उन्होंने निम्न 6 घटकों या कारकों को सम्मिलित किया है—

1. **संवेदनशीलता (Sensitivity)**
2. **लचीलापन/लोचशीलता (Flexibility)**
3. **प्रवाह/धारा प्रवाह (Fluency)**
4. **मौलिकता (Originality)**
5. **विस्तारण (Elaboration)**
6. **पुन: परिभाषीकरण (Re-definition)**

2. टॉरेंस का सृजनात्मक चिंतन परीक्षण (Torrance's Tests of Creative Thinking-TTCT)

एलिस पॉल टॉरेंस के द्वारा तैयार की गई सृजनात्मक चिंतन परीक्षण श्रृंखला में दो परीक्षण हैं—

(1) शाब्दिक परीक्षण—इसे शब्दों के साथ सृजनशील चिंतन भी कहते हैं।

(2) आकृतिक परीक्षण (Figural Test)—इसे चित्रों के साथ सृजनशील चिंतन कहते हैं।

टॉरेंस की सृजनात्मक चिंतन परीक्षण श्रृंखला में निम्नांकित चार प्रकार के कार्य करने के लिए दिए जाते हैं-

(i) किसी चित्र के संबंध में अधिकाधिक प्रश्न करना।
(ii) किसी खिलौने में सुधार के लिए परिवर्तन सुझाना।
(iii) किसी सामान्य वस्तु के अधिकाधिक प्रयोग बताना।
(iv) किसी दी गई वक्रीय रेखा के चारों ओर कोई चित्र बनाना तथा चित्र शीर्षक देना।

❖ टॉरेंस का सृजनात्मक चिंतन परीक्षण धारा प्रवाह, लोचशीलता, मौलिकता तथा विस्तारण नामक चार घटकों या कारकों पर अलग-अलग अंक प्रदान करता है।

सृजनात्मकता मापन के भारतीय परीक्षण (Indian Test to Measure Creativity)

❖ सृजनात्मकता मापन के प्रमुख भारतीय परीक्षण निम्नलिखित हैं—

1. पासी का सृजनात्मकता परीक्षण (Passi's Test of Creativity)

❖ **बी.के. पासी** के द्वारा 1972 में स्कूली बालकों की सृजनशीलता का मापन करने के लिए निर्मित इस सृजनात्मकता परीक्षण में 6 उप परीक्षणों को सम्मिलित किया गया है-

(i) समस्या जाँच परीक्षण (Seeing Problem Test)
समस्या जाँच परीक्षण में प्रयोज्य/व्यक्ति से दैनिक उपयोग की वस्तुओं के दोष तथा इनके प्रयोग में आने वाली समस्याएँ बताने के लिए कहा जाता है।

(ii) असामान्य उपयोग परीक्षण (Unusual Uses Test)
असामान्य प्रयोग परीक्षण में प्रयोज्य/व्यक्ति (Subject) से किन्ही दो वस्तुओं के अधिक से अधिक साधारण व मनोरंजक उपयोग बताने के लिए कहा जाता है।

(iii) परिणाम परीक्षण (Consequences Test)
परिणाम परीक्षण के अंतर्गत चार असंभव घटनाओं जैसे- मानव के उड़ने, घरों के उड़ने, सभी के पागल होने, स्त्रियों के पुरुष हो जाने के परिणामों के संबंध में प्रयोज्य (subject) (मनोवैज्ञानिक में प्रयोज्य से तात्पर्य जिस व्यक्ति पर प्रयोग किया जाता है उससे होता है।) से सोचने के लिए कहा जाता है।

(iv) प्रश्नात्मक योग्यता परीक्षण (Test of Inquisitiveness)
प्रश्नात्मक योग्यता परीक्षण में प्रयोज्य से किन्हीं दिखाई गयी वस्तुओं से सम्बन्धित अधिकाधिक प्रश्न पूछने के लिए कहा जाता है।

(v) वर्ग पहेली परीक्षण (Square Puzzle Test)
वर्ग पहेली परीक्षण में प्रयोज्य को दिए गए पाँच त्रिभुजाकार व पाँच चतुर्भुजाकार प्लास्टिक के टुकड़ों को वर्ग के रूप में व्यवस्थित करना होता है।

(vi) ब्लॉक परीक्षण (Block Test)
ब्लॉक परीक्षण में प्रयोज्य से 19 घनों (Cubes) व 12 अर्द्ध-घनों (Semicubes) को देकर अधिक से अधिक विभिन्न आकृतियाँ बनाने व उनको शीर्षक देने के लिए कहा जाता है।

❖ पासी का सृजनात्मकता परीक्षण शाब्दिक, अशाब्दिक, व्यक्तिगत एवं सामूहिक सभी प्रकार से उपयोग लिया जा सकता है।

2. बॉकर मेहदी का सृजनात्मक या चिंतन परीक्षण (Baquer Mehdi's Tests of Creativity)

बॉकर मेहदी के द्वारा सृजनात्मक चिंतन की एक परीक्षण श्रृंखला का निर्माण किया गया जिसमें दो परीक्षण हैं—

(1) सृजनात्मक चिंतन का शाब्दिक परीक्षण
(2) सृजनात्मक चिंतन का अशाब्दिक या चित्रों द्वारा परीक्षण।

सृजनात्मकता के कुछ अन्य उपयोगी परीक्षण

❖ सृजनात्मक चिंतन के कुछ अन्य प्रमुख उपयोगी परीक्षण जो अंतरराष्ट्रीय एवं भारतीय मनोवैज्ञानिकों द्वारा दिए गए हैं, वो निम्नलिखित हैं-

1. मिनीसोटा का सृजनात्मक चिंतन परीक्षण।
2. मेडनिक एवं मेडनिक का रिमॉट एसोसिएशन परीक्षण।
3. वॉलक एवं कार्गन का सृजनात्मक उपकरण।
4. शर्मा बहुविध उत्पादन योग्यता परीक्षण (Sharma's Divergent Production Abilities Test)
5. सक्सेना सृजनात्मकता परीक्षण।

I. संवेगात्मक बुद्धि का 'योग्यता प्रारूप' (Ability Model of Emotional Intelligence)

- ये प्रारूप **पीटर स्लोवे तथा जॉन मेयर** द्वारा प्रतिपादित किया गया।
- जॉन मेयर तथा पीटर स्लोवे ने अपने सतत अनुसंधान कार्य के आधार पर अपनी संवेगात्मक बुद्धि की पुरानी परिभाषा में बदलाव करते हुए संवेगात्मक बुद्धि के संप्रत्यय को नवीन बुद्धि की मानक कसौटी के अनुरूप निम्नांकित रूप में परिभाषित किया—
  ''संवेगात्मक बुद्धि संवेगों का प्रत्यक्षीकरण करने, संवेगों का एकीकरण करके विचारों को सुलभ बनाने, संवेगों को समझने तथा संवेगों को नियंत्रित करके वैयक्तिक प्रगति को बढ़ाने वाली योग्यता है।''
- संवेगात्मक बुद्धि का योग्यता आधारित प्रारूप, संवेगों (Emotions) को सूचना सम्बन्धित एक ऐसा महत्त्वपूर्ण स्रोत स्वीकार करता है जो व्यक्ति के सामाजिक वातावरण को समझने में तथा उसे आगे बढ़ने में सहायता करता है।
- इस प्रारूप के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि में निम्न चार प्रकार की योग्यताएँ समाहित रहती हैं—
  1. संवेगों का प्रत्यक्षीकरण (Perception) करने की योग्यता।
  2. संवेगों का उपयोग करने की योग्यता।
  3. संवेगों का अवबोध/समझने की योग्यता।
  4. संवेगों का प्रबंधन करने की योग्यता।

II. संवेगात्मक बुद्धि का 'शीलगुण प्रारूप' (Trait Model of Emotional Intelligence)

- इस प्रारूप का प्रतिपादन **के.वी. पेटराइडस** के द्वारा किया गया।
- **के.वी. पेटराइडस** ने संवेगात्मक बुद्धि के योग्यता आधारित प्रारूप के विपरीत शीलगुण प्रारूप (Trait Model) को विकसित किया है। इनके अनुसार संवेगात्मक बुद्धि को निम्न रूप से परिभाषित किया जा सकता है—''संवेगात्मक बुद्धि व्यक्तित्व के निम्न स्तरों पर स्थित संवेगात्मक स्व-प्रत्यक्षीकरणों (Self-Perceptions) का एक समूह है।''
- संवेगात्मक बुद्धि का **'शीलगुण प्रारूप'** संवेगात्मक बुद्धि को व्यक्ति की संवेगात्मक योग्यताओं के स्व-प्रत्यक्षीकरण के रूप में प्रस्तुत करता है।

III. संवेगात्मक बुद्धि का मिश्रित प्रारूप (Mixed Model of Emotional Intelligence)

- यह प्रारूप संवेगात्मक बुद्धि का सबसे लोकप्रिय एवं महत्त्वपूर्ण प्रारूप माना जाता है।
- संवेगात्मक बुद्धि के मिश्रित प्रारूप का प्रतिपादन डेनियल गोलमैन के द्वारा किया गया।
  डेनियल गोलमैन के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि को निम्नांकित रूप से परिभाषित किया जा सकता है—
  ''संवेगात्मक बुद्धि योग्यता एवं कौशलों का एक ऐसा व्यापक समुच्चय है जो नेतृत्व निष्पादन (Leadership Performance) को बढ़ाता है।''
  डेनियल गोलमैन के अनुसार संवेगात्मक क्षमताएँ जन्मजात न होकर अर्जित योग्यताएँ होती हैं जिन्हें श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए विकसित किया जा सकता है।
- इसके साथ-साथ डेनियल गोलमैन ने कहा कि व्यक्ति 'सामान्य संवेगात्मक बुद्धि' के साथ जन्म लेता है जो संवेगात्मक क्षमताओं को अर्जित करने में उसकी मदद करती है।
- डेनियल गोलमैन ने संवेगात्मक बुद्धि के मुख्यतया 5 तत्त्व अवयव बताए हैं—

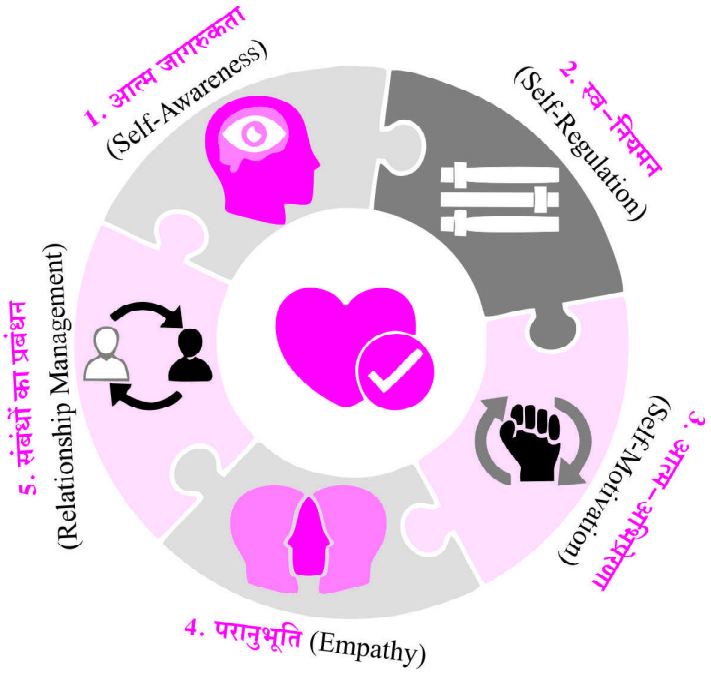

1. **आत्म-जागरुकता (Self Awareness)**—अपने संवेगों अच्छाईयों, कमजोरियों, आवश्यकताओं, मूल्यों व लक्ष्यों को जानने की योग्यता, निर्णय लेने में आंतरिक भावनाओं का उपयोग करते समय उनका अन्य लोगों पर पड़ रहे प्रभाव को स्वीकार करने की क्षमता एवं योग्यता डेनियल गोलमैन के अनुसार आत्म जागरुकता (Self Awareness) है।
2. **स्व-नियमन एवं स्व-नियंत्रण (Self Regulation & Self Control)**—अपने संवेगों को प्रबंधित करना, नियंत्रित करना एवं बदलती परिस्थितियों के साथ उनका समायोजन एवं अनुकूलन करने की क्षमता/योग्यता स्व-नियमन तथा आत्म नियंत्रण की योग्यता है जो संवेगात्मक बुद्धि का एक महत्वपूर्ण घटक है।
3. **आत्म-अभिप्रेरणा/अभिप्रेरणा (Self-Motivation/ Motivation)**—एक अच्छे संवेगात्मक बुद्धि वाले व्यक्ति की प्रमुख विशेषता होती है कि वह स्वयं को अभिप्रेरित

❖ निम्नलिखित विवरण के माध्यम अभिप्रेरणात्मक चक्र तथा इसके तत्वों/घटकों को सविस्तार समझाया गया है—

अभिप्रेरणा के तत्त्व (Elements of Motivation)

1. आवश्यकता (Need)

❖ मनोवैज्ञानिक आवश्यकता को अभिप्रेरणात्मक चक्र का प्रथम सोपान मानते हैं, क्योंकि किसी भी अभिप्रेरक (Motive) की उत्पत्ति में सबसे पहले आवश्यकता ही उत्पन्न होती है।

❖ किसी चीज की कमी या अधिकता का होना ही आवश्यकता है, जैसे– प्यास की अवस्था में व्यक्ति की कोशिकाओं में पानी कमी हो जाती है, जबकि मूत्र त्याग की आवश्यकता तब उत्पन्न होती है, जब शरीर में कुछ पदार्थों की अधिकता हो जाती है।

❖ **वुडवर्थ तथा स्कलॉसबर्ग** के अनुसार "कमी या अति की शारीरिक अवस्था को आवश्यकता कहा जाता है।"

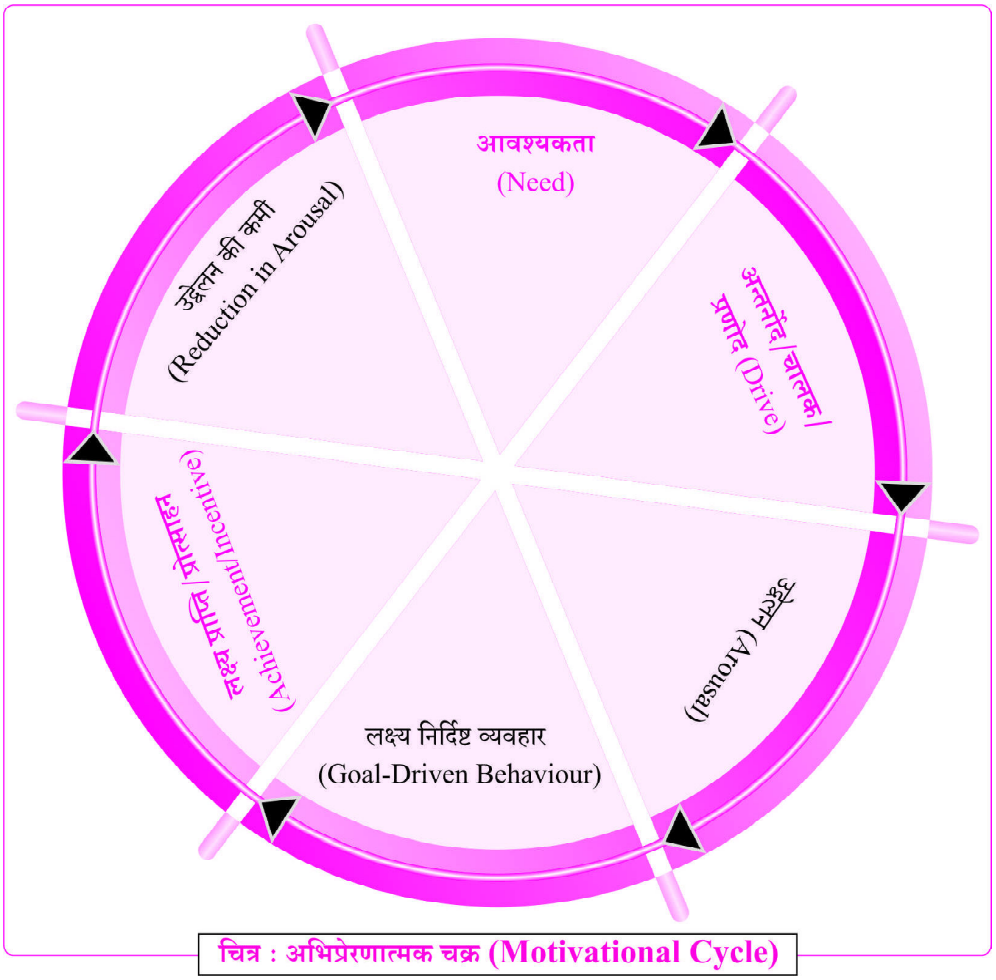

चित्र : अभिप्रेरणात्मक चक्र (Motivational Cycle)

2. अंतर्नोद/प्रणोद/चालक (Drive)

❖ आवश्यकता अंतर्नोद को जन्म देती है।

❖ जब प्राणी में आवश्यकता उत्पन्न होती है तो इससे उसमें क्रियाशीलता बढ़ जाती है और वह पहले से अधिक सक्रिय तथा तनावपूर्ण लगता है, अत: किसी आवश्यकता के कारण जो तनाव या उद्वेलन (Arousal) उत्पन्न होता है वही अंतर्नोद है।

3. प्रोत्साहन या लक्ष्य (Incentive or Goal)

❖ अभिप्रेरणात्मक चक्र का तीसरा कदम प्रोत्साहन या लक्ष्य होता है। प्रोत्साहन या लक्ष्य वातावरण में उपस्थित वह वस्तु है जो प्राणी को अपनी ओर आकर्षित करती है तथा जिसकी प्राप्ति से प्राणी की आवश्यकता की पूर्ति तथा प्रणोद में कमी हो जाती है।

अभिप्रेरणा के प्रकार (Types of Motivation)

❖ मनोवैज्ञानिकों ने अभिप्रेरणा के मुख्यत: निम्नलिखित प्रकार बतलाये हैं—

(i) आंतरिक अभिप्रेरणा (Internal Motivation)—जब व्यक्ति स्वयं से किसी कार्य को करने के लिए प्रेरित होता है या अग्रसर होता है तो उसे आंतरिक अभिप्रेरणा कहते हैं। जैसे—कोई व्यक्ति अपनी रुचि के अनुसार कोई लक्ष्य निर्धारित करता है तथा उसे प्राप्त करने के लिए अग्रसर हो जाता है तो यह आंतरिक अभिप्रेरणा का उदाहरण होगा।

(ii) बाह्य अभिप्रेरणा (Extrnal Motivation)—जब व्यक्ति किसी बाह्य कारक से प्रभावित होकर किसी कार्य को करने के लिए अग्रसर होता है तो उसे बाह्य अभिप्रेरणा कहते हैं। प्रशंसा, पुरस्कार, सम्मान, दण्ड एवं सामाजिक सांस्कृतिक कारकों के प्रभाव को बाह्य अभिप्रेरणा के अन्तर्गत रखा जाता है।

(iii) सकारात्मक अभिप्रेरणा (Positive Motivation)—जब व्यक्ति ऐसे कार्यों को करने के लिए अभिप्रेरित होता जो सामाजिक स्वकृति लिये हुये होते हैं तथा समाज एवं व्यक्ति दोनों के लिए लाभदायक होते हैं तो इसे सकारात्मक अभिप्रेरणा कहते हैं। जैसे—राष्ट्र की प्रगति में योगदान देना, समाज एवं स्वयं के उत्थान के लिए प्रयास करना इत्यादि सकारात्मक अभिप्रेरणा के उदाहरण है।

(iv) नकारात्मक अभिप्रेरणा (Negative Motivation)—जब व्यक्ति ऐसे कारकों या लक्ष्यों से प्रभावित होता है जो समाज एवं स्वयं व्यक्ति दोनों के लिए हानिकारक होते हैं तो इसे नकारात्मक अभिप्रेरणा कहते हैं। उदाहरण के लिए—आपराधिक कार्यों में संलग्न रहना, जुआं खेलना, सरकार की टैक्स चोरी करना इत्यादि।

है। इसलिए इस सिद्धांत को दाब सिद्धांत (Push Theory) भी कहा जाता है।

❖ जब व्यक्ति को लक्ष्य की प्राप्ति हो जाती है तो प्रणोद की तीव्रता कम हो जाती है और तनाव की स्थिति समाप्त हो जाती है।

3. प्रोत्साहन सिद्धांत/प्रत्याशा सिद्धांत/खिंचाव सिद्धांत (Expectancy Theory/Pull Theory)

❖ इस सिद्धांत के अनुसार अभिप्रेरित व्यवहार की उत्पत्ति में व्यक्ति की अवस्था यानी प्रणोद उतनी महत्त्वपूर्ण नहीं होती है जितना कि स्वयं लक्ष्य या प्रोत्साहन।

❖ व्यक्ति का व्यवहार इस प्रत्याशा से निर्देशित होता है कि वह अमुक व्यवहार के वांछित परिणाम को प्राप्त कर सकता है इसलिए इसे प्रत्याशा सिद्धांत भी कहा जाता है। यह माना जाता है कि प्रोत्साहन में कुछ ऐसे गुण या शक्तियाँ होती हैं जो व्यक्ति के व्यवहार को अपनी ओर खींच लेती हैं। इस कारण इसको खिंचाव सिद्धांत भी कहा जाता है।

4. आवश्यकता-पदानुक्रम सिद्धांत (Need-Hierarchey Theory)

❖ यह सिद्धांत **अब्राहम मैस्लो** द्वारा 1954 में प्रतिपादित किया गया। मैस्लो ने बताया कि मानव आवश्यकताओं या अभिप्रेरकों की व्याख्या एक अनुक्रम या पीढ़ी के रूप में की जा सकती है।

❖ मैस्लो ने मानव आवश्यकता के **पाँच प्रकार** बताए हैं जो क्रमानुसार निम्नांकित हैं—

(1) शरीर क्रियात्मक/शारीरिक आवश्यकताएँ (Physiological Needs)—मनुष्य की शरीर क्रियात्मक आवश्यकताएँ अनुक्रम में सबसे नीचे आती हैं।
इन आवश्यकताओं में भूख, प्यास, काम तथा अन्य शारीरिक आवश्यकताएँ सम्मिलित होती हैं, जिनके अभाव में व्यक्ति का जिंदा रहना संभव नहीं है।

(2) सुरक्षा की आवश्यकताएँ (Safety Needs)—सुरक्षा आवश्यकता में शारीरिक तथा सांवेगिक दुर्घटनाओं से अपने आप को बचाने की आवश्यकताएँ सम्मिलित होती हैं।
इस आवश्यकता में व्यक्ति विभिन्न प्रकार के भय एवं असुरक्षा से बचने की कोशिश करता है।

(3) आत्मीयता की आवश्यकताएँ (Love & Belongingness Needs)—इसके अंतर्गत दूसरों से प्रेम करना तथा उसका प्रेम प्राप्त करना आता है।
इस आवश्यकता के कारण ही व्यक्ति परिवार, विद्यालय, धर्म, प्रजाति आदि के साथ तादात्मय स्थापित करता है।

(4) सम्मान की आवश्यकताएँ (Esteem Needs)—इस आवश्यकता में आंतरिक सम्मान कारक जैसे- आत्म सम्मान, उपलब्धि, स्वायत्तता तथा बाह्य सम्मान कारक जैसे- पद, पहचान, प्रतिष्ठा, प्रसिद्धि आदि सम्मिलित होती हैं।

(5) आत्म-सिद्धि की आवश्यकता (Need for Self Actulization)—यह सबसे ऊपरी स्तर की आवश्यकता है, जहाँ पर सभी लोग नहीं पहुँच पाते।
आत्म-सिद्धि से तात्पर्य अपने अंदर छिपी क्षमताओं की पहचान करना तथा उसे ठीक ढंग से विकसित करने की आवश्यकता से है। आत्म-सिद्ध व्यक्ति आत्म जागरुक, समाज के प्रति अनुक्रियाशील, सृजनात्मक, स्वत: स्फूर्त तथा नवीनता एवं चुनौती के प्रति युक्त होता है।
ऐसे व्यक्ति में हास्य भावना होती है तथा गहरे अंतर्वैयक्तिक संबंध बनाने की क्षमता होती है क्योंकि ऐसे व्यक्तियों में डर दुश्चिंता आदि नहीं के बराबर होता है, अत: उनको परिस्थितियों का प्रत्यक्षण सही-सही होता है।

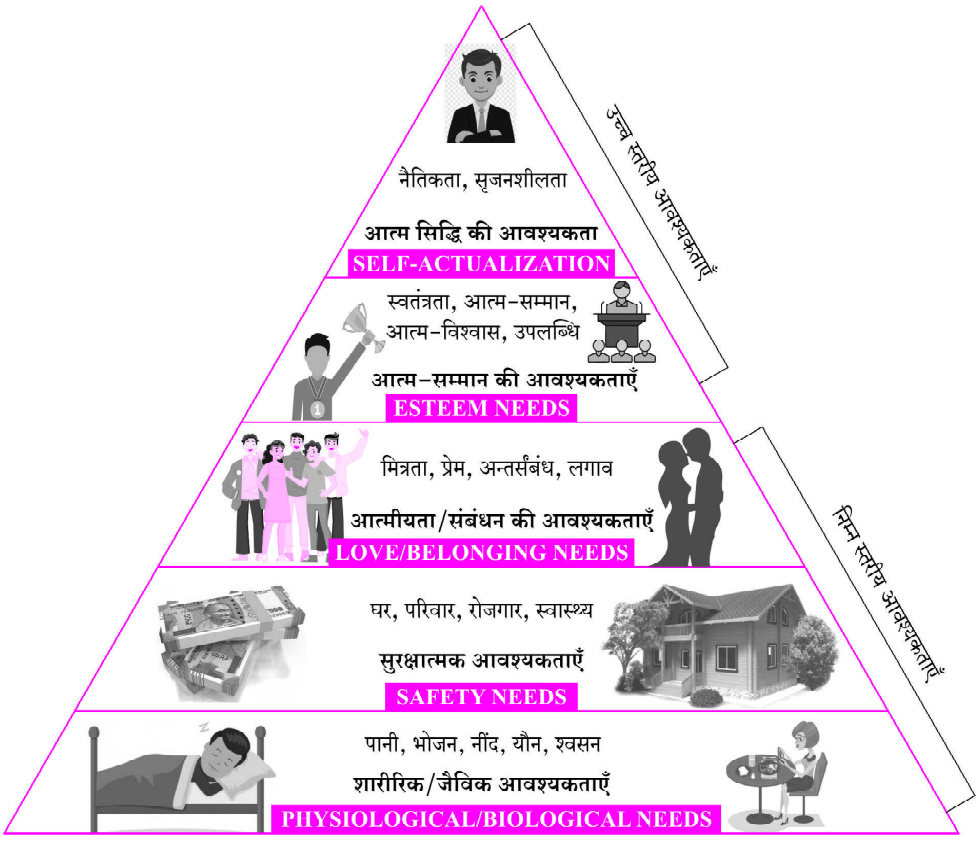

10 मानसिक स्वास्थ्य, समायोजन एवं कुसमायोजन [Mental Health, Adjustment & Maladjustment]

मानसिक स्वास्थ्य : अर्थ एवं परिभाषाएँ (Mental Health : Meaning and Definitions)

- मानसिक स्वास्थ्य एक तरह का समायोजी व्यवहार (Adjustive Behaviour) है जो व्यक्ति की जिंदगी के सभी प्रमुख क्षेत्रों, जैसे सांवेगिक (Emotional), सामाजिक एवं शैक्षिक आदि में सफलतापूर्वक समायोजन करने में मदद करता है।
- मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति या छात्र अपने व्यक्तित्व की विभिन्न इच्छाओं, आवश्यकताओं, शीलगुणों आदि के बीच एक ऐसा सामंजस्य रखता है कि जिंदगी के सभी क्षेत्रों में एक संतोषजनक समायोजी व्यवहार करने में समर्थ हो पाता है।
- मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन **'मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान' (Mental Hygiene)** के अंतर्गत किया जाता है।
- मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान 'मेंटल हाइजीन' एक ऐसा विज्ञान है जो व्यक्तियों में मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ रखने तथा मानसिक बीमारियों को न होने देने सम्बन्धी तथ्यों को उजागर करता है।
- **ड्रेवर** के अनुसार ''मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का अभिप्राय मानसिक स्वास्थ्य के नियमों की खोज करना और उसके संरक्षण के उपाय बताने से है।''
- **क्रो एवं क्रो** के अनुसार ''मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान वह विज्ञान है जिसका संबंध मानव कल्याण से है और जो मानव संबंधों के सभी क्षेत्रों को प्रभावित करता है।''

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के प्रमुख कार्य (Major Functions of Mental Hygiene)

- मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के कार्यों को मुख्यत: 3 भागों में बाँटा गया है—

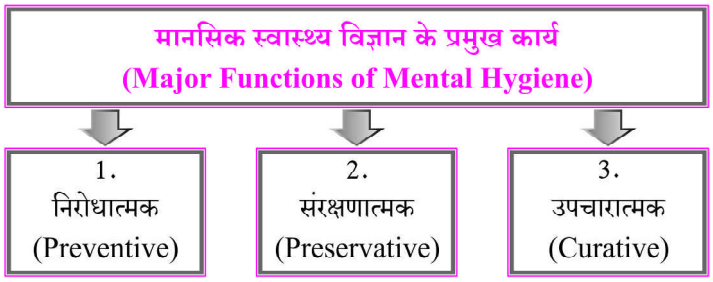

1. **निरोधात्मक (Preventive)**—निरोधात्मक कार्य से तात्पर्य मानसिक स्वास्थ्य को नकारात्मक रूप से प्रभावित करने वाले तत्त्वों की रोकथाम करने से है।
2. **संरक्षणात्मक (Preservative)**—संरक्षणात्मक कार्य से तात्पर्य मानसिक स्वास्थ्य बना रहे इसके लिए उत्तरदायी कारकों को बनाए रखने से है।
3. **उपचारात्मक (Curative)**—उपचारात्मक कार्य से तात्पर्य जल्द से जल्द मानसिक समस्याओं या बीमारियों को पहचान कर उसे दूर करना है।

मानसिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित प्रमुख संप्रत्यय (Concepts Related to Mental Health)

- पूर्ण मानसिक स्वास्थ्य जैसी कोई बात नहीं होती है।
- मानसिक स्वास्थ्य एक गतिशील अवधारणा है।
- बिना शारीरिक स्वास्थ्य के मानसिक स्वास्थ्य की प्राप्ति संभव नहीं है।
- मानसिक स्वास्थ्य समायोजन में सहायक है।

मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान के उद्देश्य (Goods of Mental Hygiene)

- मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान (Mental Hygiene) के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. व्यक्ति को अपनी अंत: शक्तियों का अनुभव कराना।
2. मानसिक स्वास्थ्य की सुरक्षा एवं संरक्षण करना।
3. मानसिक बीमारियों की रोकथाम करना।
4. मानसिक रोगों का उपचार करना।
5. लोगों के नकारात्मक आत्मविश्वास को बदलकर उनमें सकारात्मक परिवर्तन लाना।
6. मानसिक अस्पताल की स्थितियों एवं सुविधाओं में सुधार लाना।

मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति की विशेषताएँ (Characteristics of a Person with Good Mental Health)

- मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति की निम्नलिखित विशेषताएँ पायी जाती हैं—
  - आत्म ज्ञान।
  - आत्म मूल्यांकन।

11 वैयक्तिक विभिन्नताएँ [Individual Differences]

वैयक्तिक विभिन्नताएँ : अर्थ एवं परिभाषाएँ
(Individual Differences : Meaning and Definitions)

- सर्वप्रथम फ्राँसिस गॉल्टन ने 1869 में अपनी पुस्तक ''हेरीडिटरी जीनियस (Hereditary Genius)'' में व्यक्तिगत विभिन्नताओं का वैज्ञानिक ढंग से विवेचन प्रस्तुत किया।
- बिने, पियर्सन, कैटल, टर्मन इत्यादि मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तिगत विभिन्नताओं का प्रमुख रूप से अध्ययन किया।
- वैयक्तिक विभिन्नताओं को व्यक्तिगत विभिन्नताएँ, व्यक्तिगत विभेद तथा वैयक्तिक विभेद इत्यादि नामों से भी जाना जाता है।
- वैयक्तिक विभिन्नताओं से तात्पर्य रंग रूप, शारीरिक गठन, बुद्धि, अभिरुचि, स्वभाव, व्यक्तित्व, आदत, शीलगुणों एवं अन्य व्यवहारगत विशेषताओं में एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से भिन्न या अलग होने से है।
- **रैबर** के अनुसार, ''वैयक्तिक विभिन्नता नाम एक ऐसी मनोवैज्ञानिक घटनाओं के लिए दिया जाता है जो उन विशेषताओं व शीलगुणों पर बल डालती है जिनके अनुसार वैयक्तिक जीवन भिन्न होते हुए दिखाये जा सकते हैं।
- **स्कीनर** के अनुसार, ''व्यक्तिगत विभिन्नताओ से हमारा तात्पर्य व्यक्तित्व के उन सभी पहलुओं से है जिनका मापन एवं मूल्यांकन किया जा सकता है।''
- **जेम्स ड्रेवर** के अनुसार, ''कोई व्यक्ति अपने समूह के शारीरिक तथा मानसिक गुणों के औसत से जितनी भिन्नता रखता है उसे व्यक्तिगत भिन्नता कहते हैं।''
- **टायलर** के अनुसार शरीर के रूप, रंग, आकार, कार्यगति, बुद्धि, ज्ञान, उपलब्धि, रुचि, अभिरुचि इत्यादि लक्षणों में पायी जाने वाली भिन्नता को व्यक्तिगत विभिन्नता कहते हैं।
- **कार्टर बी. गुड** द्वारा रचित 'डिक्शनरी ऑफ एजुकेशन' में वैयक्तिक विभिन्नता पर निम्नलिखित रूप से प्रकाश डाला गया है—
  (i) व्यक्तियों में किसी एक विशेषता या अनेक विशेषताओं को लेकर पाए जाने वाला अंतर वैयक्तिक विभिन्नता है।
  (ii) अपने सम्पूर्ण रूप से वो सारे भेद और अंतर जो एक व्यक्ति को दूसरे से अलग करते हैं, वैयक्तिक विभिन्नता है।

वैयक्तिक विभिन्नता के प्रकार
(Types of Individual Differences)

- व्यक्ति में अनेक आधारों पर एक-दूसरे से भिन्न विशेषताएँ या गुण पाये जाते हैं, जिनके आधारों पर वैयक्तिक विभिन्नताओं को अनेक प्रकारों में बाँटा जा सकता है, जिनमें से कुछ प्रमुख प्रकारों का वर्णन निम्नलिखित है—

1. रुचि/अभिरुचि से सम्बन्धित वैयक्तिक विभिन्नताएँ

- रुचि/अभिरुचि (Interest) एक शक्तिशाली अभिप्रेरक शक्ति या आकर्षण केंद्र है जो हमारे सभी प्रकार के कार्यों को बहुत प्रभावित करती है, लेकिन यह अभिप्रेरक शक्ति सभी बालकों व व्यक्तियों में एक जैसी नहीं होती है, यही कारण है कि हम सब में रुचियों को लेकर बहुत गहरी तथा सूक्ष्म व्यक्तिगत विभिन्नताएँ पायी जाती हैं और इन्हीं विभिन्नताओं या भेदों के कारण बालक या व्यक्ति उन कार्यों में अधिक सफलता प्राप्त करते हैं जिनमें उनकी रुचि अधिक होती है। वहीं अन्य व्यक्ति या बालक उन कार्यों में या विशिष्टताओं में अधिक सफलता प्राप्त करते हैं, जिनमें उनकी रुचि अधिक होती है अर्थात् रुचि की कार्यों एवं गुणों के निष्पादन में प्रमुख भूमिका होती है।
- **क्रो एवं क्रो** के अनुसार, ''रुचि वह अभिप्रेरक शक्ति है जो हमें किसी व्यक्ति, वस्तु या क्रिया की ओर ध्यान देने के लिए बाध्य करती है।''

2. अभिवृत्ति से सम्बन्धित विभिन्नताएँ या भेद

- अभिवृत्ति (Attitude) से तात्पर्य किसी वस्तु, व्यक्ति या विचार के प्रति जो विशिष्ट भावना या दृष्टिकोण पाया जाता है उससे है। इन्हीं आधारों पर विभिन्न व्यक्तियों में वैयक्तिक विभेद पाये जाते हैं अर्थात् एक व्यक्ति का दृष्टिकोण अन्य व्यक्ति से विभिन्न मामलों में अलग-अलग हो सकता है।
- **सोरेंसन** ने अभिवृत्ति को परिभाषित करते हुए लिखा है कि ''अभिवृत्ति किसी वस्तु के प्रति एक विशिष्ट भावना है, इसलिए इसमें उस वस्तु (चाहे वह व्यक्ति, विचार या पदार्थ कुछ भी हो)

अभिक्षमता/अभियोग्यता
(Aptitude)

अभिक्षमता (Aptitude) मानव क्षमता का एक प्रमुख भाग है। अभिक्षमता से तात्पर्य किसी विशेष क्षेत्र में कौशल एवं ज्ञान प्राप्त करने की जन्मजात या अर्जित क्षमता से है।

- **फ्रीमैन** के अनुसार ''अभिक्षमता से तात्पर्य गुणों या विशेषताओं के ऐसे संयोग से होता है जिससे विशिष्ट ज्ञान तथा संगठित अनुक्रियाओं के समुच्चय तथा कौशलों जैसे—किसी भाषा को बोलने की क्षमता, संगीतज्ञ बनने की क्षमता तथा यांत्रिक कार्य करने की क्षमता का पता चलता है।''
- **टुकमैन** के अनुसार ''क्षमताओं या अन्य गुणों के ऐसे संयोग को जो चाहे जन्मजात हो या अर्जित, ज्ञात हो या जिससे किसी विशेष क्षेत्र में प्रवीणता विकसित करने या व्यक्ति के सीखने की क्षमता का पता चलता हो, अभिक्षमता कहा जाता है।''
- **बिंघम** के अनुसार ''किसी विशिष्ट प्रशिक्षण के उपरांत दिए गए क्षेत्र में कुछ ज्ञान या कौशल या प्रतिक्रियाओं के समुच्चय को अर्जित करने की किसी व्यक्ति की योग्यता को लाक्षणिक रूप से व्यक्त करने वाली विशेषताओं अथवा दशाओं का समुच्चय अभिक्षमता है।''
- **ट्रेक्सलर** के अनुसार ''अभिक्षमता व्यक्ति में विद्यमान कोई दशा, गुण अथवा गुणों का समुच्चय होता है जो किसी ज्ञान, बोध, कौशलों के समूह की उस सीमा का घोतक होता है जिसे वह व्यक्ति उपयुक्त प्रशिक्षण से प्राप्त करने योग्य हो सकेगा।''

अभिक्षमता की विशेषताएँ
(Characteristics of Aptitude)

अभिक्षमता में निम्नलिखित विशेषताएँ पायी जाती हैं—

- अभिक्षमता व्यक्ति में किसी विशेष क्षेत्र की एक अंत:शक्ति है।
- अभिक्षमता में जो क्षमता या अंत:शक्ति होती है वह जन्मजात भी हो सकती है या अर्जित भी हो सकती है। जैसे—व्यक्ति में गाना गाने की क्षमता जन्मजात भी हो सकती है या उसे विशेष प्रयासों या प्रशिक्षण से विकसित किया जा सकता है।
- अभिक्षमता के आधार पर भविष्य में व्यक्ति के निष्पादन (Performance) के बारे में अंदाजा लगाया जा सकता है, जैसे—किसी व्यक्ति में नृत्य की अभिक्षमता है, तो यह पूर्व कथन किया जा सकता है कि वह व्यक्ति भविष्य में इस क्षेत्र में अच्छी निपुणता विकसित कर सकता है।
- किसी व्यक्ति की वर्तमान अभिक्षमता उसके वर्तमान गुणों का एक ऐसा समुच्चय है जो उसकी भावी क्षमताओं की ओर संकेत करता है।
- अभिक्षमता का योग्यता, रुचि तथा संतुष्टि से घनिष्ठ संबंध होता है।
- किसी व्यक्ति की समस्त अभिक्षमताएँ समान रूप से नहीं होती है। व्यक्ति की विविध अभिक्षमताओं में अंतर है। व्यक्ति में किसी कार्य की क्षमता कम हो सकती है तो किसी अन्य कार्य की अभिक्षमता अधिक हो सकती है।
- अभिक्षमता की प्रगति व्यक्तिगत (Individual) होती है, तथा अभिक्षमताओं में व्यक्तिगत विभिन्नताएँ पायी जाती हैं, किन्हीं दो व्यक्तियों की अभिक्षमताओं में अंतर हो सकता है।

अभिक्षमता का मापन
(Measurement of Aptitude)

अभिक्षमता का मापन कई तरह के परीक्षणों द्वारा किया जाता है, जिनमें से प्रमुख परीक्षणों का वर्गीकरण निम्नलिखित है—

अभिक्षमता/अभियोग्यता परीक्षण (Aptitude Test)

I सामान्य अभिक्षमता परीक्षण (General Aptitude Test)	II विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण (Specific Aptitude Test)
1. सामान्य अभिक्षमता परीक्षण बैटरी 2. विभेदक अभिक्षमता परीक्षण 3. फ्लैनेगन अभिक्षमता परीक्षण	1. लिपिकीय अभिक्षमता परीक्षण 2. यांत्रिक अभिक्षमता परीक्षण 3. संगीत अभिक्षमता परीक्षण 4. कला अभिक्षमता परीक्षण

लेखक परिचय

डॉ. सुभाष यादव

डॉ. सुभाष यादव का जन्म शाहपुरा (जयपुर) में हुआ। इन्होनें अपनी शिक्षा-दीक्षा राजस्थान के विभिन्न अंचलों में रहकर प्राप्त की। आपने विद्यालयी शिक्षा प्रतापगढ़, अलवर एवं शाहपुरा से प्राप्त की। राजस्थान कॉलेज जयपुर से स्नातक किया, मनोविज्ञान विभाग (राजस्थान विश्वविद्यालय) से परास्नातक तथा Ph.D. की उपाधि प्राप्त की इसके साथ ही NET/SET परीक्षा उत्तीर्ण की। लेखक के शोध पत्र राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकें हैं।

आप पूर्व में भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन उप-निरीक्षक पद पर अपनी सेवाएँ दे चुके है तथा वर्तमान में 'बाबा गंगादास राजकीय महिला महाविद्यालय' शाहपुरा (जयपुर) में मनोविज्ञान (Psychology) विषय के अध्यापन कार्य में संलग्न है।

डॉ. पंकज यादव

डॉ. पंकज यादव का जन्म अलवर जिले की बहरोड़ तहसील के ग्राम कालियाहोडा में हुआ। आप प्रारम्भिक समय से ही मेधावी छात्रा रही है, आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से मनोविज्ञान विषय से M.A. एवं Ph.D. की उपाधि प्राप्त की है।

आप विगत 7 वर्षों से पाठशाला, आलोकन, विनायक, विद्यांजली, आरम्भ, मंथन, शिवालय, लक्ष्य आदि शिक्षण संस्थाओं में ऑफलाइन एवं ऑनलाइन अध्यापन करवा रही है।

संतोष यादव

श्रीमती संतोष यादव का जन्म मनोहरपुर (जयपुर) में हुआ। आपने विद्यालयी शिक्षा मनोहरपुर से प्राप्त की तथा राजकीय धूलेश्वर आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, मनोहरपुर से स्नातक एवं परास्नातक की उपाधि प्राप्त की।

आप वर्तमान में राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय राजसमंद में वरिष्ठ अध्यापिका के पद पर कार्यरत है।

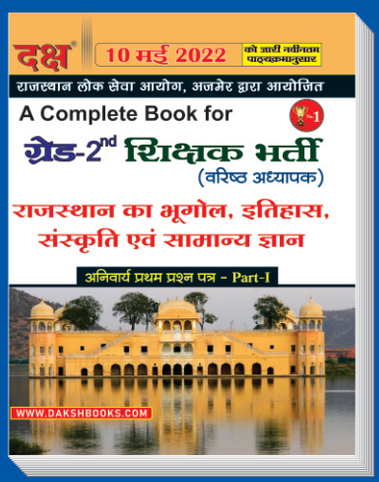

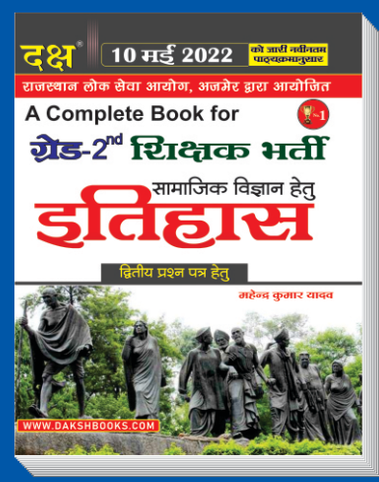

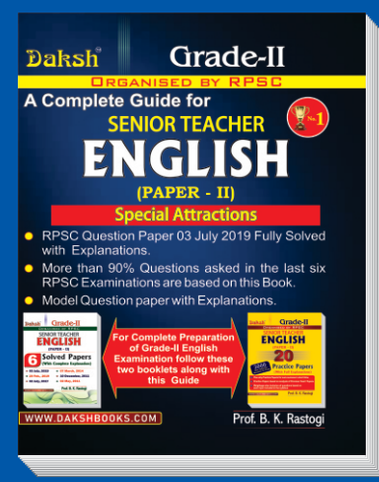

दक्ष प्रकाशन

(A Unit of College Book Centre)

A-19 सेठी कॉलोनी, जयपुर (राज.)

फोन नं. 0141-2604302

Code No. D-612 | ₹ 340/-